Prof. Haritma Chopra
Dr. Jyoti Singh, Dr. Pramod Kumar Singh
Ms. Shaifali, Dr. Anamika Singh, Dr. Geeta Pandey, Dr. Anita Devi, Dr. Harmeet Kaur, Ms Krishangi

Artisto

मैत्रेयी 2022

Editorial Board

Sitting (L to R) : **Dr. Pramod Kumar Singh, Prof. Haritma Chopra, Dr. Jyoti Singh**
Standing (L to R) : **Dr. Anamika Singh, Ms. Shaifali, Ms. Krishangi, Ms. Somya, Ms. Savina, Ms. Niharika, Dr. Anita Devi, Ms. Aaditya, Dr. Geeta Pandey, Dr. Harmeet Kaur**

MAITREYI
2022

All rights reserved. No part of this book/magazine may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published.

Edition Details : 2022
ISBN 978-93-85265-16-7
Copyright : ©Maitreyi College
Bapudham Complex, Chanakyapuri, New Delhi-110021
Email : magazine@maitreyi.du.ac.in

ACADEMIC HEIGHTS PUBLICATION
(National Publishing House)
C-9, Bhagawati Garden Extn.
Near Dwarka Mor Metro Station
Uttam Nagar, Delhi-110059

LAXDEEP DIGITAL INDIA
(National Publisher & Printer)
Ground Floor, Plot No. 308, Main Road Saboli
Kanthi Mata Wali Gali, Saboli Village, North East Delhi-110093
Email : ajayk0579@gmail.com, Ph. : 7838975278

ISBN 978-93-85265-16-7
9 789385 265167

MAGAZINE EDITORIAL BOARD

Chief Editor

Prof. Haritma Chopra *(Officiating Principal)*

Deputy Chief Editors

Dr. Jyoti Singh *(Department of Zoology)*

Dr. Pramod Kumar Singh *(Department of Sanskrit)*

Executive Editors

Ms. Shaifali *(Department of Commerce)*

Dr. Anamika Singh *(Department of Botany)*

Dr. Geeta Pandey *(Department of Hindi)*

Dr. Anita Devi *(Department of Hindi)*

Dr. Harmeet Kaur *(Department of Punjabi)*

Ms. Krishangi *(Department of English)*

सम्पादकीय

मैत्रेयी महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'मैत्रेयी-22' का नया अंक इस समय आपके हाथों में है। यह क्षण हर तरह से सुखद अनुभूति का है। पूरा विश्व एक भारी वैश्विक महामारी के संकट के उपरान्त धीरे-धीरे उभर रहा है। मानव-जीवन पहले की तरह सुचारु रूप से चलने लगा है। हम भी ऑनलाइन मोड से हटकर पहले की तरह ऑफलाइन मोड की कार्य पद्धति की ओर लौट रहे हैं। हमें यह लिखते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि इस पत्रिका का प्रकाशन विगत दो वर्षों के दौरान भी रुका नहीं बल्कि अनवरत होता रहा।

मैत्रेयी महाविद्यालय अपने आप को ज्ञान-केन्द्र के रूप में राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए प्रतिबद्ध है। अपनी इसी प्रतिबद्धता के प्रति दृढ़ रहते हुए वैश्विक संकटकालीन परिस्थितियों में भी इस संस्थान ने अपने किसी भी शैक्षणिक गतिविधि को रुकने नहीं दिया तथा तकनीक की सहायता से कोरोना काल की चुनौतियों को अवसर में बदलकर शैक्षिक जगत् के सामने कई नई स्थापनाएं की। इसका पूरा श्रेय मैत्रेयी कुटुम्ब के सामूहिक प्रयास को जाता है।

देखा जाए तो यह समय परिवर्तन का भी है। इसी सत्र से नई शिक्षा नीति का कार्यान्वयन भी हो रहा है। नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त रोजगारपरक कौशल-संवर्धन को बहुत महत्त्व दिया गया है। इस दृष्टि से 'मैत्रेयी' पत्रिका का महत्त्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यह पत्रिका विद्यार्थियों के अभिव्यक्ति-कौशल, रचनात्मक-कौशल के साथ-साथ उनके प्रबंध-कौशल का संवर्धन करने में मदद करती है। पत्रिका के संपादन से लेकर लेखन, चित्र-निर्माण तथा रंग-सज्जा आदि सभी कार्यों में विद्यार्थियों की सहभागिता रहती है। इस पत्रिका से विद्यार्थियों की सृजन-प्रतिभा मुखर तो होती ही है, इसके अतिरिक्त उनके भाषिक कौशल का परिष्कार भी होता है।

प्रत्येक वर्ष की तरह इस अंक में भी अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत और पंजाबी भाषा में लिखी रचनाओं का एक क्रम से समन्वय किया गया है। विज्ञान विषय की बालिकाओं द्वारा हिंदी, अंग्रेजी में लिखी कविताएँ भी शामिल की गई हैं। जीवन के विभिन्न रस-रंगों को संजोती यह पत्रिका पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ रुचिकर भी होगी, ऐसी आशा है। विद्यार्थियों की कविताएं अधिक सधी हुई न होकर भी अपने देश के शौर्य, वीर सैनिकों के बलिदान, प्रकृति-प्रेम और भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों जैसे कि **वसुधैव-कुटुम्बकम्, अतिथि देवो भव** आदि के महत्त्व को प्रतिपादित करती हैं। विद्यार्थियों की भावपूर्ण सृजनशीलता समाज, परिवार और नारी-उत्थान को लेकर उनकी सोच, विचार-वृति और स्वयं के सुनहरे सपनों की परिचायक है। विद्यार्थियों के साथ-साथ कई शिक्षकों के शोधसंवलित लेख भी समाहित हैं, जिनके अवलोकन से विद्यार्थियों में निःसन्देह शोधपरक दृष्टिकोण का विकास होता है।

हमारा महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु वर्षभर प्रयासरत रहता है। यह संस्थान उनको एक ओर जहाँ समृद्ध भारतीय संस्कृति, परम्परा और मानवीय मूल्यों से जोड़ने का प्रयास करता है, तो दूसरी ओर विभिन्न शैक्षणिक संगोष्ठियों, व्याख्यानों, प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन कर नवीन तकनीक, सोच और विचारों से उनका बौद्धिक विकास भी करता है। महाविद्यालय में अनेक समितियाँ हैं, जो विविध प्रतियोगिताओं अथवा कार्यक्रमों का आयोजन करती हैं, इन आयोजनों से विद्यार्थियों को नई सोच के साथ स्वावलम्बी बनने और कुछ नया करने की प्रेरणा मिलती है। पत्रिका में कतिपय चित्रों के माध्यम से इन गतिविधियों तथा विभिन्न विभागीय कार्यक्रमों की झलक को भी दिखाने का प्रयास किया गया है। अस्तु, शिवं भूयात्।

सम्पादक-समूह
मैत्रेयी-2022

STUDENT EDITORIALS

क्षणिक मुस्कुराहट बहुत कुछ कह जाती है चूंकि इस बहुत छोटी-सी मुस्कुराहट में आंखें मुस्कुरा देती हैं, होठों में महीन-सा कंपन दिखता है,और देह की भाषा भी एक दुर्लभ अंदाज़ के साथ पुलकित होती जान पड़ती है। मानव हृदय का हर क्षण सृजना का क्षण होता है जिसे गीत, कविता, कहानी या किसी भी विधा के माध्यम से अभिव्यक्त किया जा सकता है। 'मैत्रयी' पत्रिका कॉलेज की ऐसी ही पत्रिका है जिसमें हम साहित्य की किसी भी विधा में अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त कर सकते हैं। मैं आभारी हूं ज्योति मैम की जिन्होंने मुझे अवसर दिया मैत्रेयी पत्रिका में काम करने का। मुझे अपने विचारों को व्यक्त करने का सुनहरा मौका मिला।

सोम्या
बी.एससी. (ऑनर्स), जन्तु विज्ञान
द्वितीय वर्ष

The word after word after a word is power.", Said Margaret Atwood. Our scientific power has outrun and spiritual power. Science is a way of life and our science section shows the same, it has various types of poems, emotions, and articles related to plants, human evolution, and social status. It is a bouquet of creativity, scientific knowledge, and the art of playing with words. And if I talk personally, when I sit down at my desk, time seems to vanish. I think it's amazing way to spend one's life. I would like to thank all the teacher advisers, and team members for their excellent work. I am very thankful to Anamika mam for providing me this opportunity and for their immense guidance throughout the fabulous journey.

Savina
B.Sc. (Hons.) Botany
3rd Year

STUDENT EDITORIALS

The belief of our commerce section to promote learning not only related to academics but related to life as whole which will stay with the students of our college till the end.All the members have put in their souls and minds to create the content for the magazine. The content is beautifully presented as mixture of articles and poems which will enhance knowledge about Economy,Marketing, Finance and general spheres of life.I would like to extend my heartiest gratitude to my teacher, Shaifali ma'am, for providing me this opportunity and constantly guiding me at every point. At last, I would like to thank all the students and teachers who have contributed immensely to our college magazine.

Vanshika
B.Com. (Prog.)
3rd Year

कॉलेज की वार्षिक पत्रिका 'मैत्रेयी' को आप सभी के समक्ष रखते हुए मैं बहुत उत्साहित हूं। इसमें छात्राओं और प्राध्यापिकाओं द्वारा प्रतिपादित विचार और नवीन जानकारी का समावेश है। इस पत्रिका में सभी अनुशासनों के विद्यार्थियों ने अपनी रचनाएं दी हैं। यह अंक महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरूकता, प्रकृति के सुंदर रूपों की प्रस्तुति और दोस्ती की गहराई से लेकर आपको अपने मंजिल प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। मैं उन सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग और मार्गदर्शन को हृदय से धन्यवाद देती हूं जिसने इस पत्रिका को विशेष बनाया है।

आदित्या प्रभाकरन
हिंदी (विशेष)
द्वितीय वर्ष

STUDENT EDITORIALS

मैत्रेयिमहाविद्यालयस्य वार्षिकपत्रिकायाः संस्कृतसंभागे भवतां भवतीनाञ्च हार्दं स्वागतम्। संभागेऽस्मिन् पञ्चविशिष्टलेखाः सन्निहिताः सन्ति। भाषाविज्ञानविमर्शः अस्ति प्रथमः लेखः, यस्मिन् भाषाविज्ञानविषये सारगर्भितं महत्त्वपूर्णञ्च वर्णनमस्ति। संस्कृतभाषा कथं जनभाषा भवेत् इत्यस्मिन् लेखे संस्कृतभाषा लोकभाषा किंवा जनभाषा केनोपायेन भवितुमर्हत्यत्युपायाः प्रदर्शिताः। तृतीये लेखे लेखिका काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति निरूपिता। साधूनां जीवनमित्यस्ति चतुर्थः लेखः। लघुकथामाध्यमेन लेखकः लेखेऽस्मिन् अनेके उपदेशाः प्रदत्तवान्। संस्कृतभाषायाः महत्त्वमस्ति अन्तिमः लेखः यस्मिन् विभिन्नोदाहरणैः संस्कृतभाषायाः वैशिष्ट्यं निरूपितम्। विद्यार्थिसम्पादिकारूपे संस्कृतसंभागस्य एतत् सम्पादनं कार्यं मम प्रथमं कार्यं वर्तते। अस्मिन् कार्ये विभागाध्यक्षाः डॉ. प्रमोदकुमारसिंहमहाभागाः मां सर्वाधिकं प्रेरितवन्तः सहयोगञ्च कृतवन्तः एतदर्थं तेषां कृते कार्तज्ञं व्याहरामि। विभागीयशिक्षकैः डॉ. रेखाकुमारि-डॉ. अनिरुद्धओझा-डॉ. धर्मेन्द्रकुमार-डॉ. राहुलरञ्जनमहोदयैः स्वकीयाः लेखाः प्रदत्ताः, तेषां सर्वेषां कृतेऽपि भूरिशः धन्यवादाः प्रणमाञ्जलयः च समर्पयामि। अस्तु.....

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

निहारिका खुराना
संस्कृत-विशेषः
स्नातकतृतीयवर्षः

ਬਾਰ੍ਹਵੀਂ ਦੀ ਪਰੀਖਿਆ ਖਤਮ ਹੁੰਦਿਆਂ ਹੀ ਕਾਲਜ਼ ਜਾਣ ਦਾ ਚਾਅ ਚੜ ਗਿਆ ਸੀ ਪਰ ਸਮੁੱਚੇ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਚ ਫੈਲੀ 'ਕੋਵੀਡ-19' ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਦੇ ਕਾਰਣ, ਕਾਲਜ ਵਿਚ ਦਾਖਲਾ ਲੈਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਪਹਿਲੇ ਅਕਾਦਮਿਕ ਵਰ੍ਹੇ ਕਾਲਜ ਜਾਣ ਤਾਂ ਦੂਰ , ਅਸੀਂ ਕਾਲਜ ਦੀ ਇਮਾਰਤ ਤਕ ਨਹੀਂ ਵੇਖ ਪਾਏ । ਦੂਜੇ ਅਕਾਦਮਿਕ ਵਰ੍ਹੇ ਜਦੋਂ ਦਿੱਲੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਅਤੇ ਉਸ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਕਾਲਜਾਂ ਨੂੰ ਮੁੜ ਖੋਲਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਹੋਇਆ ਤਾਂ ਬੇਇੰਤਹਾ ਖੁਸ਼ੀ ਨਾਲ ਹਿਰਦਾ ਪ੍ਰਫੁੱਲਿਤ ਹੋ ਗਿਆ ।ਸਕੂਲ ਤੋਂ ਮਗਰੋਂ ਕਾਲਜ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ, ਉਚੇਰੀ ਵਿਦਿਆ ਤੇ ਮਸਤੀ ਜੋ ਕੁਛ ਸੁਣਿਆ ਸੀ , ਜਿਹਨ ਵਿੱਚ ਤਰੋਤਾਜ਼ਾ ਹੋ ਗਿਆ । ਫਰਵਰੀ ਮਹੀਨੇ ਵਿੱਚ ਮੈਤ੍ਰੇਈ ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਕਰਦਿਆਂ ਕਾਲਜ ਦੀ ਖੂਬਸੂਰਤ ਇਮਾਰਤ ਤੇ ਆਕਰਸ਼ਕ ਬਗੀਚਿਆਂ ਨੇ ਦਿਲ ਮੋਹ ਲਿਆ ਤੇ ਫਿਰ ਕਾਲਜ ਦੇ ਬੁੱਧੀਜੀਵੀ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੀ ਸਖਸ਼ੀਅਤ ਨੇ ਅਜਿਹਾ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕੀਤਾ ਕਿ ਵਿਦਿਆਰਥਣਾਂ ਦੀ ਸਮੁੱਚੀ ਸਖਸ਼ੀਅਤ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਊਰਜਾ ਨਾਲ ਨਿਰੰਤਰ ਭਰਪੂਰ ਹੁੰਦੀ ਗਈ । ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਅਕਾਦਮਿਕ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਤੇ ਪ੍ਰਤਿਯੋਗਿਤਾਵਾਂ ਵਿਚ ਭਾਗ ਲੈਣ ਦਾ ਸੁਅਵਸਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਇਆ । ਸਿਰਜਣਾਤਮਕ- ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਨੂੰ ਪੁੰਗਰਣ ਦਾ ਮੌਕਾ ਮਿਲਿਆ । ਕਾਲਜ ਵੱਲੋਂ ਹਰ ਸਾਲ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਹੁੰਦੀ ਪਤ੍ਰਿਕਾ 'ਮੈਤ੍ਰੇਈ' ਦੇ ਸੰਪਾਦਨ-ਕਾਰਜ ਨੂੰ ਨਿਭਾਉਣ ਵਿਚ ਵਿਭਾਗ ਦੀਆਂ ਅਧਿਆਪਕਾਵਾਂ ਨੇ ਮੇਰਾ ਜੋ ਮਾਰਗ ਦਰਸ਼ਨ ਕੀਤਾ ਹੈ ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਤਹਿ-ਦਿਲੋਂ ਧੰਨਵਾਦੀ ਹਾਂ । ਮੈਨੂੰ ਪੂਰਾ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਹੈ ਕਿ ਭਵਿੱਖ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸਾਡੀਆਂ ਅਧਿਆਪਕਾਵਾਂ ਅਕਾਦਮਿਕ ਵਿਦਿਆ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਵਿਆਰਥਣਾਂ ਦੇ ਬਹੁਪੱਖੀ ਵਿਕਾਸ ਲਈ ਸਦੈਵ ਆਪਣਾ ਮੁੱਲਵਾਨ ਮਾਰਗ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰਨਗੀਆਂ ।

ਸ਼ਾਵੀ ਚੋਧਰੀ
ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

Index

S. No.	Topic	Writer	P. No.
1.	'Smart' Teaching-Learning Environment	Dr. Jaspreet Kaur	2
2.	Are working parents doing it right?	Khushi Jha	3
3.	*Isitacceptable..?*	Aiman	4
4.	Cherishing Spring	Harshita Choudhary	4
5.	A BIBLIOPHILE PERSPECTIVE	Ishika Baghe	5
6.	I'll BE WAITING AT DELHI	Monalisa Mandal	5
7.	SPACE TOURISM : A NEW ERA OF TRAVEL SPACE BY:- SIMRAT KAUR NANDA	Simrat Kaur Nanda	6
8.	VERNACULAR EDUCATION: UNDERSTANDING ITS MEANING AND ITS CORE IDEA	Vasundhra Handa	7
9.	You are unique	Anshika Agrawal	9
10.	Marketing in Metaverse	Rishika Gupta	9
11.	Bitcoin Mining	Monil Gupta	10
12.	Finding Peace	Sneha	10
13.	The Game of Makeup	Zoya Shakeel	11
14.	Indian Rupee VS US Dollar	Annie Goswami	11
15.	Understanding E- Rupi	Verma	12
16.	Management and Leadership Lesson from Dusshera	Megha Narula	12
17.	NYKAA Swot Analysis	Kashish Chadha	13
18.	Success Story of NYKAA	Annie Goswami	14
19.	Game of Marketing	Vanshika Aggarwal	14
20.	Bright Light City	Vanshika Jain	15
21.	Who are we?	Kajal Senger	16
22.	Prejudism a Horrendous Hassle	Gauri	21
23.	Who are we?	Naiya Chauhan	22
24.	Education: The Weapon	Abhyarthana Jena	23
25.	College Diaries	Abhyarthana Jena	24

'Smart' Teaching-Learning Environment

The defining feature of a 'smart' educator has been perceived as one who uses '*smart* ICT tools' in recent times, especially during the lockdown period of Covid-19. During this time, educators all over the globe updated their soft skills and upgraded themselves as 'smart educators' to keep pace with the growing technology as well as the need imposed by the online mode of education. The shift from offline to online teaching-learning environment witnessed a surge in faculty development programs which enabled the educators to learn various digital tools of pedagogy including video recording, presentation, animations, etc. These helped teachers to impart educational concepts and values in an interesting and effective manner. The interesting animations prepared by existing tools like MS PowerPoint can be used to emphasize certain specific concepts which sometimes become difficult to visualize and comprehend by 2D diagrams or pictures by the learners. For instance, glucose transport across pancreatic cells can be explained using a simple animation wherein the steps are explained sequentially, then the students can relate to the concept much better. Most of the videos, although, are available on open license platforms, but they need to be edited or customized as per the requirements of the topic, only then they can be used for effective and meaningful learning. In fact, the teaching-learning environment becomes an interesting corridor if students become partners or co-creators of their own learning.

The foundation of this dynamic transition in teaching-learning environment lies on 'smart' devices and intelligent technologies, which is aptly termed as technology-enhanced learning (TEL). Although both teachers and educators had been using the TEL based tools to enhance their learning and understanding but full potential of these resources was used only during the course of online teaching-learning process. But, use of such fancy gadgets or devices does not qualify an educator as a 'smart educator', instead the focus should be on learners and content more than on the devices being used to convey the concept. Also, smart learning should be effective and tailored to cater the varying needs of learners using advanced IT tools. The environment created by such smart classrooms will help in stimulating students' interest in learning, which will further improve the quality of education and teaching. A change in outlook of teachers is also very important if they consider the learners as co-creators in the teaching-learning process. In this respect, a small change of arranging chairs for students around central round tables with an educator in classroom instead of chairs facing the educator in front can mark the beginning of 'smart teaching'.

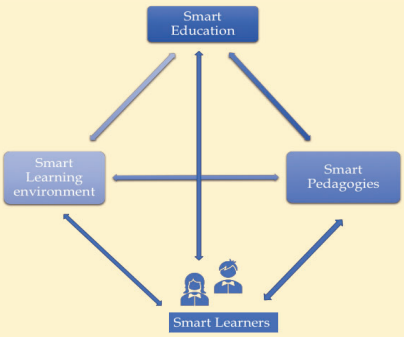

Figure: Framework of Smart Education
(Figure recreated from Zhu et al. 2016)

Thus, the variety of teaching-aids based on technology does play an important role in supporting smart learning and they should be used as an 'aid' only rather acting as substitutes for teachers. In other words, the focus should not be on just the use of smart devices in order to tag oneself as a smart educator. At the end, I would like to quote Tricia McLaughlin, Professor at RMIT School of Education, Australia: "*Technology can change learning forever and we need to embrace it and manipulate it to our advantage*".

Reference:

Zhu, ZT., Yu, MH. & Riezebos, P. A research framework of smart education. Smart Learn. Environ. 3, 4 (2016). https://doi.org/10.1186/s40561-016-0026-2

Dr. Jaspreet Kaur
Assistant Professor
Zoology Department

Are working parents doing it right?

The topic itself raises many questions on working parents. We often talk about the "balancing act" of managing work and parenting, which assumes that the solution is a combination of compromise, multitasking, and choosing an understanding employer. Once Sadhguru said, “your child needs tendering not only physical nourishment”. The statement is agreeable because parents need to give their children holistic care; intellectual and emotional engagement. In earlier times parents worked around the house itself so it was easy for them to look after the total care of their children, but today parents go farther to work. Here the question is, are they going farther away from their beloved child too? The answer would vary from parent to parent. If the answer is “Yes” because parents need to fulfill the outer support the child needs, but what about the mental support which your child wants. Are you available all the time there for your child? I came across many interviews of children complaining about the quality time they don't get from their parents. In order to create the headspace for what is important, parents need rigorous prioritization of their time.

As business tycoon Indra Nooyi said, “ The biological clock and the career clock are in total conflict with each other”. So it should be the duty and priority of the parent to break out of this conflict and be on the side of their children. Another way to direct healthy parenting is to look after it logistically. Logistics include all the planning, transportation, and timetabling involved in getting your children to school, activities, and social events – as well as your own commitments as a working adult. It also includes much of the operational aspects that come from decision making. If a child is joining the swim team, for instance, someone must then purchase needed supplies, manage the schedule, pay invoices, and transport the children back and forth. It will give the child the kind of support he/she wants all the time. There's a story that I came across a few days back, a child was going through some major conflicts about deciding his gender. The busy parents working day and night were not able to sense the seriousness of the situation and ignored the fact. Few days later due to bullying and mental sickness the child decided to make a hard decision of risking his life. The ignorance parents show towards their children is really heartbreaking. Parents are the first teachers in a child's life and play a pivotal role in shaping their adult lives.

With the advent of the family-style where both the parents are at work, this parent-child relationship has faced positive and negative impacts. There is more disposable income for the parents to spend on the child but less time to engage effectively with their children. Parents need to make sure they spend 30 minutes to 1 hour of quality time with their children every day.

As the children are left with the nannies or at the daycare, they tend to suffer from restlessness and have a hard time managing their mood swings. When parents don't spend more time with their children, it tends to make them more stubborn and aggressive. Here problems are many but there are many solutions too. If the grandparents are willing to volunteer to babysit your child, that can be effective. This arrangement allows the kids to develop a bond with their grandparents and gives a breather to parents at work. From the financial aspect, this is the most low-cost and low-risk arrangement for your child. Don't let children go out of hand and find an alternate parenting system that suits the busy schedule of working parents.Thank you.

Khushi Jha
B.A. (Hons) English
1st year

Isitacceptable..?

Isitacceptable..?
Humanities,
Does it echo when you say so,
It does,
Many people don't find it acceptable,
"Arts is just a fancy fable."

Doctors and Engineers,
Scientists and Researchers,
If you aren't any of these,
You are surely to be squeeze.

Why can't people be at peace,
Science is not the Golden Fleece,
Not every person can be into Science,
Laws and rules do not form their alliance.

Newton's colour disk,
Isn't that cool of a whisk,
Some like to read about panglossian tales,
And write about green whales.

Lily and Rose,
Have to be dissected so close,
But some love to read,
Even about the sprouting seed.

Wars are gruesome yet glorified,
Picturesque turmoils are horrified,
But we need to know about the history of wars,
Else how will we know about the Engineers who built malls.

It's time enough to stop comparing,
And disarm the spectacles we are wearing,
For humanities is no less than science,
But might prove to be a societal defiance.

Aiman
B.A. (Hons) English
1st year

Cherishing Spring

Looking out of my window,
I saw the trees green and jolly.
And the gulmohar flowers red, orange and glossy. Oh! what a pleasant morrow it was.

Sitting in the balcony,
With a cup of tea and a book.
And listening to cuckoos in a nook. Oh! what a sweet company it was.

Dreaming about the breeze singing And calling me to join the flow.
So that, I too, like them can glow. Oh! what a soothing Zephyr it was.

Watching the nature smiling.
As if, it had been a long while relaxing.
And making the world calm and rejuvenating.
Oh! what a cherishing moment it was.

Suffocating under the pall of hopelessness,
Inhaling the air of anxiety.
And when mind is surrounded with thought of giving up.

Then my soul turns back, to that,
One blissful spring day!
When flowers of hope bloomed And the sun of happiness shone. Oh! what an enlightenment it is.

Harshita Choudhary
B.A. (Hons) English
1st year

A BIBLIOPHILE PERSPECTIVE

There are times when I wonder
Why I wanna drown in the ocean of words?
Is it because I know they'll save me?
Or because I know they'll never hurt me in any way possible?
Rather, will give me reasons to smile and shriek in excitement. ..
There are times when I wonder
Why I wanna offer all of me to every book I read?
Is it because I know I'm breathing a different story?
Or because it's smell allures me,
As if it was waiting for me to grasp it gently
Just like a new born mewls for his mother to lift him up ..
There are times when I wonder
What would it feel like
To walk in my own library!
Where I'll be strolling different, smiling different
Where I'll be more of me than I actually am
For I know, every breath taken with a book in hand
Is worth so much.

Ishika Baghe
B.A. (Hons) English
1st year

I'll BE WAITING AT DELHI

I commenced for school very tardily that morning and was in great dread of a scolding by the teacher but somehow managed to reach only five minutes late. I immediately hurried off towards the assembly ground for morning assembly where the whole school was already assembled, we all sang prayers and national anthem at the cessation. Then the assembly was dismissed and we all dispersed to our respective classrooms in a single line which resembled that day like an Indian troops march.

I was sitting in my Chemistry class, the first one of our terrible Tuesday's timetable. Like every other student, I have had my fair quota of getting bored and not being able to understand and learn ostensibly a simple ' Periodic Classification of Elements'.

The day outside was so warm,so refreshing! The birds were chirping outside the glass windows as if they're chastising us for not paying attention to what Mr. Chemistry was teaching. Feelings of harmonious slumber and slothful mode spreaded from student to student.

And then, you arrived into our class.

You were approximately 5'8 feet tall, smart, fair, wearing a well ironed uniform with a tie and Identify card hanging around your neck, your bag dangling around your shoulders and holding a water bottle on your right hand and chemistry book on the left one. I swear on Mr. Chemistry's old- fashioned eyeglasses that every boy and even a few girls couldn't stop glancing at you. You were fascinating. Mr. Chemistry was surely jubilant that day to find someone new to the class and then you sat next to me and gradually from being just friends, we became best friends.

I don't recollect a single day after this one when we weren't together in school and, of course, all the memories of school life are surely a treasure to cherish for the rest of our lives.

And then, one unpleasant day you heard the news of my dad shifting to another state along with me and my mom. I can never forget the day about how badly you wanted me to stay with you.

But now, I am remembering you, sitting on my balcony and looking into the stars and I know my schooling days were best because of you. I am missing those days and certainly my mind goes back to those good old days when we were sitting at our favorite bunking spot and we promised each other to take admissions in Delhi University which was our deepest desire. But the best of all, beloved, I kept the promise to meet you again and so we're meeting at Delhi soon as now we've enrolled ourselves at Delhi University.

Looking forward to seeing you soon after the Covid pandemic ends and relishing our college days, in the same proportion the way we used to enjoy in our schooling days.

Monalisa Mandal
B.A. (Hons.) English
1st year

SPACE TOURISM : A NEW ERA OF TRAVEL SPACE

BY:- SIMRAT KAUR NANDA

As we are living in 21st Century where all things are present on our right click whether we have to do calculations we can just do in instant time with the help of a calculator or make a call to a person who is settled in abroad or getting groceries or any household item we can just place an order on online shopping app and the goods are delivered within few hours. Isn't it is surprising how our technology became so advance within few decades. Before independence for all of us it is just a dream that might come true, but we all are now depending on these items. Man had evolved from the caves to modern cities. From a stone fire to induction, bullock cart to luxury cars, we had evolved so much.

That was also a time, when a man thought that is there any world even exists in universe. They even think that something like universe really exists in the real world. But as time passes the thinking of the people got wings and fly to a beautiful destination. Now we all are familiar to the the inventions of Science. We all are now making new milestones in Science whether is going on Mars, or discovering the moons of Jupiter or discovering the beautiful rings of Saturn many endless memorable moments captured in universe. Space Astronomers like Neil Armstrong, Kalpana Chawla, Rakesh Sharma, Sunita Williams and many many more…. who gave their best shot to achieve the greater heights in Science.

Several physists like Galileo, Newton, Einstein, Madam Curie and many more… makes it possible to give their brilliant ideas and discoveries in physics so that we can make their our dreams possible.

From 20th Century to 21st Century, Man except astronomers always think can we ever go to space and see space with our eyes. It seems to be dream for every common man like I always think that how our planets look like. Can I ever get a chance to go in space. Can I live there ? Several people just heard that aliens live there or see in cartoons like Doraemon who tells Nobita that there is also an another Earth like our planet. It increases my curiosity at more speed. Koi Mil Gaya famous movie of Superstar Hrithik Roshan gives also an example to connect people of universe i.e. Alien (Jaadu) to common people like us. It always gives an immense pleasure to all of us. It increases our curiosity at a greater extent. For me it was always my dream and ambition at a same time. I always believe it is impossible that how does a common man like you and I can go in universe and seeing our planet'.

We are very much familiar that our population is increasing day by day and also the alarming rate of global warming threatens us on daily basis. It disturbs our mind and body too. It takes our whole energy and weakens our mind and unable to think properly to get new ideas and launched into our mind. People got frustrated and they become upset on small issues which is having no sense at all. They got disappointment at every single moment. They become no longer happy.

When they heard this type of news that your dream is no longer a dream. Yes you heard it right it happens in reality how a comman man can go into space. It happens in reality when I heard the news that SPACE X launched Dragon Capsule in which 4 - Common people travelled into space and named this mission as Inspiration-4 Mission who was launched on 15th September 2021 and they all returned back safely on 18th September 2021. This is indeed a proud moment for all of us. It is like a dream come true without any expectation. The people who went in space revolve around the planet Earth our own Blue Planet or Life Planet. The people who went into space got the best moment of their life and an unforgettable memory which barely they forgot.

I guess how many people got the best news and without celebrating it, it is truly incomplete. I wish ISRO soon learn this technique and we will go in space and observe it from very closely such that how we teach our students that yes children it is indeed our beautiful Life Planet Our Blue Planet **"EARTH".**

That means there would also be another planet, another galaxies and constellations and many more…. and having a beautiful world of

people in Universe. It gives new horizon to our technology of space and moreover we get latest studies about the Universe in detail. People think of many ideas and inventions and give the best output to their future generations.

Our problem of global warming and over-population now will get a full stop to some extent if the people move on to another planet and settled in colonies. They build new infrastructures and development there and having a society of people there. That means new development will take place in such a short span. Now we will see beyond our planet and new achievements and prestigious moments will come. new opportunity is coming to be true in Early 2022. Few common people will go in space and build new bright colours of achievement in the space and create a remarkable and prestigious moment.

Now that means the famous quote of our famous Missile Man of India, Dr. A.P.J Abdul Kalam once remarked, "Dreams are not that which you see in sleep, Dream is that which never let you sleep". So here is the opportunity that will come true.

But, It seems to be a world of fantasy more than a reality because in reality we all know every coin has two faces i.e. pros and cons. Few disadvantages are also becoming hurdles in the way of success and will distract our way to lead the achievement going on to space. The examples of few hurdlesa are like, The cost of travelling in space much much more.

expenses on spacesuit is more than the income of several common people if we joined together. Only famous industrialists can enjoy this moment and see our planet from very close. An income of a common man always satisfies the needs of their family. It is still an incomplete dream for common people.

The developing and undeveloped countries like India, Spain, Pakistan, Bhutan, Myanmar and many more countries trying their best to achieve this goal but factors like per-capita income, unemployment and lack of basic necessities are playing a major role in becoming hurdles for this development.

But, I am still sure that the Government of these countries will take an action to achieve this goal in an efficient manner. So that dreams of various people will be no longer a dream and come into reality very soon. So that we all will become the witness of this beautiful journey and very soon more remarkable horizons will be established like before.

I strongly believe that if you see as hurdles as hurdles and strong obstacle then a small desire remains uncompleted but we see hurdles as a new pavement stone for our foundation then desire the biggest to biggest desire will be accomplished and get a new flight of journey.

Thank You !!!

Simrat Kaur Nanda
B.Sc. (Hons) Physics
1st year

VERNACULAR EDUCATION: UNDERSTANDING ITS MEANING AND ITS CORE IDEA

Education is the need of the hour. Since childhood we all are made to realize and we have realized the importance of education in our lives that it helps us to broaden our horizons. Education is the involvement of an individual with different subjects and languages and even regional languages. But, is there a need to learn regional languages? Should vernacular education be made compulsory?

"**Vernacular Education**" basically means learning the language of your own region. Giving a factual example, in Singapore, there are some vernacular schools which offer the students to learn their native languages like Chinese, English etc. [for example, if they are a native inhabitant of China and England respectively and they live in Singapore] along with Malay which is the language of Singapore.

If we talk about British India, in the early 20th century, the East India Company also supported the vernacular education in India which meant that apart from learning English, students were given an opportunity to explore their native languages. The British government focused on having **"Pathshalas"** so that students can learn their own languages as well. Even the Britishers studied the ancient Indian texts and literature to understand the past

glories of India. Many English articles were translated in Hindi and other regional languages when Indians started to read and write. But in this 21st Century, Vernacular education is something that is not new as people read newspapers in a variety of regional languages which show that in independent India also, vernacular education is not a thing of the past.

There are a lot of **benefits** of vernacular education. Vernacular languages are taught as a subject in schools and colleges. Some colleges also offer short term courses, honors courses and degree courses in **Gujarati, Marathi, Sanskrit & Punjabi and other regional languages** which provide unique subject choices to students. They can also go for teaching jobs by clearing the Junior Research Fellowship (JRF) exams and National Eligibility Test (NET). We can go for the fields of the language and literature of English and Foreign Languages also for example French, Italian, German, Spanish, Mandarin etc. So, the educational framework to have vernacular education should be developed more in schools and colleges.

But yes, this cannot be made compulsory and forced on the students. It can act as an opportunity but it cannot be thrusted upon those students who are not from that particular state. However, students can be given an opportunity to learn if they so desire. It also depends on the schools and colleges and the resources they have, for example - human resources like the faculty and reading material must be made available for students.. We must encourage students to know at least some of the languages of India apart from Hindi.

Language learning can be a very exciting task. The aim should be to learn and promote regional languages so that we can keep these vernacular languages alive and thriving.

Vasundhra Handa
B.A. (Hons) English
1st year

You are unique

Learning means Growing
When you stop learning
Is when you stop growing
hey friend we all have one life
And the possibilities are endless
In your life you must dive
Life is short nevertheless
You are the ocean of your traits
Walk in such way that it leaves trails
You just be blind,to Pursue your passion
Just go straight leaving behind all the tension
Don't let success conquer you
Never forget parents who brought you
There's a lot to learn
There will always be a race to run
Never mind you win or lose
The most important in life is what you choose
Losing doesn't means all over
And winning doesn't mean world conquer
The ultimate happiness is not the destiny you achieve
But finding yourself in process of believe
Experience will never be wasted
Don't leave any colour of your life untested
Life is all about joy, learn, and create
Spread love all round and leave all hate
Never stop life's journey is great
A meaningful example you must create
Learn as much as you can
You know for learning you neither need a book or a pen.

Anshika Agrawal
B.Com (Hons)

Marketing in Metaverse

1st Year Metaverse means 'beyond universe'. It is a collective virtual space made through the experience of the physical world. Metaverse will increase pace of growth and increase opportunities for marketers..

Few years ago only the internet was launched for the public and soon after many businesses realized the need of a website for marketing their product and services and then social media also didn't take much time to adapt with the public. Luxury brands creating avatars, brands collaborating with games have been going on for a long time. NFT's are at good height now and popular as well.

At a conceptual level, the metaverse can be thought of as the successor-state to today's internet – just as today's predominantly mobile internet was built on top of fixed broadband internet of the 1990s and early 2000s, according to Matthew Ball's Metaverse Fund.

Soon after 5G and Artificial Intelligence, it will gain popularity among the public. It will be easy to provide a cost effective and enjoyable AR VR experience. Metaverse will be a shining star in the coming future. Many renowned companies like Facebook had turned itself into a "Metaverse" Company.

In few years only a big lot of our population has searched Metaverse which made it to the Google trends. Matthew Ball the co-founder of Metaverse has published The Metaverse Primer, it consists of 9 free essays for a beginner to follow. Special feature of Metaverse is that here everyone has an avatar. It's a virtual experience in 3D whether you are playing, exploring, creating or gaming. In the future Metaverse will be a part of the digital marketing strategy of many brands.

Rishika Gupta
B.Com (Prog)
2nd Year

Bitcoin Mining

"You can't stop things like Bitcoin. It will be everywhere and the world will have to readjust..."- John Mcafee (US presidential nominee).

Cryptocurrency (a digital currency on the internet), is now considered to be an inevitable future, with all latest trends backing it. Bitcoin's price journey from

$1 in 2011 to $68,000 in 2021, seems quite unreal but it is the reality, and probably, the future everyone is looking forward to.

Bitcoin is acquired through a procedure called Bitcoin mining - a process through which people solve digital algorithms and get Bitcoin as a reward.

Anyone who wishes to indulge in Bitcoin mining has to solve algorithmic problems and it's not just about solving the problems but solving them first. It is for this reason that bitcoin miners require a strong computational power, since the speed of mining depends on the power of the machine. This creates demand for large amounts of electricity. Miners get rewarded with Bitcoin for the evidence of the efforts that they have put in the whole process.

According to a report by Quartz - 300 Bitcoin minersare mining this cryptocurrency in India . Although India over the years has seen increased adoption of crypto, it is still quite behind compared to the world. One of the reasons seems to be India's reserved stance towards cryptocurrencies. Very often the government has claimed that cryptocurrency needs to be regulated to maintain "economic sovereignty" and "monetary stability".

Further, mining of Bitcoins requires huge amounts of electricity, which increases costs considerably. Presently, the US surpassed China to become the leading country in bitcoin mining

With only 21 Million Bitcoins available, we see a rise in price as the supply from the market decreases. This increased price incentivizes people to enter this space. However, since there are a lot of costs involved in Bitcoin mining as mentioned, entering this space has to be with caution, right research and understanding of one's financial situation.

Monil Gupta
B.Com (Hons)
1st Year

Finding Peace

Travelling from far away places, we all came to this state where the prestigious "university of Delhi" resides. To people of Delhi it might be a regular thing, but to us it is a dream. Yet dealing with the stress isn't easy, we sometimes try to find some exit from the stressful life of college but it's not easy too. A few days ago I found the same stress building up in, where i needed a loophole, an exit to peace. It was early in the morning, and I went to Humanyun tomb, and believe me it was really a good experience. It is the perfect quite place that allows you to breathe a bit and relax in this metropolitan city.

The peace and cold weather unlike the high temperature of Delhi, it felt so much different from the city, yet it is a part of it. Though it is not easy to adjust yourself in this city but the perks of this city are there too. An introvert can become an extrovert in no time. Chilling out with friends is the icing on a cake. It gives you life time worth of memories of fun, adventure and mistakes. Finding such loopholes where you can exit of your own self can help a lot with achieving your goals. Like any other kid i came to Delhi with a lot of dreams fighting many odds and such places fill me up with enthusiasm to keep fighting such difficulties. It helps to lift the zeal in my soul to be on peak of success. Try to make this city yours and you will find this city has a lot to give to you.

Sneha
B.Com (Prog)
2nd year

The Game of Makeup

Every woman has a right to look beautiful and confident about her looks. The earliest historical record of makeup comes from the 1st Dynasty of Egypt (c. 3100-2907 BC)

Makeup allows you to cover skin concerns that may cause insecurity. While you don't have to wear makeup or use it to hide anything, many people prefer to keep blemishes and dark spots undercover—and makeup helps you to do that.

Makeup is not a tool meant to make an ugly thing beautiful it is meant only to magnify the beauty already exists. The healthy purpose for wearing makeup is to enhance what you have, not to completely change how you look.

Most of us wears layers of makeup which makes hurdle for being recognised, That covers the features which makes ourself distinct. My believe is to wear a sheer foundation, to enhances the unique features of the face for the real enhancement, brighten up the high points with concealer, mascara to enhance lashes, contour to shape up the face and a lip lacquer on your lips.

The good amount of makeup shows professionalism, but wearing too much makeup can be repulsive which diminishes the purpose of makeup. Makeup should never be used to hide identities. It should be used to enhance your natural beauty

I BELIEVE ALL WOMEN ARE PRETTY WITHOUT MAKEUP~ BUT WITH THE RIGHT MAKEUP CAN BE PRETTY POWERFUL

Zoya Shakeel
B.Com (Prog)
2nd year

Indian Rupee VS US Dollar

Rupee has been struggling and facing tumult against the dollar for more than twenty years now. Despite constant changes within the financial policy the debate over rupee vs us dollar is still on.

REASONS FOR DECLINE OF INDIAN RUPEE AGAINST DOLLAR:

1.Global economic slowdown

The global economic slowdown is one of the crucial factors contributing to the downfall and has not been ready to regain it's value.

2.Crude Oil Prices

The conclusion by the organization of Arab Petroleum Exporting Countries to bring down the production and the decision taken by Persian Gulf nations to erratically increase the value of petroleum led India to loan foreign currency. But US takes up intelligent plans to tackle the present business strategies.

3.India's deficit

Indian exports diminished for the 13th month in a row in December 2015 as outward shipments shrank 14.75% to $22.2 billion within the middle of a world demand slowdown. The trade deficit during the month widened to $11.6 billion as against $9.17 billion within the previous year. This heavy trade deficit weakens the Indian monetary unit within the Forex online market.

4.Persistent Inflation

The rate is principally keen about the country's inflation rate. The Indian economy largely in case of confusion and the inflation rate doesn't seem to come down or stabilize thus resulting in a poor exchange rate between USD and INR.

Annie Goswami
B. Com (Prog)
2nd year) Sanjana

Understanding E- Rupi

WHAT IS E-RUPI?

E-Rupi is a digital payment medium, which will be delivered to mobile phones of beneficiaries in the form of a SMS or a QR code. It can also be called a digital payment voucher.

HOW TO USE E- RUPI VOUCHERS?

How does it work?

As it is a cashless and contactless digital payment medium, which will be delivered to mobile phone of the people in form of SMS or QR code. It will be like prepaid voucher that will be redeemable at specific accepting centers without any credit or debit card, a mobile app or internet banking. It will connect its sponsors of the service providers in a digital manner without any physical interface

These vouchers are like E-giN cards, which are prepaid in nature. The code can be shared. Even if anyone does not have any sought of digital payment facility or a smartphone can get benefited from these vouchers.

WHERE WILL E-RUPI VOUCHERS BE USED ?

The rate is principally keen about the country's inflation rate. The Indian economy largely in case of confusion and the inflation rate doesn't seem to come down or stabilize thus resulting in a poor exchange rate between USD and INR. These vouchers will be used most probably for health related payments. Big companies can issue these vouchers for their employees.

BENEFITS BECAUSE OF E-RUPI

Benefits for corporate - Visibility for voucher utilization- voucher redemption can be tracked by the issuer. It facilitates Quick, safe and contactless voucher distribution.

Benefits for hospitals – It is Easy, Secure and Hassel free as Voucher is authorized via a verification code shared by the people. Handling of cash or cards is not required. It also has a Quick redemption process.

Benefits for End-user- As it is Contactless, people need not carry a print out of the e- voucher. Also it has an Easy 2 Step Redemption.

Verma
B. Com (Prog)
2nd year

Management and Leadership Lesson from Dusshera

ABOUT FESTIVAL

Dussehra is a Hindu festival that is celebrated all over India. Dussehra celebrates the victory of Hindu god Rama over the demon king Ravana and the triumph of good over evil. The word 'Dus' in hindi means ten and 'hara' means remove i.e. removal of ten heads of Ravana.

This festival not only marks the victory of good over evil but also teaches us some influential management & leadership lessons.

MANAGEMENT LESSONS

It would have been difficult for Lord Rama if he didn't lead the Vanar Sena so exceptionally & killed Bali for his immoral actions.

(The actions of the internal body of an organization are reflected in its output. Thus it is important to do intensive screening of employees before recruiting them to build a team of efficient employees)

Use of accurate strategy according to the situation & changing it as per the external environment is very important, like Lord Rama used by firing Golden arrows to take care of the

10 heads of Ravana for some time and in the meantime after getting crucial information he shot the Dreaded arrow of Brahma killing Ravana.

LEADERSHIP LESSONS

A leader should not let ego come in his way because ego can even destroy a person as knowledgeable and strong as Ravana. Ego can capture one's mind and hamper his wisdom and power.

Trusting people while deliberating is essential to the success of the team and that of the organization. A good leader never gives into cynicism (distrust).

Megha Narula
B. Com (Hons)
2nd year

NYKAA Swot Analysis

Nykaa is an Indian e-commerce company founded by Falguni Nayar-"India's wealthiest self made f Female billionaire It sells beauty, wellness, and fashion products through websites, mobile a apps, and 76 offline stores.

"It is a unicorn startup and was valued at Rs 8500 Crore ($1.2 billion) in 2020"

Nykaa recently launched an IPO. The price band for this IPO WAS kept at Rs 1,085-1,125 per share. The initial public offering of FSN started on October 28 and closed on November 1. The Rs 5,352-crore IPO was fully subscribed on the first day of bidding. It was subscribed 4,82 times on Friday, the day 2 of its issue that opened for subscription on October 28.

STRENGTH

1. First-mover advantage
2. Availability of wide product range on both its online and offline stores across India to avoid customers shift from their brand due to lack of stock.
3. Strong influencer and social media marketing
4. Diversification from beauty items to clothing, health & safety, baby care, and accessories.
5. innovation. The company is constantly adding innovations to its product range.

WEAKNESSES

1. Poor Customers Care
2. Delivery charges: Nykaa offers free: delivery for orders only above Rs 700, which excludes some of the aspiring buyers.
3. Waste Management: The company has been criticized by environmentalists for its poor waste management and lack of sustainable growth approach offline stores.

OPPORTUNITY

1. Focus on capital efficiency provide the company long runway for growth
2. Expanding to neighboring countries
3. Following Trends: The changing needs astes, and preferences of customers will be great advantage for Nykaa Growing niche markets.
4. Rise in e-commerce and social media.

THREATS

1. New entries in the market which are gaining market share slowly. Eg Purple Constantly changing customer's taste buts pressure on companies to change their products
2. Large no of Substitute products being available
3 Government strict regulations for commerce websites
4. Health Concerns Regarding Chemical Products.

Kashish Chadha
B. Com (Hons)
2nd year

Success Story of NYKAA

Nykaa is a beauty retail company owned by: Falguni Nayar that sells cosmetic commodities both online and offline. The company also provides product reviews, beauty how-to videos, expert-written articles, and even an e-beauty magazine,

Falguni Nayar has worked on several job positions in 35 years of her career. She began her professional journey as a a management consultant with AF Ferguson and Co in 1985 after graduating from IIM Ahmedabad And was associated with Kotal Mahindra Group for 19 years before deciding to start her entrepreneurial adventure, risking her family funds When she left Kotak in 2012, she was the Managing Director of its institutional equities and investment banking divisions.

"She started Nykaa to cater to the beauty needs of Indian wamen in retail, beauty or technology sector in the same year with no prior experience. She was about to 50 then." Her first and the only tweet, which has now become iconic, came on October 29, 2012, a day before Nykaa's website went live. Nine years later, today she is India's richest self-reliant business woman with a net worth of $7 billion. Falguni Nayar and her family still own a 56,56% stake after the company's listing. With a market capitalization of $14 billion, Nykaa has comfortably broken into the club of India's top 100 most valuable companies. Jhanvi Kapoor has been Nykaa's Brand Ambassador since 2018.

Falguni Nayar and her family still own a 56.56% stake after the company's listing. With a market capitalization of $14 billion, Nykaa has comfortably broken into the club of India's top 100 most valuable companies. Jhanvi Kapoor has been Nykaa's Brand Ambassador since 2018.

My opinion

I believe the reason for Nykaa coming out with flying colours is the vision of Falguni Nayar. She identified the problems that persist in the Indian market. The beauty and cosmetics industry of India was not able to produce the standard of the products, as it was in other nations like France and Japan though the market demand was high. All this lead to formation of Nykaa.

Annie Goswami
B. Com (Prog)
2nd year

Game of Marketing

Marketing in very simple terms refers to the practice of promoting the product or service and converting it into sales. But it is not as simple as it sounds.Marketing a product needs a lot of effort mixed with a lot of creativity and hardwork. People might wonder sometimes why so much emphasis is given to marketing.But the reason behind this is that marketing is something which connects an organization to its potential customer base and helps in building brand loyalty amongst the customers along with other factors like quality of product. Marketing is basically a technique to attract and engage the audience with the organization.Modern marketing emerged in the 1950s when people opted for use of other means of promoting a product rather than just print media and with the emergence of TV and Internet, the whole game of marketing just changed. Now marketing is not just about distributing pamphlets describing the products but it is about keeping up the current trends and resorting to means which will be able to catch the attention of the consumer. Due to so much

competition in the market, it is very essential for every organization to top the game of marketing to hold a significant position in the heart of the customers.Zomato, A food delivering company, which was founded as Foodiebay in 2008 has one of the most effective marketing strategies. Apart from driving 99.44% of the organic traffic on the internet, it has A Game in social media marketing.The uniqueness in the social media ads of zomato helps to attract its target customer base which are people between 18 to 35 years. Zomato keeps up with trends like no other company be it blockbuster movies, new series and events like cricket matches, Zomato got it all covered. Zomato makes an extra effort to make its marketing as attractive as possible. The timings of the mails and tweets are so perfect that it hardly goes unnoticed. For example at the time of IPL world cup 2019, Zomato tweeted "Guys, kabhi kabhi ghar ka khana bhi kha lena chaiye". Using The reverse psychology as it was customary for most of the people to order at that time and using the perfect timing, it topped its marketing game along with the cricket match.Zomato's unique marketing has played a very crucial role to secure its top position as a food delivery company in the market.

Thus, The game of marketing is all about selecting the right platform, creating the right content and knowing your customers well. If this done right then you are surely going to ace the game of marketing.

Vanshika Aggarwal
B. Com (Prog)
2nd year

Bright Light City

All I see are the bright city lights
Broken hearts under these dusty skies
The stars are lost and the chirps are rare
We walk down the streets to hear the music blare
Our souls fading in these dust bowls
And smell in air is that of burning coal
On the inside, we all feel alone
In this cosmic, material zone
We're all here running after what we chase
We're all trapped, stuck in this rat race
Where's the love? Where's the affection?
Lost are the faces with whom I shared some connection
Kids home alone, empty gardens and grounds
Our stoned hearts, shoo away the beggars around
Education is flawed and taboos prevail
Applauding men, and the girls are left pale
Every day, we wake up from dreams
The next second, our neighbours scream
Days are so blue, and dark are the nights
We follow the wrong, to get the right
Now I ask you a question, okay?
Is this what you thought, life would be like?
Hate all around, people barely survive
Is this the life, we cried for?

Vanshika Jain
B. Com (Hons)
1st Year

Who are we?

Are we distinctive or just survivor?

Are we special? Most of us will think we are special as we are the only last standing man on this earth mapping out this atlas with our feet. If someone asks about the reason for our survival on this planet most of us will surely shout out loud that we are 'strong' and 'mighty' than any other.

Is this parameter is way more enough to answer the question of our continuity?

Think about it again? Our existence on this earth is special in a moral way. But what about the uniqueness of our relationship with the hominins world.? We are related to survival as we are the last standing man and had shown our dominance on this earth with our innovation, culture, exploration, and curiosity. We are the last surviving species.

Humans are Homo sapiens, a culture-bearing upright-walking species that lives on the ground and very likely first evolved in Africa about 315,000 years ago. There were eight different species or groups of humans that were in existence 200,000 years ago. The truth of the human story is far more complicated, with more species and even more genera that have been named, and more dead ends on the human family tree branches that have been recognized. Early humans first migrated out of Africa into Asia probably between 2 million and 1.8 million years ago.

Our closest relation? Homo neanderthalensis ("Man from the Neander Valley")

Neanderthal was the first specimen to be recognized as an early human fossil. When it was discovered in 1856 in Germany, scientists had never seen a specimen like it: the oval-shaped skull with a low, receding forehead and distinct brow ridges, the thick muscular body, strong bones.

These are the species that dominate the whole Eurasian continent. The cold climate of Europe had led to various structural adaptations in their bodies. Neanderthals had physical features that helped them survive cold climates, like large noses to humidify and warm dry, cold air and short, stout bodies to conserve heat. They have stocky, short height, body, broad chest, and muscular limbs. They were great hunters and used to hunt large animals like mammoths. Fossils had been discovered in their caves where neanderthalensis used to live. There is shared evidence suggesting that they used to follow a sophisticated culture like burying their dead ones and decorating the grave with flowers.

Earlier the Eurasian continent had different climate conditions as compared to now more on the condition like artic icy weather. This climate made Neanderthals depend more on meat as a food option. There was not so much vegetation to support their hunger. There are shreds of evidence that support the statement that they were great seasonal hunters there had been finding of the high prevalence of fractures and more injuries that clearly show that they were great hunters.

They were our cousin's hominins. Both Homo sapiens and Homo neanderthalensis had coexisted around 40,000 years ago. This year

also had marked the extinction of neanderthalensis. Everyone alive whose ancestry is not from Africa carries a little bit of DNA of neanderthal in their genes.We have almost 4-5 % of the DNA content we carry within ourselves. These findings were rare and distinctive.

Still, we land on the same platform why do they perish and we survived? What if we are the reasons for their extinction?

Many theories suggest why their line died out. Major findings of the theories suggest that 'climate change' and 'direct competition with the Homo sapiens were the two major factors. The period when Homo sapiens arrived at the place of the Neanderthals is the point of their extinction. So, we are firmly on the list for their disappearance.

Some theories suggest that there were probabilities of competition between two species for the same resources. There is one difference between both the species. Homo sapiens was the species that traveled to the different parts of the world while Neanderthals were confined to the one region here Homo sapiens has a more great way of sharing culture, knowledge, and tools. Homo sapiens had technology that Neanderthals didn't, including sewing needles to make clothing, important during the colder periods of the Ice Ages. Homo sapiens also had innovative tools like bows and arrows and seemed to have a more diverse diet than Neanderthals. We have a better economic and social organization.

One important factor that drives the competition is communication earlier studies suggest that in Neanderthals the larynx was not in an appropriate position to produce a good range of pitch that is hearable. This contradiction had been proved wrong recent studies state that they used to have hyoid bone and had the same hearing range as us. We often also share a gene called FOXP2 which is responsible for the sound. The international team of researchers experimentally sounds the hearing capacities in between 4-5 kHz. Their form of language might be 'Proto-language, which comprises sound and music.

Prof. Mercedes-conde-Valverde said that "the presence of this hearing ability shows that they might have a complex communication skill. But it does not conclude that they have a mental aptitude to perceive a language like Homo sapiens do". They may be larger brains having capacities of 1,500 cubic centimeters while Homo sapiens have 1,400 cubic centimeters but still this does not account that they were superior. The point to be marked here is that only that species will survive who knows

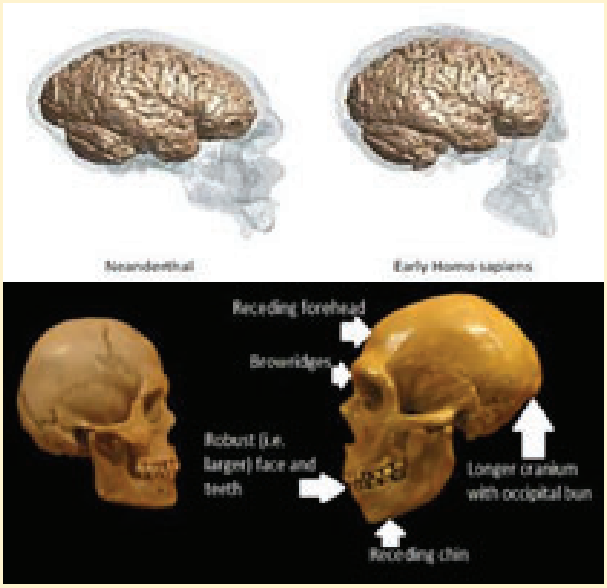

the importance of innovation with the respect to the deviations in the surrounding. Images are below.

Neanderthals were the first to use and make stone tools like scrapers for tanning hides and like so to hunt and are commonly called Mousterian tools. but they lack the concept of innovation they didn't experiment with the tool innovation and had been using the same tools

for decades while Homo sapiens were far a little complicated But the query is still about the competition. Homo sapiens were more advanced in innovation like sewing clothes and making bows and arrow tools for the 'intelligent' way of hunting.

Image shows a great difference in innovation strategies.

Neanderthals tools

Homo sapiens tools

'Diet' could be another factor that drives the competition. They had learned to use fire but still had a less varied diet. They were more dependent on meat and these resources had become scarce due to climate change in the continent. But in opposite to this modern humans have a great diet which includes both plant and meat-based diets.

Climatic conditions are also on the top list.

A research team including the University of North Umbria and Newcastle's have studied the changes in the climatic condition of Europe 40,000 years ago by the 'stalagmites' layers of the Romanian cave. These layers grow in thin layers every year and changes in climate conditions lead to changes in chemical composition. Data extracted from this conclude the series of changes of prolonged cold and dry conditions in Europe. They showed a climate change cycle that ran from a very extreme cold environment to a warming climate shortly. This shows that they were unable to adapt to the warmer climate conditions because their body structure was constructed to adapt to cold conditions Years ago. Homo sapiens bodies were greatly in the arrangement to adapt to the warmer climate of Europe. Scientists were able to reconstruct the climate of eastern Europe between 44,000 – 40,000 by various computer stimulation. This stimulation also shows a cyclic change

.

This picture illustrates some anatomical differences.

After lots of cyclic changes in the

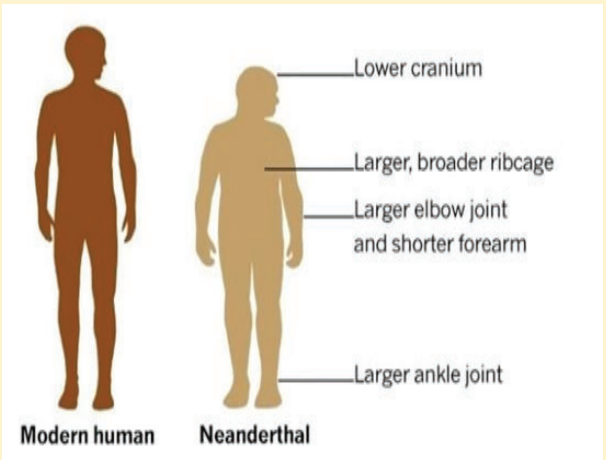

climate it starts to settle down towards warmer section there are chances that a very small group of Neanderthals might have survived but couldn't expand itself again as a dominant species due to the invasion of Homo sapiens as shown in the figure.

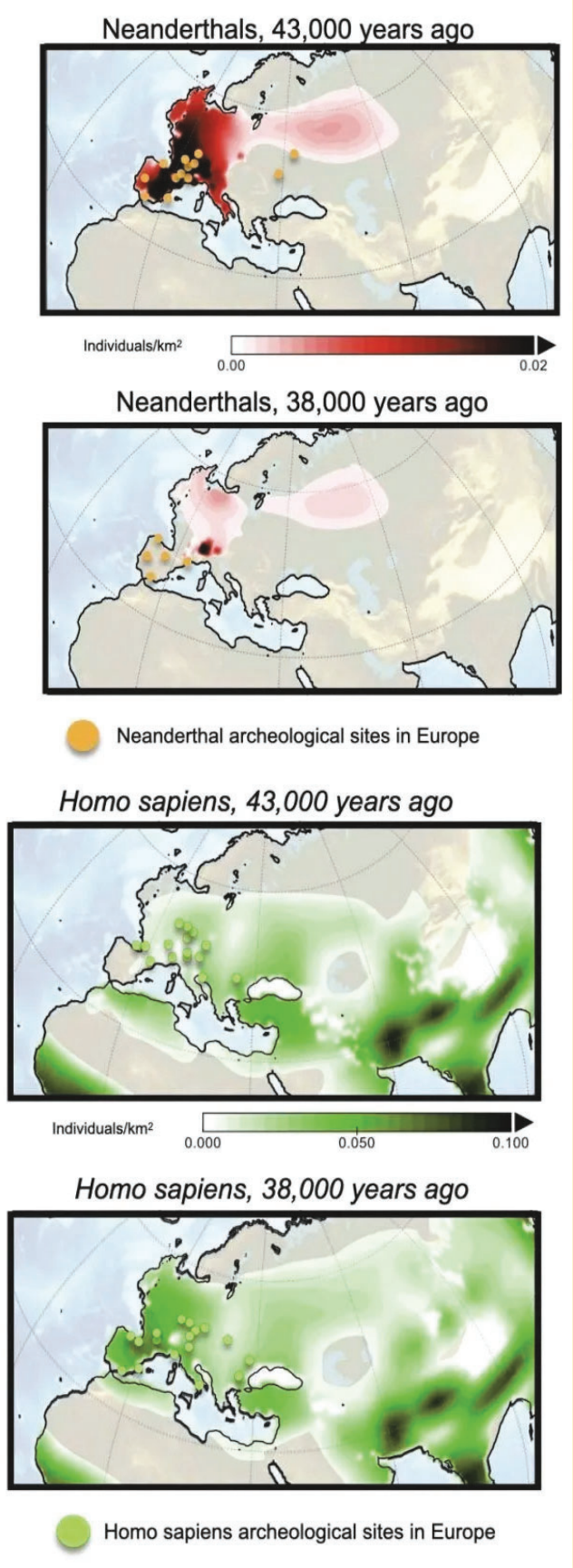

Dr.Vasile Ersk of the Northumbria university had said " The Neanderthals were the closest species we have and around the 40,000 years ago during the last ice age they got vanished after the arrival of modern humans".

_____Andrea Columbu who is a researcher from the University of Bologna said that "that the significant change in climate was not strong enough to drive the whole population to extinct".

Conclusion

The timeline of their disappearance suggests that when they started to interbreed with homo sapiens their population number decreases. They survived through various extreme climate changes but the root causes may lie in their culture which was very stable about 2-3 thousand years they were making the same tool amount of inventiveness is minimal as a comparison to Homo sapiens and we became a superior species and at the end managed to be as 'The latter footing man' on this atlas. By joining the little fragments to know a great history of Neanderthals and Homo sapiens we land on a platform that a small difference of cultural adaptation wiped out our cousins from this globe.

When all is said and done led to a great conclusion that how we see Neanderthals extinction says a lot about us how we deal with the people of our know species there its cultural migration, social problem, caste system, xenophobia across the globe. This condition today is the only reflection of what happened in past. It's high time to understand our uniqueness, not variances.Some various articles and papers express both factors had contributed to the extinction. We might get to solve the remaining loose end of Neanderthals history in the future.

Kajal Senger
B.Sc. Life Sciences (3rd Year)

References …..

https://getliner.com/home/pages/debc6efc-6f1c-3e6f-97a8-471f1f916a8f?access=recommend&index=0&method=DOC_REC_CF_002&url=http://www.bbc.com/earth/story/20150929-why-are-we-the-only-human-species-still-alive

https://getliner.com/home/pages/aaf441e9-e80b-3edb-8d2b-0c24d4cbf83a?access=recommend&index=1&method=DOC_REC_CF_002&url=https://www.ScienceDaily.com/releases/2021/04/210408153650.htm

https://getliner.com/home/pages/f3a99fd1-47e0-35f6-bb65-9b8f7a0aaaae?access=recommend&index=10&method=DOC_REC_CF_002&url=https://www.scientificamerican.com/article/neandertals-probably-perceived-speech-quite-well

The Sixth Extinction Summary - Four Minute Books

Neanderthal Extinction: Was It Caused By Humans? | Shortform Books

Introduction to Human Evolution | The Smithsonian Institution's Human Origins Program (si.edu)Neanderthal Extinction by Competitive Exclusion (plos.org)

Neanderthal Extinction Dilemma | The Institute for Creation Research (icr.org)

Neanderthals vs. Homo sapiens: Inside the 100,000-year-long battle for supremacy (inverse.com)

Difference Between Neanderthals and Homo Sapiens | Definition, Anatomy, Anthropology, Similarities (pediaa.com)

human evolution | History, Stages, Timeline, Tree, Chart, & Facts | Britannica

Introduction to Human Evolution | The Smithsonian Institution's Human Origins Program (si.edu)

Homo sapiens: Why are we the only human species left on the planet? | the USA | EL PAÍS English Edition (elpais.com)

'The Humans We Havent Met Yet - SAPIENS

Hominin species - Were Neanderthals More Than Cousins to H. sapiens?

Why Homo sapiens survived (and other hominins didn't) - New Historian

Neanderthals and Humans - What Are the Differences? - New Historian

https://youtu.be/FMc81qpCQ3g

https://youtu.be/toBWYvtobH0https://youtu.be/vJybfmbrOCE

https://youtu.be/_ANNQKKwWGk

https://youtu.be/ehV-MmuvVMU

Prejudism a Horrendous Hassle

Highlighting the scenario of prejudism in current society is nowhere a vague expression of great concern. There exists untouchability, cultural norms, religious beliefs and some similar kind of stigma is there attached with people's brain cells. These boundations never cease young minds to fill with all the scrap. It isn't just a counterfeit depict of the entire situation, but rather becoming subtle these days people are getting polarised by the society, instead of eviting these maladaptive behaviors.

People are really not free to promote their ideas, creativity, and knowledge in many parts of the society today as well. That's so awful. Isn't it-?

People are just following a typical path of polarisation being beetle brains. A monarch dynasty that was being ruled by British mates and some aborigines wasn't enough to firmly establish the Idea of stereotypes and prejudism-? Maybe it wasn't enough that's why people are governing their minds with such maladaptive behaviours till date.

What is it-?

When at all will this scenario end-in the combined society, for which these norms, boundations lay zero importance today.

Here I am not mingling up the family discipline with the stereotypes, rather just putting a fine approach to the luminosity of stereotypes, that how worst these are turning amid people. This was the best I'm capable of summing about it all, that these thoughts triggered me at times.

Our society is full of expectations, which they demand to be fulfilled eviternal. It's really a horrendous scrap evolving in the mankind association.

Being precise at my part- even I'm not certain what all should I write-? Undoubtedly this is an endless matter because, and really requires a genuine metathesis to be written upon.

Being humans' i.e. "homosapiens", we acquire the highest class, yet some people lack brain cells. We've got resources, and yes what not-? That's really a very absolute thing to go on with a sustainable development ahead. The Poor's the illiterates and many other members of the society tend to acquire a different place in the society. They're being denied with some common access of life.

What is it-?

People in India starve, and die out of hunger. Literacy level in remote areas is yet not so high and standardized. States like Punjab, Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, parts of Rajasthan never ceased on their part to show prejudism in many aspects.

People need to mould their minds in positive dimension and should see the things with different regard, rather than criticising upon them all the time, doesn't compulsorily mean that they should forget their cultural disciplines, but yeah, I'm speaking about prejudism and stereotypes which are not to be followed by the people.

That would be a ultimate turn for the shimmering brightness ahead. People should learn to cope with positive changes, especially the people in the rural areas. Can't comprehend further; writing as if the narrator of a high fantasy illusion ungulate.

B.Sc. Life Sci.(Hons.)
2nd Year

ARTIFICIAL BRAIN

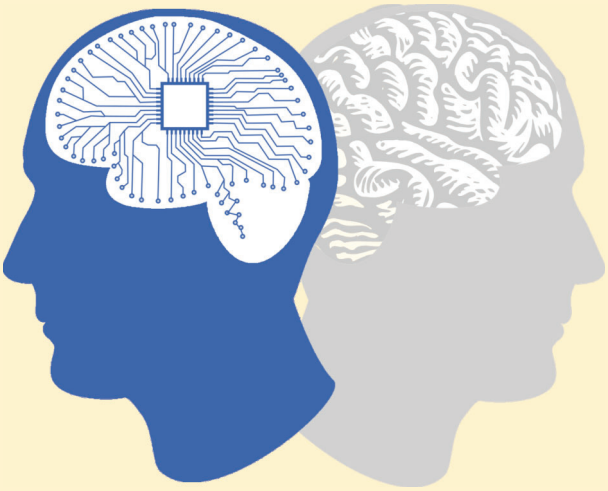

Brain is an important part of animal or human physiology. It basically handles each and every work of an organism's body. Spinal cord that extends with the brain forms the CNS(Central Nervous System). The same is the case for the computer; a microprocessor called the central processing unit (CPU) is considered its brain.

Artificial brain or artificial mind is the combination of organic data about how the real thing works, and combining it with recent technology which includes software and hardware with cognitive abilities similar to those of animal or human brain. This technology which is been investigated will play there different roles in modern sciences which includes better understanding of brain functioning (Cognitive neurosciences) , gives us at least theoretical possibility to create a machine that is capable as a human and create a machine that has same behavior as animals with complex central nervous systems such as mammal as a long term goal .

Its first objective can be observed in the project report by Aston University in Birmingham, England where biological cells are used for the neurosphere for finding new treatments for diseases like

Alzheimer's , motor neurons and Parkinson's diseases.

Its second objective is to counter the arguments that there are aspects of human consciousness or expertise that cannot be initiated by machines. Biological process happening inside the brain can be simulated to degree of accuracy which can be considered as an answer which made as early as1950 by Alan Turing in his classic paper “Computing machinery and Intelligence”

'Artificial General Intelligence' called by Researchers can be said to be the third objective. It is basically focused on whole brain emulation using conventional computational machines mentioned in book ”The Singularity is Near” by Ray Kurzneil who prefers the term ' Strong AI' which could be done by 2025 to implement artificial brain as claimed .

Naiya Chauhan
B.Sc. Life Sciences
2nd Year

Family: Lamiaceae Genus: *Ocimum* Species: *tenuiflorum or sanctum*

Folk names used for *Ocimum sanctum:* Tulsi Holy basil

CULTURAL IMPORTANCE of *Ocimum sanctum* (TULSI/ HOLY BASIL)

Tulsi is one of the oldest medicinal plants and it is being used in Indian culture from past 5,000 years. Ethically Tulsi plant is related to Hindu goddess *Tulsi* thus Tulsi plant is worshipped everyday by Hindus. Tulsi is very always used and mixed in the *prasad* that is offered to lord *Vishnu*. Tulsi is famous for its great

impact on Ayurvedic and therapeutic world. In Hindu culture it is believed that worshiping Tulsi with flowers and mantra (especially Tuesday, Thursday, and Friday) will bring prosperity, calmness and wealth to the family. '*Tulsi Vivah*', is a Hindu festival which celebrates the wedding of goddess Tulsi and God *Vishnu*.

Ocimum sanctum is regarded as 'Queen of Herbs' and it has a great ethnomedicinal importance especially in India. Tulsi has a great significance in Unani System, Ayurdeva, and Naturopathy. And have antibacterial, antifungal, anti- inflammatory, ant cancerous, antioxidant, antimicrobial, analgesic, cardio protective properties which help them to fight various diseases.

Home remedy for curing, fever, cold and cough

The juice of *O. sanctum* leaves is used to reduce fever while biting and chewing its leaves helps to cure cold and cough. It is used as a prime ingredient in home remedies and also in Ayurveda medicines.

Subhangi Singh
B.Sc.Life Science
3rd Year

Education: The Weapon

Education is a masterstroke that can paint lives in our desired way. It plays a vital role in shaping everyone's future.

"An investment in knowledge pays the best interest". A well-written quote by Mr. Benjamin Franklin which states the importance of education in our life. The most successful person is not only the one who has earned a lot but the one who has learned a lot. Education never goes in vain it is always fruitful at some point in our life. The concept of education doesn't rely on bookish knowledge anymore, it has expanded its horizon in our daily life. How we put things in practical use or to solve real-life problems.

It not only enhances one's personality as well as also represents a respectable image in society. It is the sum total of civilized behaviour, dignity, progress, thoughts, and status. It is a structured way to acquire knowledge, get progress, broaden up your thoughts, bring prosperity, happiness, peace and hence lead a way to success in life. Education is the only thing that draws a line between humans and other creatures.

Further, education gives us the knowledge of ourselves, dignity, and pride as a human. It is thus an essential tool that makes us understand human value and dignity. It even broadens our thoughts and mental faculty which makes our judgment more accurate, strong, and unbiased. It gives us the sense of differentiating between right and wrong.

Without the sense of proper education, the progress and development of today's world could be unimaginable. This vast development is only possible because of education. Mankind asks for freedom which is only because of education, awareness, and understanding that one becomes completely free and can enjoy peace of mind. It not only let you free from one's imprisonment but also from your own frustration, fears, anxiety, and worries. It serves as the key factor which will unlock numerous doors holding great opportunities for you to lead a better life. It helps everyone to be a better version of themselves, standing in front of thousands of people with great self-confidence.

We all are aware that hate, revenge, anger, tyranny, rage are the true enemies of mankind

but an educated mind can clean all these emotions and rather will spread the message of love, peace, care, pride, and honour. It also emphasizes on the value of patience and tolerance. As Mahatma Gandhi said, *"To lose patience, to lose the battle"* which means to win any battle never lose your temper just take things as they come with patience and equanimity.

This world is very large having multi –veracity of people and people across the globe from different caste, race, religion, culture still know how to work like one-"unity", closeness and cooperation among them is only possible because of education.

Above all, education aids in building a better society, removing the darkness of ignorance, rage, hate from the lives of the citizen, and bring light to the world.

Abhyarthana Jena
B.Sc. Botany (Hons.)
1st Year

College Diaries

I thought about my college life and walked under the sky,
How competitive will now be my journey but still wanna fly high,
Was confused within ten courses,
Couldn't decide any one,
Thought let's leave it on fate,
Believed whichever one I'll get will be a good one.

My flight took a brand new turn,
And I somehow landed in botany honors,
A renowned University, the source of knowledge,
Efforts were made to pull out our hidden talent,
Surrounded by some formidable students;
Felt so low about myself,
So all I did was focus and studied hard,
While phycology and cell biology flew above my head.

Different nevertheless comfortable I feel here,
Strict yet friendly are the teachers here,
Girls here so beautiful like they were walking down the aisle,
Wearing the trendy clothes which was full on style.

Interesting became my college life,
Learned to fly high in my life,
This marvelous journey was of three years,
Provided me the confidence I needed in my life,
My college, my department is the best,
Maitreyi College will always shine!

Abhyarthana Jena
B.Sc. Botany (Hons)
1st Year

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	स्त्री	प्रतिमा मौर्य	2
2.	शूरवीर	नीमा सिंह	3
3.	जिंदगी	शीतल शर्मा	4
4.	वसंतऋतु	निधि	5
5.	खुद को बनाने की राह पर	ज्योति	6
6.	मंज़िल	उर्वशी	6
7.	दाना -पानी	डॉ. स्नेहलता	7
8.	अनमोल पल (यात्रा वृतांत) स्मृति शेष	डॉ. अनिता देवी	8
9.	रुकना नहीं	अंशिका अग्रवाल	12
10.	महिलाओं के बढ़ते कदम	भावना	13
11.	अलविदा	प्रिंकी यादव	13
12.	कलम, आज उनकी जय बोल..	तनीषा रॉय	14
13.	रन धेनुएँ कविता का मूर्त विधान (साहित्यकार नरेश मेहता के जन्मशती वर्ष पर एक विशेष प्रस्तुति)	डॉ. मीनू कुमारी	15
14.	संत रैदास का सामाजिक योगदान	डॉ. गीता पाण्डेय	17
15.	और वह लौट आई	डॉ. अमिता	22
16.	हिन्दी उपन्यासों में वैश्वीकरण का प्रभाव	डॉ. रीता	24
17.	खामोशी और तन्हाई	डॉ. जसप्रीत कौर	32
18.	"मेरा भारत"	रितिका यादव	33
19.	"औछी राजनीति "	रितिका यादव	33
20.	मैं कौन हूं? (एक नारी का परिचय)	ज्योति झा	34
21.	मां	सौम्या	34

स्त्री

समझ सकते हो, तो समझो
उस आदमी की वेदना।
जिसने खो दिया है अपने ही जैसी,
हूबहू लाड़ करने वाली पत्नी को,
जो लगाती थी हर बेर गश्त चारों तरफ उसके,
घड़ी की सुइयों से भी तेज भागती है जो उसके पीछे,
खाना खा लीजिए!
लंच बॉक्स रख लीजिए!
कहीं कुछ भूले तो नहीं!
अब वो नहीं है तो कैसा लगता होगा।
अगर समझ सकते हो तो समझो उस आदमी की वेदना।
वास्तव में स्त्रियाँ ठीक वैसी ही हैं
हमारे जीवन में,
जैसे नमक रहित खाने में पर्याप्त नमक!
कम मीठे शर्बत में थोड़ी- सी शक्कर!
हाथों की पांचों अंगुलियों में अंगूठा!
संसार का सौंदर्य!
माथे पर छोटी- सी बिंदी!
स्त्री के बगैर आप जिंदगी काट तो लेते हैं,
पर जी नहीं पाते।

प्रतिमा मौर्य
हिंदी (विशेष) प्रथम वर्ष

शूरवीर

जी रहे हो मस्त तुम,
मदहोश अपनी जिंदगी,
खा रहे हो स्वाद से
लेकर जाइका ओ खुशनबी
रह रहे हो छत तले,
सो रहे हो बेफिक्र मगर
क्या सोचते हो? पल भर भी तुम
उन वीरों के बलिदान पर
जिनकी बदौलत ऐश में हो
जी रहे इस पार तुम
जो हिमालय की तरह डटा हुआ
वह चट्टानों- सा फौलादी है,
ऐ! मेरे वतन के वासियों
क्या करते हो प्रार्थना
उन शूरवीरों के लिए,
उस देश प्रेमी के लिए...
क्या आंखें नम हो जाती हैं!
जब हो रहे हों शहीद वो
क्या उबाल ला पाते हो?
अपने इस स्थिर रक्त में
वीरता का, कोम का और देश प्रेम का
क्या सोचते हो जब सर्दियों में बिस्तर में तुम निस्तेज थे
तब देश का वह फरिश्ता हिमपात में खा रहा था गोलियां...
जब घायल हुआ मुल्क तेरा
तब सीना उसका धधका था
फिर लेकर आज़ादी लहू में
मरता रहा, गिरता रहा
जब तक थी सांस लड़े वो
फिर अपनी जां लुटा गया...
थी क्रांति रक्त में उसके,
था जलजला रगों में

वह वीर था, सपूत था,
जो जिया देश के लिए
और निभा गया वीरता का फर्ज़,
वह अमर हुआ और देश के कर्ज़ से मुक्त हुआ
वह भारत का शूरवीर था
जो है आज तिरंगे में लिपटा हुआ
देकर बलिदान जीवन अपना,
वह अडिग रहा था उस पार
क्योंकि वह कायर नहीं
भारत का सच्चा शूरवीर था आखिरकार।

नीमा सिंह
हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

जिंदगी

ऐ! जिंदगी क्या है तू?
वसंत में खिली सरसों की पीली फसल- सी लहराती है तू
कभी नवजात शिशु की पहली किलकारी में गाती है तू
ग्रीष्म ऋतु में तपती धूप- सी इठलाती है तू।
कभी युवा के भीतर दृढ़ निश्चय को छलकाती है तू
पतझड़ में गिरे भूरे पत्तों की धीरता को दर्शाती है तू
कभी मध्य आयु की परिपक्वता को सराहती है तू
शीत में जमी बर्फ की सफेद चादर को पिघलाती है तू।
कभी वृद्धावस्था की प्रज्ञता को कफ़न में दफ़नाती है तू
ऐ! जिंदगी क्या है तू?
जिंदगी तेरे रूप अनेक
हर मोड़ पर सिखलाती है सीख नई एक।
जो मनुष्य तेरे इम्तिहान को पार गया
समझो जीवन को अपने वह संवार गया
बूंद-बूंद मिलकर बनी लहरों के समान है तू
नाव की मांझी और पतवार भी है तू।
दर्पण में ब्रह्मांड की परछाई- सी दृश्यमान है तू
निरंतर चलते कालचक्र की रफ्तार है तू
ऐ! जिंदगी क्या है तू?

शीतल शर्मा
बी ए (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

वसंतऋतु

फूलों पर भौरें हैं छाए
आमो के भी बौर हैं आए,
करें ऋतुराज का स्वागत
देखो सरसों के खेत लहराए
हरियाली का मौसम है ये
कहते हैं जिसे वसंत ऋतु,
ना सर्दी.....गर्मी है
आई है देखो वसंत ऋतु
नई फ़सल है नई उमंग
सबके मुख पर छाए उमंग,
नया- नया ये मौसम प्यारा
लगता है सबके मन को प्यारा!!

निधि
हिंदी (विशेष) द्वितीय वर्ष

खुद को बनाने की राह पर

खुद को बनाने की राह पर
हम इस कदर बढ़ चले हैं
ना तो खुद के लिए समय है
और ना ही अपनों के लिए
बस निकल पड़े हैं|
एक अनजानी- सी राह पर
शायद खुद को संवारने
फिर पता नहीं इसके लिए
हमें कुछ भी करना पड़े
या तो अनजानों को अपना बनाने पड़े
या फिर अपनों को अनजाना करना पड़े
हां, खुद को बेहतर बनाने की राह पर
कितने लोग आगे आते हैं?
और अक्सर आगे आकर अपनों से ही बिछड़ जाते हैं
शायद एक पहचान के लिए
लोग अक्सर यहाँ तड़प जाते हैं
और हार ना मान कर
फिर आगे बढ़ जाते हैं
हां, खुद को बनाने की राह पर
लोग इस कदर आगे बढ़ते चले जाते हैं!!

ज्योति
हिंदी (विशेष) द्वितीय वर्ष

मंज़िल

अपनी मंज़िल का एक ख़्वाब रखो,
रुकावटों को तुम पार करो!

झुकना नहीं है तुम्हें कभी,
उन रुकावटों का तुम दीदार करो!
दरिया है दिक्कतों का यहां,
उसे तुम नज़र अंदाज करो!
मुश्किलें हो जाएंगी आसान,
उस ख्वाब का तुम इल्म रखो!

बस कुछ फासला रह जाएगा,
तुम अपने सफर की शुरुआत करो!!

उर्वशी
बी. ए. (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

दाना -पानी

जीवन सभी के सहयोग और सहायता का नाम है । हम सभी प्रकृति से जुड़े हैं, बहुत कुछ प्रकृति से लेते और देते रहते हैं। कितने जीव- जंतुओं का जीवन हम सभी से जुड़ा है और हमारा उनसे। जहाँ भी हम रहते हैं आस- पास के वातावरण को प्रभावित करते हैं। अपने बड़ों से सुनते थे कि भूखे को भोजन कराना और घर में पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करना बहुत बड़ा धर्म होता है। मैं भी अपनी छत पर पक्षियों के लिए दाना डालती हूँ और मिट्टी के बर्तन में पानी रखती हूँ। देखती हूँ वह थोड़ा- सा भोजन कितने जीवों का सहारा है। दिन भर उन दानों पर चींटियों की लाइन लगी रहती है, कुछ लाइन बना कर आती दिखाई देती हैं, कुछ जाती हुई। अपने भोजन की तलाश में वे दिन रात लगी रहती है, परिश्रम करना कोई उनसे सीखे। प्रतिदिन एक दो गिलहरी भी आती हैं, वो अपने नन्हें हाथों से कभी गेहूँ के दानों को कुतरती हैं, कभी ख़रबूज़े के बीजों का आनंद लेती हैं। कुछ कबूतरों ने तो जैसे उन दानों पर अपना अधिकार समझ रखा है, कोई अनजान कबूतर अगर वहाँ आ जाए तो उसे चोंच मारकर भगा देते हैं। कई बार तो पंखों से एक दूसरे को मारकर लड़ाई भी करते हैं। रात्रि में कभी- कभी गली से एक बड़ा चूहा भी आ जाता है और गमले की मिट्टी को खोद कर बिल बना लेता है, क्योंकि उसे छत पर पानी और गेहूँ के दाने मिल जाते हैं। गौरैया और छोटी चिड़िया भी कभी- कभार दिख जाती है फुदकती हुई। अभी गर्मी बहुत पड़ रही है, कई सारे रिकोर्ड टूट गये हैं। पानी की तलाश में पक्षी इधर -उधर भटकते रहते हैं। एक- दो बार कौवे भी आ जाते हैं। एक दोपहर चार- पाँच बजे जब मैं सोकर उठी, तो बहुत प्यास लगी थी। मैं रसोई में रखे मटके से पानी पीने लगी। तभी देखा कि जिस बर्तन में पक्षियों का पानी रखा होता है उसके किनारे एक कौवा बैठा हुआ था। जब उसने मुझे रसोई की तरफ जाते देखा तो बहुत ज़ोर- ज़ोर से काँव- काँव करने लगा। दादी बताती थी कि जब बंदर या बिल्ली आती है तो उसको देखकर कौवें शोर मचाते हैं, क्योंकि वह उनके अंडों को खा जाते थे। ख़तरे की सूचना देने के लिए भी वो ऐसा करते हैं। मैंने सोचा शायद बंदर आया होगा इसलिए वो ऐसा कर रहा है। जैसे ही मैं बाहर गई तो कौवा उड़ गया, मैंने देखा पानी का बर्तन सूखा पड़ा था। उस दिन मैं पानी डालना भूल गई थी। वह पक्षी मुझे कह रहा था कि मैं प्यासा हूँ और आज इसमें पानी नहीं है। जैसे ही मैंने बर्तन में पानी डाला, कौवा झट से आया और पानी पीने लगा। पानी पीकर वह काँव- काँव कर उड़ गया। उसका शोर अब शांत हो गया था, क्योंकि उसकी प्यास बुझ गई थी। यह देखकर मन में अपार संतोष का अनुभव हुआ, बहुत संतुष्टि हुई। अब मुझे बचपन में सुनी प्यासे कौवे की कहानी याद आ रही थी।

डॉ. स्नेहलता
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

अनमोल पल (यात्रा वृतांत)

स्मृति शेष

बीते दो सालों में कोरोना महामारी के चलते या इस महामारी से उपजी विषम परिस्थितियों के कारण लगभग सभी ने अपने किसी न किसी निकट सम्बन्धी को खोया है। उनकी याद कई बार हमारे जहन में एक ऐसी हूक पैदा करती है कि उस पर नियंत्रण करना हमारे लिए बहुत मुश्किल हो जाता है और मन कह उठता है कि काश ये सब झूठ होता। हिंदी विभाग से सेवानिवृत डॉ. उषा राकेश जैन अब हमारे बीच नहीं हैं लेकिन मथुरा-वृन्दावन की शैक्षणिक यात्रा की व्यवस्था को लेकर उनकी सक्रिय भागीदारी हमारे लिए अविस्मरणीय है। मुझे याद है वह विभागीय बैठक जिसमें गौर वर्ण और सुन्दर नैन-नक्श की धनी डॉ. उषा राकेश जैन माथे पर लाल रंग की बड़ी-सी बिंदी लगाए,अपने चिरपरिचित अंदाज में बैठी हुई थीं। सलीके से पहनी हल्के गुलाबी रंग की साड़ी उनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगा रही थी, बैठक में इस बात पर विचार किया जा रहा था कि इस बार छात्राओं को दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण के लिए कहाँ लेकर जाया जाए, सभी चाहते थे कि कोई ऐसा स्थान चुना जाए जो सुरक्षित होने के साथ- साथ दिल्ली से अधिक दूर भी न हो और छात्राओं के पाठयक्रम से भी सम्बंधित हो। बैठक में डॉ. उषा राकेश जैन ने मथुरा- वृन्दावन जाने का प्रस्ताव रखा जिस पर सभी अध्यापिकाओं ने तुरंत अपनी सहमति दे दी। तत्पश्चात कॉलेज प्रशासन ने भी हमारी इस योजना पर अपनी मोहर लगा दी।

शैक्षणिक भ्रमण को लेकर तृतीय वर्ष की छात्राएं बेहद उत्साहित थीं क्योंकि महाविद्यालय में उनका यह आखिरी साल था और छात्राएं महाविद्यालय से जुड़ी अनेक यादें अपने साथ ले जाना चाहती थीं इसलिए यात्रा को लेकर उनके मन- मस्तिष्क में अनेक दृश्य आकार लेने लगे। यात्रा के दौरान सबको क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी हैं? छात्राओं को घर से क्या-क्या सामान लेकर आना है? आदि अनेक ज़रूरी बातें डॉ. उषा मैम ने सबको बताई। इसके अतिरिक्त मथुरा और वृन्दावन में ठहरने के स्थान आदि को लेकर जितनी भी अन्य ज़रूरी औपचारिकताएँ थीं वह सब उषा मैम ने विभाग की अन्य वरिष्ठ अध्यापिकाओं की मदद से पहले ही पूरी कर ली थीं। इसके उपरांत यह तय हुआ कि सुबह छ: बजे तक हमें हर हाल में कॉलेज से चल पड़ना है। उषा मैम का कहना था कि अगर हम कॉलेज से सुबह जल्दी नहीं चले तो सभी मंदिरों के दर्शन करने से वंचित रह जाएंगे क्योंकि दिन के साढ़े बारह बजे से शाम चार बजे तक सभी मंदिर बंद रहते हैं और अगर ऐसा हुआ तो यात्रा का महत्त्व ही नहीं रहेगा| इसलिए उन्होंने स्पष्ट कर दिया था कि हममें से जो भी कोई सुबह निर्धारित समय पर कॉलेज नहीं आएगा उसको हम छोड़कर चले जाएंगे|

आख़िरकार वह दिन आ ही गया जिसका सब को इंतजार था। सुबह जब मैं घर से निकली तो सड़कों पर अंधेरा पसरा पड़ा था, दिनभर गाड़ियों के बोझ से थकी सड़कें मानो रात में चैन की सांस ले रही हों, इस समय सड़कें सुनसान और ख़ाली थीं इसलिए सब समय पर पहुँच गए थे। पौ फटने के साथ ही हमारी बस यमुना एक्सप्रेस-वे पर थी। यमुना एक्सप्रेस-वे हवाई पट्टी की तरह चौड़ा और खुला था, जिसको देखकर हम यही सोच रहे थे कि काश! दिल्ली की सड़कें भी इतनी ही चौड़ी और खुली होती और हम आए दिन लगने वाले जाम से बच जाते। आँखों के सामने लंबा-चौड़ा हाईवे देखकर कुछ छात्राएं एक- दूसरे के सुर-में-सुर मिलाकर गाना गाने लगी तो कुछ नाचने लगी। बच्चों को नाचते- गाते देख हमारी बस के पास से गुजरने वाले दूसरे वाहनों में बैठे लोग भी बच्चों की मस्ती को देखकर मुस्कुराते हुए आगे बढ़ रहे थे। बस की खिड़की के पास बैठी कुछ छात्राएं ऐसी भी थी जो बस में चल रहे नाच- गाने से दूर खोई हुई- सी खिड़की से बाहर के दृश्यों को निहार रही थीं जैसे वे अपने भावी

जीवन को लेकर कोई सपना बुन रही हों। मैंने भी जब खिड़की के बाहर देखा तो हवा एकदम साफ़ थी। दूर-दूर तक पसरे धान के खेत, उन खेतों की बाड़ पर लगे बड़े-बड़े वृक्ष बस की रफ़्तार के साथ दौड़ते नज़र आ रहे थे।

यात्रा का पहला पड़ाव मथुरा जिले के नंदगाँव में बना नंदबाबा का मंदिर था, यह मंदिर मुख्य सड़क से लगभग एक किलोमीटर दूर, गाँव के बीचों- बीच, नन्दीश्वर पहाड़ी की चोटी पर स्थित था। हम पैदल ही गाँव की संकरी गलियों से होते हुए जा रहे थे। गाँव की महिलाएं खेत- खलियान का काम निपटाकर अपने घरों के बाहर बैठी सुस्ता रही थीं। वहां कोई भी घर, गली-कूचा ऐसा नहीं था, जहाँ मंदिर ना बना हो। अगर मथुरा- वृंदावन को मंदिरों की नगरी कहा जाए तो गलत नहीं होगा। तीन- चार छोटी- बड़ी गली पार करने के उपरांत गली के बीच से ही खड़ी सीढ़ियों की चढ़ाई शुरू हो गई थी। नन्द बाबा के जयकारों की गूंज नीचे सीढ़ियों तक सुनाई दे रही थी। कुछ सीढ़ियाँ चढने के उपरांत उषा, मोहिनी और पद्मिनी मैम वहीं एक घर के बाहर बने चबूतरे पर ही बैठ गई और बाकि सब थोड़ी- सी चढ़ाई चढ़ने के बाद मंदिर के मुख्य परिसर तक पहुंचे, भगवान कृष्ण के पिता नंद बाबा के नाम से जाना जाने वाला यह मंदिर बहुत प्राचीन था, तथा इसको अठारहवीं शताब्दी में भरतपुर के राजा रूपसिंह ने बनवाया था। मंदिर का गृहभाग उस वक्त भक्तों से सटासट भरा हुआ था। कुछ छात्राओं ने आगे जाकर नंद बाबा के दर्शन किए तो कुछ छात्राएं नन्द बाबा के मंदिर की केवल परिक्रमा करके ही वापिस आ गई।

उसके बाद हम बरसाना स्थित 'राधारानी मंदिर' के दर्शन करने के लिए रवाना हुए। यह मंदिर भी एक पहाड़ी पर बना हुआ था जहाँ पहुँचते- पहुँचते दोपहर हो गई थी। सूर्य भी आकाश में अपना प्रखर रूप दिखाने लगा था। ड्राइवर ने हमें एक बड़े- से चौक पर उतारा और एक सड़क की ओर इशारा करके बता दिया कि यही सड़क सीधे मंदिर तक जाती है, वहाँ से सड़क के दोनों ओर छोटे- छोटे पेड़ दिखाई दे रहे थे। यहाँ से मंदिर लगभग एक किलोमीटर दूर था। ड्राइवर ने हमें गाड़ी में ही जूते-चप्पल उताने की सलाह दी, सलाहनुसार हमने वहीं अपने जूते- चप्पल उतारे और नंगे पैर राधारानी के दर्शन करने के लिए चल पड़े। आधा रास्ता पार करने के बाद हमने पाया कि पेड़ों के बीच का अंतराल बहुत बढ़ गया है, और दोपहर की तेज धूप के कारण तारकोल से बनी सड़क आग की तरह तपी हुई है। थोड़ा और चलने पर हमारे पैर जलने लगे और सड़क पर पैर का तलवा टिकाना भी मुश्किल हो गया, सड़क के बाहर दोनों ओर पड़ा रेत भी बहुत गर्म हो गया था। अब हम वहां से न वापिस जा सकते थे और न आगे चला जा रहा था। रेत पर पैर रखें तो वो गर्म और सड़क पर रखें तो वो भी गर्म। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे? तभी मैंने देखा कि थोड़ी दूरी पर सड़क के किनारे एक छोटा- सा पेड़ है जिसकी छाया में हमारी कुछ छात्राएं खड़ी हैं, अच्छी बात यह थी कि उन्होंने पैरों में चप्पल पहन रखी थी, हम भागकर वहां पहुंचे और कुछ देर के लिए उनकी चप्पल हमने पहन ली लेकिन अब उनके पैर जल रहे थे। फिर हमने तय किया कि कुछ दूर हम चप्पल पहन कर चलें और कुछ दूर वो। इस तरह हम जलते- भूनते पैरों से मंदिर पहुंचे, जब हमने ये सब उषा मैम को बताया तो वे तुरंत हमें मंदिर के पिछले भाग में ले गईं और वहाँ पानी से भरे एक बड़े से होद में हमें कुछ देर के लिए अपने पैर डुबो कर रखने के लिए कहा। तब हमने सीख ली कि आगे की यात्रा में चलने से पहले सड़क के तापमान की जाँच- पड़ताल जरुर करेंगे। खैर राधारानी मंदिर में भीड़ ज्यादा नहीं थी। हमने आराम से राधारानी के दर्शन किए, प्रसाद लिया, ठंडी- ठंडी लस्सी पी, लस्सी पीकर सब अपने- आप को तरोताजा महसूस कर रहे थे। तीन बज चुके थे और अब हमें पांच बजे तक यमुना आरती में शामिल होने के लिए वृन्दावन पहुँचना था।

वृन्दावन में थोड़ी देर विश्राम कर शाम को हम यमुना आरती में पहुंच गए। आरती का दृश्य बहुत सुन्दर और देखने लायक था। आरती के साथ बजने वाली घंटियों की आवाज तो बहुत ही मनमोहक थी। वहां के पुजारियों ने हम सब को पूजा- सामग्री से सजी एक थाली दी। खास बात यह थी कि पुजारियों ने इसके लिए कोई दक्षिणा नहीं ली, उनका निस्वार्थ भाव से एक छड़ी के माध्यम से दीयों को यमुना के बहते पानी में रखवाना, मछलियों के लिए आटे की गोलियों को पानी में फैंकवाना, वाकई मन को संतोष देने वाला था। यमुना आरती में शामिल होकर हम अपने आपको भाग्यशाली समझ रहे थे। लगभग एक घंटा बिताने के बाद जब हम यमुना नदी के किनारे बने पुराने घाटों से होते हुए वापिस आ रहे थे तो रास्ते में बहुत बन्दर थे। बन्दर जिस होशियारी से लोगों के हाथों से

सामान छीन रहे थे और चश्मा उतार रहे थे, वह सब देखकर थोड़ी देर के लिए तो हम डर ही गए, लेकिन बाद में खूब हँसे। तभी अचानक घाटों की ओर से एक तेज धूल भरा हवा का तेज झोंका आया और हमारे बीच से निकल गया।

हमारा अगला दर्शनीय स्थल प्रेम मंदिर था। तब तक अँधेरा हो चुका था। बहुत विशाल और भव्य प्रेम मंदिर रंग- बिरंगी लाईटों के कारण अँधेरे में भी जगमगा रहा था। संगीतमय फव्वारें एवं बिजली की रोशनी से उत्पन्न सौंदर्य को देख कर हम आश्चर्यचकित थे। मंदिर के भीतरी भाग को फूलों से सजाया हुआ था, भगवान कृष्ण के जन्म से जुड़ी अनेक घटनाओं को सुन्दर एवं सजीव झांकियों के रूप में संयोजित किया हुआ था, गोवर्धन पर्वत और रासलीला वाली झांकी सबके आकर्षण का केंद्र बनी हुई थी। यह दृश्य इतना अद्‌भुत था कि किसी भी लड़की का वहां से जाने का मन ही नहीं कर रहा था। इस्कॉन मंदिर भी पास में ही था, जहाँ कृष्ण- भक्त विदेशी युवतियों का देसी भजनों पर नृत्य करना बहुत मनभावन था। मंदिर में ही उपहारों की एक दूकान थी जहाँ से हमने अपने प्रियजनों के लिए कुछ उपहार और प्रसाद ख़रीदा। उस दिन का अंतिम दर्शनीय स्थल बाँके बिहारी मंदिर था। रात का समय होने के कारण भीड़ नहीं थी, हमने बाँके बिहारी के दर्शन किए और वहां से पैदल ही शांति कुञ्ज के लिए चल दिए। पैदल चलकर आने में हमें जो आनंद आया वह अवर्णनीय था।

अगले दिन हम सबसे पहले द्वारिकाधीश मंदिर गए। मंदिर देखने के लिए सब बहुत उत्साहित थे। मंदिर तक जाने वाला रास्ता पुरानी गलीनुमा सड़क थी। कुछ ही देर में हम द्वारिकाधीश मंदिर के विशालकाय दरवाजे के पास खड़े थे, लेकिन मंदिर के कपाट तो बंद थे! पूछने पर पता चला कि आज सुबह में मंदिर बंद रहेगा और दोपहर ढाई बजे खुलेगा। यह सुनकर सब उदास हो गए, क्योंकि ढाई बजे तक रुकना हमारे लिए संभव नहीं था अत: हमने यमुना घाट पर जाकर नौका- विहार करने का निर्णय लिया। नौका- विहार के दौरान नाविक ने हमें कंस के किले को बाहर से दिखाते हुए वहां के घाटों की जानकारी दी, उसने हमें वो घाट भी दिखाया जहाँ से वासुकि ने कृष्ण- जन्म के बाद कृष्ण को लेकर यमुना पार की थी। नौका- विहार के दौरान छात्राओं ने कृष्ण के जीवन से जुड़े अनेक सवाल पूछे। सभी अध्यापिकाओं ने अपनी- अपनी जानकारी के अनुसार उन सभी सवालों के उत्तर दिए। रास्ते में हमने रंग- बिरगी चूड़ियाँ, टी-शर्ट खरीदी, उनको पहनकर हम पूरी तरह से वृंदावन के रंग में रंग गए। अंत में हमने कृष्ण- जन्म- स्थली मंदिर को देखा। यहाँ हमें सुरक्षा इंतजामों में अनेक खामियां नज़र आई। मंदिर की एक दीवार मस्जिद की दीवार से जुड़ी हुई थी, जब हमने वहां के पुजारी से इसके बारे में पूछा तो उसने बताया कि प्राचीन समय में यहाँ मंदिर और मस्जिद के बीच में कोई दीवार नहीं थी, हिन्दू और मुसलमान दोनों यहाँ पूजा करने आते थे, लेकिन अंग्रेजों की हुकूमत के दौरान जब हिन्दू- मुस्लिम दंगे हुए तो इनके बीच में ये दीवार खींच दी गई। हमने मंदिर में बना कारावास देखा और अब हम आगे की यात्रा के लिए निकल पड़े।

दोपहर के भोजन की व्यवस्था भी उषा मैम ने रास्ते में पड़ने वाले जैन मन्दिर में की हुई थी। यहाँ का खाना शुद्ध होने के साथ- साथ बहुत ही लज़ीज़ था। गर्मा- गर्म और फूली- फूली पूरियों की खुशबू, छोले और चावल का स्वाद याद आने पर आज भी मुहँ में पानी आ जाता है। खाना तो स्वादिष्ट था ही साथ ही रसोई- घर की स्वच्छता, और बड़े आदर- भाव के साथ खाना परोसने का अंदाज देख हम गदगद हो गए। वहां छायादार पेड़ के नीचे बैठ कर सबने चाय की चुस्कियों का मज़ा लिया और इस व्यवस्था के लिए डॉ. उषा राकेश जैन के प्रति आभार प्रकट किया। परिसर से निकलते समय जब हमारी छात्राओं ने आंवलों से लदे पेड़ों को देखा तो उनसे रहा नहीं गया और वे सभी आंवले तोड़ने के लिए पेड़ों की शाखाओं से लटकने लगीं। तभी हमने छात्राओं को समझाया कि वे पेड़ों को किसी भी प्रकार से हानि न पहुंचाएं, छात्राओं ने हमारा कहना माना और पेड़ों से दूर हो गई। उसके बाद हम दिल्ली के लिए रवाना हो गए। अब हम अपनी- अपनी सीटों पर बैठकर आपस में वृंदावन- मथुरा के मंदिरो, गलियारों की बात करने लगे जैसे- किसको कौन-सा मंदिर सबसे अच्छा लगा और क्यों? यहाँ के प्रशासन को पर्यटकों की खातिर क्या- क्या करना चाहिए? यहाँ की साफ- सफाई और विकास को लेकर भी बहुत काम करने की जरूरत है आदि। इन सभी बातों पर चर्चा करते हुए हम दिल्ली की ओर बढ़ रहे थे। हम पांच बजे से पहले दिल्ली पहुंचना चाहते थे। लेकिन गाड़ी की रफ़्तार बहुत धीमी थी। उषा मैम ने ड्राइवर को कई बार बस की रफ़्तार बढ़ाने के लिए कहा लेकिन ऐसा लगता था जैसे गाड़ी और ड्राइवर दोनों ने ये निश्चय कर रखा था कि ना मैं तेज चलाउंगा और ना मैं तेज चलूंगी, क्योंकि जब-जब ड्राइवर ने बस की गति तेज की तब- तब गाड़ी में कुछ न कुछ दिक्कत हो जाती और गाड़ी को कुछ देर के लिए रोकना पड़ता। खैर, इन सब बाधाओं के बावजूद हम लगभग साढ़े नौ बजे कॉलेज पहुंचे। अब प्रेम मंदिर की भव्यता, बांके बिहारी मंदिर की प्राचीनता, इस्कॉन मंदिर के प्रति विदेशियों की आस्था और विशेष रूप से डॉ. उषा राकेश जैन द्वारा की गई व्यवस्था आदि तमाम बातें जिंदगी भर के लिए हमारी स्मृति में कैद हो गई थीं।

डॉ. अनिता देवी
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

रुकना नहीं

लोग रोकने की लाख कोशिश करेंगे,
बस तुम रुकना नहीं।
वो तुम्हारी तरफ आती सफलता से जलेंगे,
तुम अपने रास्ते से भटकना नहीं।
बेशक मुश्किल ताक लगाए बैठी हों,
पर तुम्हारा जुनून भी किसी आँधी से तो कम नहीं।
दौड़ते जाना बस अपने सपनों के पीछे,
चाहे कोई तुम्हें कितना भी पीछे खींचे।
लोग रोकने की लाख कोशिश करेंगे,
बस तुम रुकना नहीं।
कोई नहीं होगा तुम्हें सफलता तक पहुंचाने के लिए,
पर लाखों की भीड ज़रूर होगी तेरी हार पर हँसने के लिए।
लगा रह जोश के साथ अपने ख्वाबों को सच करने के लिए,
चाहे कोई खड़ा हो ना हो तुम्हें शाबाशी देने के लिए।
मिलती नहीं मंजिल किसी को भी आसानी से,
तो राह में आती हर चुनौती को स्वीकार कर ले!
लोग रोकने की लाख कोशिश करेंगे,
बस तुम रुकना नहीं।
तो आगाज़ कर खुद की खुशियों का नया,
सपना तेरा है तो हिम्मत भी तुझे ही करनी होगी।
डट कर लगन से मेहनत भी तुझे करनी होगी,
तो अब जब ख़्वाब देख ही लिया है।
तो एक जंग भी अकेले में लड़ ही ले,
जो चाहते हैं मंज़िल सच्चे दिल से।
अक्सर उनके ख़्वाब हकीकत में बदल जाते हैं...
लोग रोकने की लाख कोशिश करेंगे,
बस तुम रुकना नहीं।

अंशिका अग्रवाल
बी कॉम (विशेष) प्रथम वर्ष

महिलाओं के बढ़ते कदम

देश विकास और उन्नति के नए- नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। यह तभी संभव हो पा रहा है, जब महिलाएं पुरुषों के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ें। चूल्हा- चौका व खाने का काम तक सीमित रहने वाली महिला अब अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गई है। उदाहरण के लिए मानकुंवर बाई राजपूत को देख सकते हैं, जिसने अपने पति की मृत्यु के बाद सामाजिक, आर्थिक तथा मानसिक दृष्टि से विपरीत परिस्थितियां होने के बावजूद हार नहीं मानी और जैविक खेती, माडल खेती एवं समाज-सेवा करने के साथ-साथ अनेक सराहनीय कार्य किए और उसने अपने आपको किसी से कम नहीं समझा। अवनी लेखरा भी एक ऐसी ही महिला हैं जिन्होंने 2022 में पैरा शूटिंग वर्ल्ड कप में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया। इस जीत पर पी.एम नरेंद्र मोदी के उनको बधाई दी। ये महिलाएं देश की दूसरी महिलाओं को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। महिलाओं के प्रति अपनी सोच बदलने से ही देश आगे बढ़ेगा और इसके लिए महिलाओं को प्रोत्साहित भी करना चाहिए और मार्गदर्शन भी करना चाहिए। आज महिलाएं अपने प्रयास और प्रयत्न में कहीं भी पीछे नहीं हैं। विज्ञान, व्यापार, खेल, राजनीति आदि, उन्होंने हर क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। किंतु आवश्यकता है उन्हें अवसर प्रदान करने की। इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री के रुप में भारत का नाम सपूर्ण विश्व में गौरवान्वित किया है और मीरा बाई चाऊ द्वारा खेल में पहला पदक जीतना हर भारतीय महिला के लिए व देश के लिए गर्व एवं प्रेरणा की बात है। आजकल महिलाएं किसी पुरुष से कम नहीं चाहे वह नौकरी हो या व्यवसाय, वह हर क्षेत्र में आगे हैं और ऐसे ही वे अपने सपने पूरे करेंगी और अपने मुकाम या सपने को पूरा कर बुलंदियां छुएंगी।

महिलाओं के कदम यदि इसी तरह आगे बढ़ते गए तो हमारा देश एक नए ढंग का देश बनेगा तथा केवल पुरुषप्रधान देश ही नहीं महिलाप्रधान देश भी कहलाएगा|

भावना
हिंदी (विशेष) द्वितीय वर्ष

अलविदा

आ गया वो मोड़ जिसमें अलविदा कहना पड़ रहा, अलविदा कहना पड़ रहा।
क्लास और कैंटीन की कहानी होंगी खत्म अब,
अब अलग होंगी मंज़िलें और अलग होगा रास्ता।
कैंपस की वो सीढ़ियां जमती जहाँ थी महफ़िलें,
वो सीढ़ियों का स्टेज भी अब खाली करना पड़ रहा।

आ गया वो मोड़ जिसमें अलविदा कहना पड़ रहा, अलविदा कहना पड़ रहा।
बच्चे ही थे न जब हम आये थे,
ये पल भी कैसे ढल गये हाथ में डिग्री मिली और हम सयाने हो गए।
सेमेस्टर के एग्जाम सब कितनी जल्दी हो गए,
एक पल में अरसा गुजरा ये दौर भी अब थम रहा।
आ गया वो मोड़ जिसमें अलविदा कहना पड़ रहा अलविदा कहना पड़ रहा
मेरे दोस्तों ठीक से देखो कहीं कुछ छूटा न हो।
कहीं तुम्हारी वजह से कोई दिल रूठा न हो,
मिटा कर सभी रंजिशें गले मिल लो फिर से।
मिलने का वादा कर लो क्योंकि जा रहा, जो वक्त वो दोबारा आने से रहा।
दिल थाम आँखें पोंछकर, अलविदा कहना पड़ रहा अलविदा कहना पड़ रहा।
मेरे यारों यह साथ का पल अब एक दास्तां में बदल रहा, आ गया।
वो मोड़ जिसमें अलविदा कहना पड़ रहा... अलविदा कहना पड़ रहा।

प्रिंकी यादव
हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

कलम, आज उनकी जय बोल..

जला अस्थियाँ बारी- बारी
चटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल-जलाकर बुझ गए किसी दिन
माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रही सौ लपट दिशाएं,
जिनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा,
साखी हैं उनकी महिमा के
सूर्य- चन्द्र- भूगोल- खगोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

तनीषा रॉय
हिंदी (विशेष) प्रथम वर्ष

किरन धेनुएँ कविता का मूर्त विधान

(साहित्यकार नरेश मेहता के जन्मशती वर्ष पर एक विशेष प्रस्तुति)

नरेश मेहता का जन्म सन 1922 ईस्वी में मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के शाजापुर कस्बे में हुआ । बनारस विश्वविद्यालय से इन्होंने एम. ए. किया । इन्होंने ऑल इंडिया रेडियो इलाहाबाद में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में भी कार्य किया। नरेश मेहता 'दूसरा सप्तक' के प्रमुख कवि हैं । इनकी साहित्य साधना के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' व 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। इनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य जगत की अमूल्य निधि हैं।

नरेश मेहता ने अनेक काव्य संग्रहों में से 'चैत्या' भी एक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह है जिसमें संकलित कविता 'किरन थेनुएँ' एक अद्भुत कविता है। कविता का मूर्त विधान पाठक को अभिभूत करने वाला है।

उदयाचल से किरन -धेनुएँ
हाँक ला रहा वह प्रभात का ग्वाला।
पूँछ उठाए चली आ रही
क्षितिज जंगलों से टोली
दिखा रहे पथ इस भूमा का
सारस सुना- सुना बोली

क्षितिज से मंद- मंद किरणों का फूटना और सारस द्वारा शोर मचा- मचा कर उन्हें 'भूमा' की ओर खींचना। कविता का यह प्रारंभ अलौकिक ,अदृश्य से लौकिकता की ओर कदम रखने जैसा है। हिंदी साहित्य में इससे पूर्व कामायनी में 'भूमा' शब्द का प्रयोग हुआ है जो निसंदेह असाधारण है। यहाँ पर भी 'भूमा' शब्द अलौकिक परिवेश की सृष्टि करता है । कवि ने प्रभात को ग्वाला बताते हुए कहा है कि वह प्रातः काल में मानो किरन रूपी गायों को हाँकते हुए पर्वतों से दौड़ा चला आ रहा है और किरणें भी धेनुओं की भाँति भागी चली

आ रही हैं। सारसों की लगातार आवाजें ऐसी लग रही हैं मानो वह उन्हें धरती की ओर आने का रास्ता बता रही हों।

गिरता जाता फेन मुखों से
नभ में बादल बन तिरता
किरन धेनुओं का समूह यह
आया अंधकार चीरता
नभ की आम्र छाँह में बैठा बजा रहा वंशी रखवाला

कवि की कल्पना हृदय पटल पर हुबहू चित्र अंकित करती है। कविता का मूर्त विधान देखते ही बनता है। धेनुओं के मुख से गिरते झाग को कवि ने बादल बताया है और कहा है कि किरण धेनुएँ अंधकार को चरती हुई आ रही हैं। कविता के हर शब्द में बिंब उपस्थित होता है। शुरू से अंत तक कवि ने अपने मन के भावों को एक दृश्य की भांति पाठक के मस्तिष्क पटल पर उतार दिया है।

ग्वालिन- सी ले दूब मधुर
वसुधा हँस हँस कर गले मिली
चमका अपने स्वर्ण सींग वे
अब शैलों से उतर चलीं।

बरस रहा आलोक- दूध है
खेतों खलिहानों में
जीवन की नव किरण फूटती
मकई औ' धानों में
सरिताओं में सोम दूह रहा वह अहीर मतवाला

वसुधा रूपी ग्वालिन के माध्यम से किरन धेनुओं का हरी दूब खिलाकर स्वागत करना, बहुत ही सुंदर वर्णन है| कविता के मध्य में आकर किरण धेनुओं के सींग चमकने की बात कहना इस बात का संकेत है कि अब उनका तेज बढ़ रहा है। "अब' शैलों से उतर चली" पंक्ति से यह इस बात पुष्टि हो जाती है। प्रातः काल में सूरज की मंद किरणों के आलोक को कवि ने दूध -सा बताया है साथ ही नदी के जल को अमृत के समान कहा है। यहाँ प्रभात के लिए 'अहीर' शब्द का प्रयोग सटीक है क्योंकि इससे पहले 'ग्वाला' शब्द का प्रयोग हुआ है| प्रस्तुत कविता प्रकृति के बीच जीवन के राग की भांति खनक उठी है। प्रातः काल अपने पूरे प्राकृतिक कुटुंब के साथ उतर आया है। सूरज की किरणें, हरी दूब ,आसपास चहकते पक्षी और नदी का स्वच्छ जल प्रभात ग्वाले को सहयोग करते हैं। पाठक भाव विभोर- सा मानो अपने- आप को हरे- भरे खेतों के बीच पाता है और चारों ओर प्राकृतिक उपादान मूर्त रूप में उसके साथ अठखेलियाँ कर रहे हैं। कविता का शब्द विधान कुछ इस प्रकार का है कि पाठक को स्वर्णिम आनंद का अनुभव होता है। ऐसे बिंबात्मक वर्णन उसे प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य का साक्षातकार कराते हैं। 'चैत्या' काव्य संग्रह में कविताएँ तो और भी हैं किंतु 'किरन धेनुएँ' कविता एक अप्रतिम कविता है।

प्रातः काल का जितना सजीव बिंब कवि शमशेर बहादुर सिंह ने अपनी कविता 'उषा' में खींचा है उतना ही सजीव बिंब नरेश मेहता की इस कविता में दिखाई पड़ता है। प्राकृतिक सुषमा और दृश्य विधान के आधार पर 'किरन धेनुएँ' कविता का भाव साम्य 'उषा' कविता से किया जा सकता है|

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा - से लाल केशर से
कि धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने

इस कविता में भी प्रातः काल के आसमान को नीला शंख, राख से लीपा चौका, लाल केसर से पुती काली सिल और लाल खड़िया से धुली स्लेट बताया गया है। 'उषा' कविता का भाव जगत व मूर्त विधान भी 'किरन धेनुएँ' कविता जैसा प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1 चैत्या (कविता संग्रह) कवि श्री नरेश मेहता, प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ
2 'टूटी हुई बिखरी हुई' (कविता संग्रह) कवि शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन
3. कविता के आर पार, लेखक - नंदकिशोर नवल
4. समकालीन हिंदी कविता,लेखक- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

डॉ. मीनू कुमारी
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

संत रैदास का सामाजिक योगदान

मध्यकालीन संत कवियों में सामाजिक-साहित्यिक योगदान की दृष्टि से रैदास अथवा रविदास का महत्तवपूर्ण स्थान है। इनका आविर्भाव ऐसे युग में हुआ जब समाज में जाति व्यवस्था की संकीर्णता के कारण समाज में उंच-नीच की भावना का प्रस्फुटन हो रहा था। सामाजिक सद्भाव और एकत्व की भावना निरंतर दम तोड़ रही थी। शूद्र-कुल में पैदा हुये व्यक्तियों को न तो देव स्थानों पर पूजा का अधिकार था, न ही वेद आदि ग्रन्थों को छूने का। इस कारण ब्राह्मणों और शूद्रों में मनोमालिन्य लगातार बढ़ता जा रहा था। जहां ऊंची जाति का व्यक्ति अपने अनैतिक और तमाम दुष्कर्मों के बावजूद सम्मान का अधिकारी था वहीं निम्न-कुल उत्पन्न व्यक्ति सत्कर्मी-संस्कारी होते हुए भी उपेक्षित और तिरस्कृत हो रहा था। चूंकि रैदास का जन्म एक अत्यंत निम्न जाति में हुआ और स्वयं उन्होंने घृणा और तिरस्कार की पीड़ा और दंश को सहा। 'रैदास-परचई' तथा 'भक्तमाल' में जिन घटनाओं का

उल्लेख मिलता है, उससे यह स्पष्ट होता है कि रैदास जी का ब्राह्मणवाद एवं पुरोहितवर्ग से ज़बरदस्त संघर्ष रहा। रैदास ने तत्कालीन समाज की धार्मिक रूढ़ियों, कर्मकांडों, पुरोहित वर्ग की निरंकुशता और वितंडावाद का डटकर विरोध किया, उन्होंने अपनी सच्चरित्रता एवं तर्क-पद्धति से ऐसे भक्ति मार्ग का प्रतिपादन किया जो व्यापक मानव धर्म से प्रेरित, सर्वग्राही तथा सर्वसुलभ थी।

मध्ययुगीन भारत धार्मिक उतार–चढ़ाव का युग रहा है, इस युग में फैली राजनीतिक उथल-पुथल ने समाज की स्थिति को भी शोचनीय दशा में पहुँचा दिया था। धर्म के क्षेत्र में अंधविश्वास, बाह्य-आडंबर, मूर्तिपूजा, जादू -टोना, भूत-प्रेत जैसी कुरीतियों ने अपना वर्चस्व स्थापित किया हुआ था। इस समय की अशिक्षित जनता हताश और निराश धार्मिक मायाजाल में लगातार फंसती चली जा रही थी। ऐसी स्थिति में दिग्भ्रमित जनता को ज्ञान की रोशनी दिखाने का पूरा श्रेय संत समाज को जाता है, जिन्होंने सहज व सरल भाव से अपनी बात को काव्य के माध्यम से व्यक्त किया। उनकी इस बात में किसी प्रकार की लाग लपेट नहीं थी। वह तो बिलकुल सीधी सच्ची बात थी जो एक हृदय (संतों) से निकलकर दूसरे (संतप्त समाज) के हृदय तक पहुंची थी।

भारत में विभिन्न मतों तथा धर्मों के लोगों में मेल-जोल और भाईचारा बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य मध्यकालीन संतों ने किया, इन संत कवियों में संत रविदास का नाम अग्रणी है। संत रविदास ने सामाजिक उत्थान के उन माध्यमों का अनुसरण एवं अनुसंधान किया जो लोक कल्याण और मानवता के हित में थे। इस विषय में रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है- ' उच्च-नीचता, छुआछूत, धार्मिक संघर्ष आदि का नाश करके उच्च विचारों से प्रेरित होकर आदर्श सामाजिक जीवन व्यतीत करना ही उनका लक्ष्य था"[1] संत रविदास ने समाज में फैले वैषम्य को बहुत करीब से अनुभूत किया, वे अपनी वाणी के माध्यम से समाज कल्याण की भावना को व्यक्त करते हुए कहते हैं-

'संतन के मन होत है सबके हित की बात
घट घट विचारों अलख को, पूछे जात न पात।'[2]

रविदास जी का मानना था कि सभी मनुष्य ईश्वर की देन हैं, उनमें धर्म या जाति के आधार पर भेद करना स्वयं को अज्ञान में रखने जैसा है। जिस प्रकार गौतम बुद्ध ने जब पर-पीड़ा को अनुभूत किया तो वे परम तत्व की खोज करने निकल पड़े थे और समाज-कल्याण की ओर प्रेरित हुए, वैसे ही संत रविदास ने भी अपने समय की सामाजिक विषमताओं एवं विसंगतियों का समाधान अपनी वाणी अथवा संदेशों के माध्यम से खोजने का प्रयत्न किया। उन्होंने मानव कल्याण के लिए सत्संगति, प्रेम, क्षमा, सत्य, अहिंसा, दया, नैतिकता जैसे मूल्यों की पुनर्स्थापना की। सत्संगति के महत्व को प्रतिपादित करते हुए वे कहते हैं-

'साधु संगति बिना भाव नहीं उपजै, भाव भगति क्यो होई तेरी।'[3]

उनका कहना है कि सत्संगति से मनुष्य के अंदर विवेक जाग्रत होता है। मानव जैसी संगति में रहता है, उस पर वैसा ही प्रभाव पडता है। सत्संगति के प्रभाव से दुर्जन भी सज्जन बन जाता है। सत्संगति से ही भक्ति संभव हो सकती है।

मध्ययुग हिंसा, प्रति-हिंसा का युग रहा है। जहाँ पारस्परिक द्वेष, षड्यंत्र, प्रतिशोध जैसी भावनाओं ने मानवता को खंडित कर दिया था। रविदास जी ने क्षमा जैसे मूल्य को समाज में पुनर्स्थापित कर मनुष्य को एक नई दिशा एवं दृष्टि प्रदान की। उन्होंने मनुष्य को इस सत्य से अवगत कराया कि संसार नश्वर है और ईश्वर ही सत्य है। राम ही सत्य है बाकी सब व्यर्थ है-

'राम नाम जिह तन रम्यौ सोई तन आपु उजास
अन्त छार ह्वे जाइहि बेगि चेतु रैदास'[4]

रैदास के अनुसार जब तक मानव में प्रेम का उद्भव नहीं होता तब तक वह भक्ति की पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता। मानव के उद्धार का मार्ग भी प्रेम ही है। प्रेम ही मुक्ति का मार्ग है- 'प्रेम भक्ति सो उघरे, प्रकटत जन रैदास'[5]

दया, परोपकार आदि नैतिक भावनाओं का विकास तथा अहंकार का त्याग आदि मूल्यों की बात कर संत रविदास जी ने मानव कल्याण की भावना को बलवती किया है। रैदास जी ने धार्मिक अंधविश्वास, कट्टरता, परंपरागत रूढ़ियों को दूर करके एक ऐसी विचारधारा का निर्धारण किया जो परस्पर विरोधी संस्कृतियों के बीच के मतभेद को दूर-कर समाज में भावात्मक एकता का संदेश दिया। उन्होंने बाह्य-आडंबरों, पोंगापंथी ,पाखंड, लोलुपता, धन-संचय आदि अवगुणों का विरोध कर कर्म और श्रम की प्रतिष्ठा, ईमानदारी से जीवन यापन करने, ईश्वर को देवालयों में ना खोजने बल्कि अपने अंतस में मानकर उसका भजन करने की बात कही।

उन्होंने धार्मिक क्षेत्र में फैले अंधविश्वास और बाह्य-आडंबर को दूर करने का अभूतपूर्व प्रयास किया, मूर्ति-पूजा, छापा-तिलक, आदि बाह्य विधानों का विरोध कर सीधे सच्चे मार्ग को अपनाने की बात की। उनका मानना है कि ईश्वर तो करोड़ों सूर्य से अधिक तेजवान है। उसकी आरती या हवन करने से क्या लाभ है? मूर्ति पूजा, गंगा नहाने आदि अनेक विधानों से ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। ईश्वर प्राप्ति हेतु अहंकार का त्याग करना आवश्यक है-

'कहा भयो नाचै अरु गायै, कहा भयो तप कीन्है,
कहा भयो जे चरन पषाले, जो लौ परम तत्त नहि चीन्है,
कहा भयो जे मूड़ मुड़ायौ, बहु तीरथ व्रत कीन्है
स्वामी दास भगत अरू सेवग, जौ परमतत्त नही चीन्है,
माथे तिलक हाथ जपमाला, जग ठगने के स्वाँग बनाया
मारग छाड़ि कुमारग उहकै सांची प्रीति बिनु राम न पाया।'[6]

रविदास जी का मानना है कि भक्ति से आत्म विकास होता है, उसमें मानवीय मूल्यों का संचार होता है, जैसे- सदाचार, नैतिकता, आत्मसंयम आदि । उनका मानना था कि पंच विकारों को त्यागकर ही भक्ति की जा सकती है। उन्होंने समाज में फैले असंतोष और धन-लोलुपता को त्यागने की बात की और कर्म की प्रधानता को सिद्ध किया।

'जिव्हा से औंकार भन, हत्थन सौ कर कार
राम मिलहि घर आइकर, कहि रविदास विचार।'[7]

रविदास जी कहते हैं जो मनुष्य कर्म में लीन रहता है, उसकी सुध-बुध ईश्वर स्वयं करते हैं। अतः जो मनुष्य कर्म में निरंतर रत रहता है वही जीवन में विजेता होता है।' इस प्रकार वे भक्ति के विधि विधानों का खंडन करते हैं और समाज को कर्म करते हुए भक्ति की प्रेरणा देते हैं। इसके लिए गृह त्यागने और बाह्य आडंबर को आरोपित करने की आवश्यकता नहीं है। अतएव कहा जा सकता है कि संत रविदास जी में कबीर की सी तीव्रता भले ही नहीं मिलती परंतु उनके तीव्र मधुर व्यंग्य व्यक्ति के मर्म को तीव्रता से प्रभावित करते हैं।

रविदास जी अपने युग की सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों से पूर्णतः अवगत थे। उनका युग धार्मिक संक्रांति का युग था, इसलिए धर्म से विलग होकर समाज कल्याण की बात नहीं की जा सकती थी। उन्होंने धर्म और भक्ति के क्षेत्र में समानता और समान अधिकार की बात कही, जो समाज का पथ प्रदर्शक बन सकी। संत रविदास जी ने धर्म से संकीर्णता को मिटाने का सफल प्रयास किया। धर्म की परंपरागत कट्टरता, हठयोग जैसी रूढ़ियों में से उनका चयन किया जो समाज के हित में थीं। उन्होंने समन्वयवादी विचारधारा का सूत्रपात किया, हिंदू -मुस्लिम दोनोँ जातियों के बीच तादात्म्य स्थापित करने का कार्य किया।

- 'रैदास कोऊ अल्लइ कहइ, कोउ पुकारइ राम
केसउ क्रिस्न करीम सभ माधव मुकंदह नाम'[8]

-'सामी सिरजन हार है, राम रहीम खुदाय
रैदास हमारो मोहना पावन केसो राय।'[9]

संत रविदास ने तद्युगीन परिस्थितियों के अनुकूल ऐसे व्यावहारिक समाधान खोजे जिससे समाज का दुख-दर्द और पीड़ा कम हो सके। इसके लिए उन्होंने जातिवाद और सामाजिक विषमता को दूर करने का प्रयास किया। श्री योगेंद्र सिंह के अनुसार 'धार्मिक क्षेत्र की संकीर्णताएँ तथा परस्पर विभेद भी अब इस नये युग में संघर्ष के विरुद्ध खडे नहीं रह सकते थे। प्रत्येक संप्रदाय तथा उसका उप -संप्रदाय अपनी स्पर्धात्मक श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए वैधी रूप एवं कर्मकांड की अति में उलझता चला जा रहा था। रैदास ने उनमें से किसी का विरोध न करके उनमें से सबकी अंतरात्मा को लेकर एक समन्वित विचारधारा दी।'[10] वस्तुतः धर्म का मूल स्वर है -सभी में आपसी सौहार्द बनाए रखना। दया, सेवा, प्रेम जैसे भाव यदि धर्म में दृष्टिगत नहीं होते तो वह निरर्थक है।

संत रविदास ने वर्ण-व्यवस्था का पुरजोर विरोध किया है। उन्होंने कहा है कि ईश्वर के यहाँ जाति, कुल, वंश, आचार-व्यवहार आदि के आधार पर कोई वैषम्य नहीं मिलता है। भगवान के लिए सभी समान हैं, चाहे वह ब्राह्मण है या शूद्र। यह जातिगत भेद मानव का स्वयं रचा जाल है। जिसमें वह स्वयं ही फँसकर रह जाता है। भगवान ने केवल मानव बनाया था। जाति तथा वर्ण के आधार पर हमने उसे बांटा है। वे कहते हैं-

- 'रैदास उपजइ सभ इक नूर ते, ब्राह्मण, मुल्ला शेख

सभ को करता एक है, सभ कूँ एक ही पेख।' [11]

'ब्राह्मण खतरी बैस सूद रैदास जनम ते नांहि,
जो चाहइ सुबरन कउ पावई करमन मांहि।' [12]

रैदास जी का मानना था कि व्यक्ति अपने कर्म से भला या बुरा होता है, जाति से नहीं। जन्म से कोई शूद्र पैदा नहीं होता, मनुष्य पैदा होता है। अतः एक मनुष्य और दूसरे मनुष्य में कोई भेद नहीं। इस रूप में उन्होंने वर्ण-व्यवस्था के विरूद्ध एक अभियान और आंदोलन खड़ा किया।

उन्होंने जाति को महत्त्व न देकर मानवता को महत्व दिया है-

'रैदास जात मत पूछिये, का जात का पात
ब्राह्मण, खत्री वैस सूद, सभन की इक जात।'[13]

संत रविदास ने जाति भेद का आधार ऊंच-नीच को न मानकर कर्म को माना है-

'रैदास जन्म के कारनै होत न कोउ नीच
नर कूँ नीच करि डारि है, ओछे करम की कीच।'[14]

वे कहते हैं कि गुणहीन ब्राह्मण के स्थान पर गुणवान चांडाल को पूजना श्रेष्ठ है। केवल जाति के आधार पर नीची जाति का व्यक्ति गुणहीन नहीं हो जाता। निम्न जाति का व्यक्ति ब्राह्मण से अधिक गुणवान हो सकता है।

'रैदास ब्राह्मण मत पूजिए, जऊ होवै गुणहीन।
पूजिहिं चरन चंडाल के, जऊ होवै गुन प्रवीन॥ '[15]

तत्कालीन समाज में फैली जातिगत अव्यवस्था का उदाहरण रैदास जी ने प्रस्तुत करते हुए कहा है कि जिस प्रकार केले के पेड़ पर एक पत्ते पर दूसरा पता निकलता जाता है, वैसे ही समाज में एक जाति में अनेक जाति निकल पड़ी है, किन्तु वास्तव में मूल तो एक ही है, वह है -मानव जाति।

'जात जात में जात है, ज्यों केलन के पात।
रैदास न मानुष जुड़ सकै, जौं लौं जात न जात॥'[16]

रविदास जी ने जातिगत वैषम्य को मिटाकर समानता की बात कही है। गुरू नानक की भांति ही उन्होंने भी कहा है कि भगवान के लिए उसके सभी बंदे समान हैं, ऊंचे कुल में जन्म लेने से कोई ऊंचा नहीं हो जाता।

'ऊंचे कुल के कारनै, ब्राह्मण कोय न होय
जउ जानहि ब्रह्म आत्मा, रैदास कहि ब्राह्मन सोय॥' [17]

स्पष्ट है रविदास जी ने जाति को महत्त्व न देकर कर्म को महत्त्व दिया है। जिसमें वंश, परंपरा, ऊँच-नीच के लिए कोई स्थान नहीं है। वे सभी सत्कर्म और आपसी भाईचारे की सीख देते हैं। अन्यत्र वे कहते हैं कि जात-पात के भ्रम में पड़कर लोग अपनी मानवता को भूल बैठे हैं।

' जात पांत के फेर मंहि, उरझि रहइ सब लोग।
मानुषता कूँ खात हइ, रैदास जात कर रोग॥ '[18]

संत रविदास ने संसार में किसी जाति को नहीं माना है, सभी भगवान के बनाए इंसान हैं, और इनकी एक ही जाति है, वह है- मानव जाति और उनका एक ही धर्म है- मानवता। संसार से जब तक जातिवाद खत्म नहीं होता, तब तक भावात्मक एकता नहीं हो सकती। उन्होंने समाज का मार्गदर्शन करने का भरसक प्रयत्न किया है।

समग्रतः 'मन चंगा तो कठोती में गंगा' का उद्घोष कर रैदास ने दीन-दलितों को उभारने, उनमें स्वाभिमान तथा आत्मसम्मान प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने भक्ति, साधना और आत्मोन्नति के लिए सदाचार, नैतिकता तथा आत्मसंयम का संदेश दिया। समाज-सुधार और लोक-कल्याण की जो बात रैदास ने मध्ययुग में कही, उसका प्रभाव हम आधुनिक युग में भी देख सकते हैं। आधुनिक युग में होने वाले समाज सुधार आंदोलनों को मध्ययुग की देन माना जाय तो गलत नहीं होगा। आधुनिक युग में महात्मा गांधी, ज्योतिबा फुले, भीमराव अंबेडकर आदि ने भी जातिवाद का पुरजोर विरोध किया। गांधीजी के आंदोलन का प्रभाव रहा कि देश से जातिवाद को समाप्त करने की पहल हो सकी। गांधी जी के उद्गारों में हमें संत रविदास के भावोँ की अभिव्यक्ति मिलती है। आज भी हिंदू- मुस्लिम एकता को स्थापित करने के लिए हमें संत रविदास की महती आवश्यकता है। रैदास ने आत्मानुभूत सत्य के प्रतिपादन के साथ-साथ सामाजिक भेदभाव,

उंच-नीच की भावना को समाप्त करके परस्पर सौहार्द, प्रेम और भ्रातृत्व भाव का संदेश दिया, जो आज भी उद्बोधक, प्रेरक और प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ:

1- संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह 'दिनकर', पृ० 537-38
2- रैदास ग्रंथावली – डॉ० जगदीश शरण ,पृ० 122, पद -211
3- वही –,पृ० , पद -
4- वही –,पृ० 140
5- वही –,पृ० 25, पद -12
6- वही –,पृ० 155
7- वही –,पृ० 68, पद-103
8- वही –,पृ० 86 , पद-133
9- वही –पृ० 91 , पद-145
10- वही –पृ० 66 , पद-98
11- वही –पृ० 67, पद- 99
12- संत रैदास- योगेंद्र सिंह - पृ० 102
13- रैदास ग्रंथावली – डॉ० जगदीश शरण ,पृ० 110 , पद- 188
14- वही –पृ० 95 , पद- 157
15- वही –पृ० 67 , पद-162
16- वही –पृ० 97,पद- 160
17- वही –पृ० 98 ,पद- 163
18- वही –पृ० 97,पद- 162
19- वही –पृ० 100 ,पद- 168
20- वही –पृ० 94 ,पद- 155

सहायक ग्रंथ सूची

1. सिद्ध-नाथ एवं प्रमुख हिन्दी संत- डॉ० प्रमिला झीबा
2. मध्यकालीन हिन्दी संत काव्य: दर्शन और मूल्यांकन- डॉ० आदित्य प्रचंडिया
3. निर्गुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका- डॉ० राम साजन पाण्डेय
4. संतों की सांस्कृतिक संसृति- डॉ० राम साजन पाण्डेय
5. निर्गुण काव्य प्रेरणा और प्रवृत्ति - डॉ० राम साजन पाण्डेय

डॉ० गीता पाण्डेय
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

और वह लौट आई

उसने ऑटो रिक्शा से सामान उतारा। ऑटो रिक्शा वाले को उसने पैसे दिए और अपने पिता के घर दरवाजे पर पहुँच गई। उसने घंटी का बटन दबाया। कुछ देर बाद उसकी मां ने दरवाजा खोला; रमा तेजी से सामान लेकर घर के अंदर आ गई। मां के चेहरे पर मुस्कुराहट के भाव आते-जाते सहम से गए। माँ ज्यादा देर तक शांत न रह सकी। वह बोली-" रमा तू इस समय?"

"हां मैं" रमा के स्वर में कुछ तीखापन झलक रहा था। आशंकाओं के अनिष्ट की कल्पना कर माँ ने आश्वस्त होने के लिए तुरंत पूछा-" रमा तू क्या दामाद से लड़कर आई है?"

"अरे बदतमीज मुझे धमका रहा था। मैं उसका साथ नहीं निभाना चाहती और माँ लड़कर नहीं सदा के लिए छोड़ कर आई हूं उसे।" रमा जोर से बोली।

"छोड़ आई सदा के लिए? प्रश्न भरी दृष्टि से वृद्धा माँ ने लाडली रमा से पूछा।"

"ऐसे ही कोई साथ छोड़ा जाता बेटी, तुमने दोनों ने स्वयं ही विवाह का निर्णय लिया था।"

"हाँ, अब कभी नहीं जाऊंगी वहाँ, बस मैंने यह ठान लिया है।" रमा यह कहकर सोफे पर बैठ गई। माँ ने दीवार का सहारा लिया, ऐसा लगा जैसे गिर पड़ेगी।

भीतर कमरे में चाय के प्याले के गिरने की आवाज आई। रमा के बूढ़े बाप के हाथ से प्याला छूट गया। माँ बेटी की बात सुनकर, अपने पैर की लकड़ी का सहारा लेकर रमा के सामने ड्राइंग रूम में आकर खड़े हो गए। अपने चश्मे के अंदर आंखों के पानी को पोंछते हुए बोले - "तू क्या कह रही है रमा?"

"हां मैं कह रही हूं कि मैंने जिससे विवाह किया था, उसे छोड़ आई हूँ ।" रमा ने किंचित दृढ़ता से कहा।

"पर हुआ क्या?" बूढ़े बाप ने पूछा ।

"होना क्या है, बस अब मुझे उसके साथ नहीं रहना है हुए यह मेरा आखिरी फैसला है।" रमा का स्वर और अधिक प्रखर हो गया । बेटी का स्वर सुन कर माँ एकदम अवाक रह गई। वहीं बूढ़े पिता को ऐसा लगा कि धरती पर धड़ाम से गिर पड़ेंगे।

रात्रि गहरा चली थी। अधिक बात ना कर बूढ़े पिता ने बिजली की बत्ती बुझा दी और वह अपने बिस्तर पर लेट गए। आंखों में नींद कहां?" उसकी आंखों के सामने अतीत बार-बार आ आकर गुजरने लगा। उसे याद आया जब रमा, आशीष को लेकर पहली बार, उसके पास आई तो आशीष कैसा भोला लग रहा था। वे सजग आँखों से होने वाले दामाद को भीतर तक देख लेना चाह रहा था।

उसने आशीष से पूछा-" बेटा तुम रमा को कितना जानते हो?"

आशीष इस प्रश्न से किंचित सकुचाया फिर बोला-" मैं रमा से बहुत प्यार करता हूँ ।"

इस उत्तर को सुन बूढ़े पिता ने बड़ी दृढ़ता से पूछा-" प्यार का मतलब समझते हो बेटा?"

उसका उत्तर अभी आया नहीं कि बीच में ही रमा बोल पड़ी-" पिताजी हम दोनों का फैसला अटल है, अब किसी अन्य प्रश्न की गुंजाइश नहीं है।"

बेटी रमा की ओर मुखातिब होते हुए पिता ने कहा-" प्रेम, विश्वास, सहनशीलता, समर्पण और त्याग को अभी तुमने केवल किताबों में पढ़ा है और सिर्फ सुना है, व्यवहार में उतारा नहीं है। अभी तो तुम्हारा प्यार बोल रहा है, वह केवल ऐंद्रियता का तीव्र भावावेग औरआकर्षण है,जिसमें जीवनानुभव का यथार्थ नहीं है। जीवन में प्यार को अर्थ देने के लिए कुछ समर्पण, त्याग और सहिष्णुता की जरूरत होती है। जिसका अभाव में नई पीढ़ी में बहुत देखता हूँ । और अभी जो कुछ तुम बोल रहे हो, उसका आधार माता-पिता का कमाया हुआ धन है।"

रमा और आशीष दोनों ने पिता की बात को निर्मूल्य समझ कर, प्रगतिशील और आधुनिक नई सोच के नए -नए विचारों एवं इरादों को व्यक्त किया। एक दूसरे के साथ जीने मरने की उन्होंने दृढ़ता ने बूढ़े पिता को

उनका विवाह करने के लिए विवश कर दिया । किंतु विवाह के पश्चात साल भर की अवधि में ही दोनों के भीतर के वैषम्य उभरे और दोनों के बीच ये वैषम्य तीव्रता लेकर निरंतर उभरते चले गए।

बूढ़े पिता ने दामाद और पुत्री के बीच टकराव टालने के लिए, सभी प्रयास किए थे।

लेकिन अपनी स्वच्छंद व जिद्दी लड़की रमा की असहिष्णु प्रवृत्ति और आशीष की अविवेकशीलता के कारण वे सफल नहीं हो सके । बूढ़े पिता ने रमा के सास - ससुर के सामने रमा की गलतियों के लिए कई बार क्षमा याचना भी की थी । रमा की माँ ने बीच-बीच में कई मूल्यवान उपहार भी भेजें किंतु कुछ ठीक नहीं हो सका और अंततः रमा अपने मायके लौट आई।

रमा ने अपने लिए स्वयं लड़का चुना और उसे खूब चाहती भी थी और वह भी विवाह के लिए तैयार था। दोनों में कब परिचय हुआ और कब प्रीत की डोर हिलोरे लेने लगी इसका पता माता-पिता को तभी चला जब रमा ने विवाह की बात कही। रमा के पिता ने उसके विवाह में चिर संचित सकल राशि खर्च कर दी। इस विवाह में जो परिवार जन रूठे थे उन सब को रमा के पिता ने मनाया। उन्होंने अपनी सामर्थ्य से अधिक सभी प्रकार की सुविधाजनक चीजों से रमा की झोली भर दी । रमा की डोली विदा हुई किंतु रमा अपने ससुराल से इस प्रकार लौटेगी उनके लिए यह अप्रत्याशित था। इस घटना ने बूढ़े माता-पिता को और भी अधिक बूढ़ा बना दिया। कई महीने तक रमा की माँ घर से बाहर ना निकली। प्रतिदिन महिलाओं की टोली का नेतृत्व देने वाली रमा की माँ अब मूक हो, जैसे उसका कंठ ही सूख गया हो। वृद्ध पिता ने मंदिर के नियमित सत्संग की राह अपना ली किंतु मन में अशांति बनी रही। क्या होगा रमा का?" बेटी का युवा शरीर और समाज की तकती बलात्कारी नजरें दोनों उसके बीमार और बूढ़े शरीर को भीतर ही भीतर कँपकँपी पैदा कर रही थी। रमा के विवाह में उसकी सकल जमा पूंजी खर्च हो गई थी। कोर्ट पुलिस तक जाने के लिए पैर शक्ति खो चुके थे। दो -चार रिश्तेदार, संबंधियों को कहा तो कुछ औपचारिकता का निर्वहन कर वह भी शांत बैठ गए।

इस प्रकार दिन बीतने लगे लेकिन वृद्ध दंपत्ति की उदासीनता कम नहीं हुई। अपनी एकमात्र पुत्री को जिसे बेटा समझकर ही उन्होंने पाला था अब उसकी समस्या विकराल बन गई। अब बूढ़ा पिता क्या करे?" उसने अगर रमा की माँ की बात मानी होती तो आज यह दिन देखने को नहीं मिलते। आखिर यह बच्चे प्रेम को क्या समझते हैं?"

वैवाहिक जीवन में छोटी -मोटी तकरार तो हो ही जाती है। आखिर किस का जीवन अंत तक समरस रहा है?" इन्हें कुछ भी बर्दाश्त नहीं। इनके लिए विवाह गुड्डे गुड़ियों का खेल है, जब चाहा कर लिया और जब चाहा तोड़ दिया।

रमा का बूढ़ा पिता अपनी स्मृति में बहा जा रहा था। शाम ढलते पार्क से घर पहुँचा, तो अपनी सत्तर वर्षीय वृद्ध पत्नी को सजी-धजी देखकर अचंभित हुआ। उत्सुकता वश पूछा, तो करवा चौथ की व्रत की तैयारी में प्रसन्नता से जुटी रमा की माँ ने हर्षोउल्लास की अभिव्यक्ति की।

"रमा की माँ, तू सुबह तो मुझसे लड़ रही थी कि रमा के लिए केवल तुम ही जिम्मेदार हो, मेरी कमियां निकाल रही थी" बूढ़ा बोला।

"लड़ूंगी तो मैं अगले जन्म में भी। तुमसे नहीं लड़ूंगी तो किस से लड़ूंगी।"

रमा की माँ ने मुस्कान बिखेरते हुए कहा और वृद्ध उसके मुस्कान के रस में नहा गया। वह दांपत्य के अतीत की अनगिनत स्मृतियों में डूब गया।

डॉ. अमिता
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

हिन्दी उपन्यासों में वैश्वीकरण का प्रभाव

आज सूचना और संचार के क्षेत्र में एक क्रांति हुई है, जो वैश्विक संसार निर्मित हुआ है उससे उपन्यास का कथा फलक बहुत व्यापक हुआ है। वस्तुतः बाजारवाद, उपभोक्तावाद वैश्वीकरण की अनिवार्य परिणति है। जिसने हमारे जीवन पद्धति और मूल्यों में परिवर्तन पैदा कर दिए हैं। वैश्वीकरण के फलस्वरूप उपभोक्तावादी संस्कृति, बाजार का वर्चस्व, पैसे की बढ़ती लालसा, इंसान का मशीनीकरण, सामाजिक संबधों में बिखराव, बढ़ता तनाव व अवसाद, स्वप्नों को प्राप्त करने की मृग-तृष्णा, जीवन में विज्ञापन, टी.वी. मीडिया के बढ़ते वर्चस्व, पश्चिमीकरण के अंधानुकरण स्वरूप समाज में फैलती अपसंस्कृति, पर्यावरणीय असंतुलन, आर्थिक विषमता, अशान्ति, आतंकवाद आदि मुद्दों को बड़ी चिंता व सरोकार से उपन्यासों का कथ्य बनाया गया है।

उपन्यास जीवन के निकट से जुड़ी विधा है। अतः इसमें समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है। उपन्यासों में वैश्वीकरण के प्रभावों को कथात्मक धरातल पर दिखाने का सराहनीय प्रयास हुआ है। विज्ञान और तकनीकी प्रसार, विश्व व्यापार नीति और सिमटती वैश्विक सीमाओं के फलस्वरूप उपजे बाजारीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति ने हर शहर, हर गाँव को, प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के प्रभावों को उपन्यासों में दिखाया गया है।

भीष्म साहनी के उपन्यास 'मय्यादास की माड़ी' में भी वैश्वीकरण की प्रक्रिया को ऐतिहासिक कालक्रम में रखकर देखा गया है। इस उपन्यास में भीष्म साहनी औपनिवेशिक भारत में वैश्वीकरण का चेहरा दिखाते हैं।

वैश्वीकरण एक प्रकार का नव-साम्राज्यवाद ही है जिसे अपने माल की खपत के लिए विश्व-भर के संभावनाशील बाजार की तलाश है। और इस आर्थिक पक्ष के साथ सांस्कृतिक पक्ष भी जुड़ा हुआ है। पहले अपने उपनिवेशों में अपनी संस्कृति को उच्च बताकर उसे फैलाना तथा इसे अपने कर्त्तव्य की शक्ल देनी और उनका आर्थिक दोहन करना।

बीसवीं शती के अन्तिम दो दशकों तक अमेरिकी शक्ति का वर्चस्व इतना बढ़ चुका था कि समस्त विश्व अमेरिकीकरण की गिरफ्त में पूरी तरह आ चुका है। खुली अर्थव्यवस्था के नारे ने अमेरिका के गिरफ्त में शेष विश्व को ला दिया है। पहले हिंदी उपन्यास ने ब्रिटेन की साम्राज्यवादी संस्कृति को छीना और अब अमेरिकी अपसंस्कृति का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया है। इस समय हमारे देश में अमेरिका जाने, वहाँ की संस्कृति को अपनाने, यूरोप के अन्य देशों में बसने की प्रवृत्ति बढ़ी है और इस कारण हमारे जीवन-व्यवहार, जीवन पद्धति में परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। इस पश्चिमीकरण की प्रवृत्ति का चित्रण हिंदी उपन्यासकारों ने कथात्मक धरातल पर किया है।

ऊषा प्रियवंदा का उपन्यास 'अन्तर्वंशी' अमेरिका में बसे भारतीयों के समाज की पहचान कराता है। अमेरिका में रह रहे भारतीयों की जीवन शैली, रिश्तों और पूरी एक पीढ़ी की पीड़ा कथा है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय अपना देश छोड़ सपनों के नगर अमेरिका जाने की प्रबल चाहत रखते हैं। वे मानते हैं कि अमेरिका उनके सपनों को हकीकत में बदल सकता है। वहाँ जाकर अपने सपनों को पूरा करने की हसरत और उन स्वप्नों के पूरा न होने की कसक की बुनावट इस उपन्यास का कथ्य है। इस उपन्यास में नए सिरे से अमेरिका में बसे भारतीय समाज के अंतरबाह्य का गहरा परिचय दिया गया है। बनारस की सीधी सादी 'चुनमुन' का वाना बनने का सफर एक छोटे कस्बे की लड़की का दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश की नागरिक में ढलने का रूपांतरण भूमंडलीय परिवेश में व्यक्ति के धीरे-धीरे पूरी तरह ढल जाने का बोध कराता है। यहाँ का जीवनमंत्र

है 'खूब कमाओं, खूब उड़ाओ' यह एक ऐसा समय है - "जहाँ अधिक से अधिक मेहनत करके अधिक से अधिक कमाना जीवनमंत्र है।"[1] यह मंत्र वैश्वीकरण का एक प्रमुख प्रकल्प है। यही सोच भोग को बढ़ावा दे रही है।

रवीन्द्र वर्मा 'दस बरस का भँवर' में उन लोगों की बात भी करते हैं जो सबकुछ पाने की लालसा में अमेरिका जाकर बस गए हैं। झांसी से अमेरिका जाकर बसे मदन जैसे लोग इसी प्रकार के हैं। मदन अपने देश के सफलतम युवक में से था जो अमेरिका जाकर बसता है। अमेरिका की धरती पर उसका अपना घर था, जहाँ दो गाड़ियाँ खड़ी थीं। वह दूसरे अप्रवासी भारतीय युवकों से एक कदम आगे था। उसने एक अमेरिकी लड़की से शादी की, जिसका नाम जेन था"[2]' मदन जैसे युवक जो झांसी से अमेरिका जाकर बस जाते हैं, देश के अन्य युवकों के लिए सफलतम व्यक्ति का उदाहरण बन जाते हैं और अन्य नौजवान भी अपना देश छोड़कर उसकी तरह सफल होने के लिए अमेरिका जाने का ख्वाब पालने लगते हैं और जब वे किसी भी तरह अमेरिका जाने में सफल नहीं हो पाते तो अवसाद व निराशा के शिकार हो जाते हैं। सफलता और सुख का पर्याय अमेरिका मानने की मानसिकता किसी भी देश या समाज की युवा पीढ़ी के लिए कदाचित शुभ संकेत नहीं है।

प्रभा खेतान अपने उपन्यास 'आओ पेपे घर चलें' में वैश्वीकरण के चलते भारतीयों में अमेरिका जा बसने और उनकी पीड़ा का वर्णन करती हैं। आर्थिक समृद्धि के बावजूद भी उनका मन अमेरिका में नहीं लगता। वे बार-बार भारत लौटना चाहते हैं परन्तु आज का भूमंडलीकृत परिवेश उन्हें ऐसा नहीं करने देता। न चाहते हुए भी वे अमेरिका में रहने को मजबूर हैं क्योंकि ये देश उनके सपनों को पूरा करने की कीमत भी वसूलता है। "दिल बिल्कुल उचटा हुआ था। यहाँ घर से दूर रात-दिन की मेहनत ऐसा लग रहा था, मानों किसी ने जड़ से उखाड़कर फेंक दिया है। मन रोने का कर रहा था।"[3] यहाँ व्यस्तता इतनी अधिक है कि व्यक्ति के पास रोटी खाने का भी समय नहीं है। रात-दिन बस भागमभाग वाली जिंदगी। कैसी बिडम्बना है इतनी मेहनत से जो रोटी कमाई है उसे खाने का ही समय नहीं, धन-वैभव है परन्तु सुखशांति छिन चुकी है।

वैश्वीकरण पूँजी के असमान वितरण पर टिका है। इसमें अमीर और अमीर तथा गरीब और अधिक गरीब होता जा रहा है। यही बात देशों के संबंध में भी लागू होती है। यदि एक वर्ग बहुत समृद्ध हो रहा है तो बहुसंख्यक वर्ग और गरीब होता जा रहा है। 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में गुरु का यह संवाद वैश्वीकरण के इस सच को दिखाता है- "गरीबी, गंदगी, गरमी सब कुछ बढ़ रहा है और साथ ही अमीरी, गाड़ियाँ, नए होटल और केसिनों भी बढ़ रहे हैं।"[4] यह सच्चाई है जहाँ देश में अमीरों का प्रतिशत बढ़ रहा है वहाँ गरीबी कई गुना बढ़ रही है। यही कारण है कि उपन्यास का पात्र के.वी. इसे 'अर्थपिशाची' व्यवस्था मानता है।

'कलि-कथा: वाया बाइपास' में लेखिका एन. जी.ओ. संस्थानों की कलई खोलती है जो यू.एन.ओ., यूनेस्को आदि से देश की गरीबी मिटाने के लिए विभिन्न प्रकार के अनुदान लेती हैं किंतु गरीबी मिटाने के लिए बाहर से आए एक रूपए में अस्सी पैसे ये संस्थाएँ खुद अपने ऊपर ही खर्च कर लेती हैं।"[5] इसी उपन्यास के किशोर बाबू की पत्नी उनके द्वारा एकत्र अखबारों की कतरने देखती है जिसमें एकत्र कतरने देश और दुनिया में वैश्वीकरण के फलस्वरूप बढ़ती असमानता को उजागर करती हैं। एक दूसरे लिफाफे में बोसानिया के युद्ध, इराक-ईरान युद्ध, रूस में पाव- रोटी के लिए लंबी लाइन, इथोपिया के भूखे मरते बच्चों के चित्र उन्होंने डाल रखे हैं। तीसरे लिफाफे में बंगलूर की विश्व सुंदरी प्रतियोगिता, माइकल जैक्सन, देवराला सती के मामले में अभियुक्तों के दोषमुक्त होकर छूटने की सूचनाएँ इक्ट्ठी हैं।"[6] वस्तुतः यह अखबारों की कतरनें नहीं वरन् वैश्वीकरण के फलस्वरूप सत्ता के निर्मम चेहरे को बयां करता दस्तावेज है।

लेखिका बताती है कि वैश्वीकरण के फलस्वरूप भविष्य में कैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। जब तीसरा विश्व युद्ध तो नहीं होगा परन्तु हालात उससे भी बद्तर हो जाएंगे। उस भयावह समय की फंतासी बुनती लेखिका कल्पना करती है-"अचानक संसार में प्रकृति के पाँचों तत्त्व मिट्टी, जल, आग और हवा गड़बड़ा गए। और इसका प्रभाव सबसे पहले दुनिया के सबसे ताकतवर देश में दिखाई पड़ा। जब तक उस देश की सरकार कदम

उठाती कि दुनिया के दूसरे देशों को उसके पेड़-पौधे रहित होने का समाचार न मिले तब तक सारे देश इसके बारे में जान गए थे। परन्तु सारे देशों ने अपना-अपना अनाज तालों में बंद कर लिया ताकि वे भूखों न मर जाएँ। एक किलों सोने के बाद एक किलो गेहूँ तक देने को कोई देश तैयार न था।"[7] स्पष्ट है बढ़ती असमानता तथा पर्यावरणीय नुकसान के कारण भविष्य में यह स्थिति पैदा होने की लेखिका एक प्रकार से भविष्यवाणी करती है। वैश्वीकरण के बढ़ते प्रसार के कारण यह भविष्यवाणी सत्य भी हो सकती है। यह एक प्रकार से खतरे की घंटी है जो सभी को आगाह कर रही है।

वैश्वीकरण के फलस्वरूप समाज में अवसाद और तनाव का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। उपन्यासों में इस समस्या को भी उठाया गया है कि वैश्वीकरण के कारण यदि समृद्धि आ रही है तो वह नए तनावों तथा अवसाद का कारण भी है। रवीन्द्र वर्मा 'दस बरस का भँवर' में रतन के द्वारा उस नौजवान का खाका खींचते है जो आमिर खान और अंबानी से प्रभावित है। जल्द से जल्द अमीर बनना चाहता है। उसका मानना है कि जब गाड़ियों में पेट्रोल डालने वाला नौजवान अंबानी हो सकता है तो तू करोड़पति क्यों नहीं हो सकता है? हाँ इसके लिए अपना सब कुछ दाँव पर लगाना पड़ेगा।"8 परन्तु वास्तव में ऐसा संभव नहीं होता है। ऐसी स्थिति में जुआ, लॉटरी जैसे अपराधों द्वारा शार्टकट का प्रयास उन्हें अपराधी बना देता है। ऐसी स्थिति में राजन अंबानी या आमिर खान तो क्या स्वयं राजन भी नहीं रह पाता और अवसादग्रस्त होना उसकी नियति बन जाता है। उपन्यास में डॉ. पांडे ठीक ही कहते हैं- "हम जिस समय में जी रहे हैं, उसमें शिजोफेनिया का अन्देशा और भी ज्यादा है।"[9]

रजनी गुप्त अपने उपन्यास 'एक न एक दिन' में नई पीढ़ी के बढ़ते तनावों को रेखांकित करती है। वैश्वीकरण के फलस्वरूप कारपोरेट सैक्टर में युवाओं को ऊंचे पैकेज दिए जाते हैं परन्तु उनके जीवन का मशीनीकरण भी कर दिया जाता है। कम उम्र में, कम समय में ज्यादा कमाने के बाद भी वे तनावग्रस्त हैं। पैसे कमाने की अंधी दौड़ में वे मशीन बनकर रह गए हैं- "कोई नहीं समझना चाहता हमारे तनावों को? ओफ! कितनी भगदड़ मची रहती है हमारे अंदर-बाहर?" कभी-कभी लगता-मशीन में और हममें क्या फर्क रह गया है।"[10] इस पीढ़ी के सभी लोग 'महत्त्वाकांक्षाओं के भँवर जाल में' फंसे हैं जिसकी कोई हद कभी भी नहीं हो सकती।

"आओ पेपे घर चलें' में सोनिया प्रभा को विदेशों में रहते लोगों के तनावों से, संघर्षों से परिचित कराती कहती है-"यहाँ न्यूयार्क में अमेरिका के हर कोने से लोग आते हैं नाम, यश और पैसा कमाने, यहाँ की जिंदगी में संघर्ष केवल संघर्ष है। दिन महीने हो जाते हैं और महीने वर्ष, और बीतते हुए वर्षों के साथ हम झरने लगते हैं, मगर सफलता की भाग्यलक्ष्मी किसी-किसी के सिर पर हाथ रखती है।"[11] स्पष्ट है कि अमेरिकी समाज में तनाव कम नहीं है। इसलिए ही मरील प्रभा से कहती है "दुनिया को झेलने के लिए लौहे का कवच पहनना होगा।"[12]

'अन्तर्वंशी' की बाना भी अमेरिका में रहती है और अब पूरी तरह से वहाँ के रंग में रंग चुकी है। अमेरिकी संस्कृति में रहकर यही बाना वाइन भी लेती है और क्रिस्टीन के साथ समलिंगी संबंध भी बनाती है बेशक यह उसका पहला और अंतिम अनुभव होता है। 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा भी हर्ष से विवाह पूर्व शारीरिक संबंध बनाती है, बिना विवाह किए उसके बच्चे की माँ बनती है और बड़े ही गर्व से अपने अविवाहित मातृत्व की घोषणा करती है। इस पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से भारतीय जीवन मूल्य का लगातार होता क्षरण भी इन उपन्यासों में देखने को मिलता है।

तमाम सुख सुविधाओं के बावजूद अकेलापन भी पश्चिमी सभ्यता ओर भौतिक समृद्धि की देन है यहाँ कोई किसी के सुख-दुख का भागीदार नहीं है| पेपे अपनी मालकिन की मृत्यु के बाद उसकी लाश के पास सात दिन तक अकेला बैठा रहता है। पास-पड़ोस का कोई व्यक्ति नहीं आता, ना मिलने के लिए और ना ही पूछताछ के लिए। यह है पश्चिमी सभ्यता इसमें पशु में तो मानवता दिखती है परन्तु मानव में ही मानवता का अभाव दृष्टिगोचर होता हैं। "आओ पेपे घर चले' में प्रभा को कैथी यहाँ के लोगों का उच्च महत्त्वाकांक्षाओं और उनसे उपजे तनावों

व अकेलेपन की परिणति के बारे में बताते हैं। यहाँ सुबह आदमी रॉकफेलर होने का सपना लेकर अपने साठवीं मंज़िल के ऑफिस में जाता है और शाम को दिवालिया होकर अपनी खिड़की से छलाँग लगा देता है।"[13]

आज सभी सुख-सुविधाओं की पूर्ति के लिए पति और पत्नी दोनों का कमाना आवश्यक हो गया है। इस कारण माता-पिता अपने बच्चों को क्रेच में छोड़ने को मजबूर हैं। कई बार दादा-दादी अथवा रिश्तेदारों के पास भी बच्चों को छोड़ना पड़ता है। ऐसी स्थिति में बच्चे अपनी माँ को पहचानते तक नहीं है यह बात न केवल पीड़ादायक है बल्कि डरावनी भी है। 'एक न एक दिन' उपन्यास में बच्चों के भविष्य को लेकर नीति की चिंता वाजिब है। "सोचकर डर लगता है कि आने वाले बच्चों का भविष्य क्या होगा? कैसा होगा? दिन-भर के छोड़े बच्चे कितने असुरक्षित महसूस नहीं करेंगे? बेशक खूब पैसा रहेगा मगर प्यार करने वाले माँ-बाप के पास वक्त ही नहीं है कि वे उनकी मनुहार, लाड़, प्यार, गुस्सा और शिकायतों को सुन सकें। कितना कुंठित बचपन बीतेगा उनका? इसका अहसास है किसी को।"[14] वस्तुतः यह प्रश्न केवल नीति के ही नहीं हैं वरन् लेखिका ही आने वाले भविष्य के लिए यह प्रश्न समाज से कर रही है। इस भूमंडलीय समय का भयावह प्रश्न है जो समाज को आक्रांत कर रहा है।

आओ पेपे घर चले में तो लेखिका दिखाती है कि विदेशों में तो बच्चों के लालन-पालन की जिम्मेदारी से भी बचने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। लेखिका कैथरिन के विषय में बताती है जिसकी आयु तीस-बत्तीस वर्ष है परन्तु वह बच्चों को जन्म देना ही नहीं चाहती। "वह अपने में मग्न। बच्चा नहीं चाहिए। अपने आपकी बच्चे के लिए आहुति हो जाती है, मुझसे बच्चा नहीं सँभलेगा। बेबी सीटर पर पालने से अच्छा है, पैदा मत करो।"[15] पश्चिम में संतान उत्पन्न न करने की प्रवृत्ति उभर रही है और इसका प्रभाव हमारे देश में भी पड़ रहा है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया का हिस्सा बनना आज सभी राष्ट्रों व लोगों के लिए अपरिहार्य हो गया है क्योंकि कोई भी विकास की दौड़ में पिछड़ना नहीं चाहता क्योंकि जो पीछे रह जाएंगे उन्हें शक्तिशाली देशों द्वारा रौंद दिया जाएगा और 'पिछड़े' बनकर कोई भी राष्ट्र कमजोर अशक्त नहीं रहना चाहता, अपने-अपने राम' उपन्यास में भगवान सिंह विकास की इसी अनिवार्य प्रक्रिया की बात करते हैं। जाबालि एवं वाल्मीकि संवाद में इसी भूमंडलीय समय की बात हो रही है। "उन्नति और समृद्धि के नए रास्ते खुल जाने पर जो लोग उन पर नहीं चल पाते, वे पिछड़ जाते हैं। इससे उनकी शक्ति कम हो जाती है। जो उन पर आगे बढ़ते हैं वे अधिक संगठित और शक्तिशाली हो जाते हैं। फिर वे पिछड़े, अशक्त और असंगठित लोंगों की अपनी संपदा को जब जी में आता है छीन लेते हैं।"[16]

उपभोक्तावादी संस्कृति बाजार में आने वाली फैशनेबुल चीजों को खरीदने भर का नाम ही नहीं हैं बल्कि यह एक विशिष्ट व्यवहार संस्कृति भी है। आर्थिक गतिविधि होने के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का भी नाम है। इसका चिंतन सांस्कृतिक विविधता की जगह एकरूपता का समर्थक है। "कोक, पेप्सी, मैकडोनल्ड्स, हॉलीवुड फिल्में, अमेरिकी चैनल अमेरिका के सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के प्रतिनिधि रूप हैं, जिन्हें आज दुनिया के हर छोटे- बड़े देश, हर नगर और कस्बे में आसानी से पाया जा सकता है।"[17] जवरीमल्ल पारख का मानना है कि यह केवल बाजार पर नियत्रंण का मसला नहीं है। यह दिमागों पर नियंत्रण का मसला भी है।

यह प्रक्रिया जिस संस्कृति को दुनिया भर में समान रूप में देती है, वह एक जैसी जीवन पद्धति है। यह कोई नहीं देखता कि अमुक व्यक्ति को इस बात की आवश्यकता है या नहीं; क्योंकि समाज के लिए एक तरह की वस्तुएँ जीवन पद्धति बन गई है। लोग इसका उपभोग प्रारम्भ कर देते हैं। यह आवश्यक नहीं की उपयोग की बात को उपभोक्ता काम में लेते ही हों। उपभोग करना एक ऐतिहासिक तथ्य बन जाता है और तब यह एक सार्वभौमिक आदत बन जाती है। उपभोक्तावाद मनुष्य की ऐन्द्रिक इच्छाओं का परिणाम है। पश्चिम की भोगवादी तथा ऐन्द्रिकता प्रधान जीवन शैली अमीरों के साथ-साथ गरीबों में भी लोकप्रिय होने लगी है। गरीब तबके का व्यक्ति आर्थिक और सामाजिक विषमताओं के विरूद्ध लड़ने के बजाय उपभोक्तावादी चकाचौंध में स्वयं को भुला देता

है। अपनी इच्छित वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग करने के लिए, उसमें सक्षम होने के लिए, लोग किसी न किसी प्रकार अपेक्षित क्रय शक्ति प्राप्त करने की कोशिशों में लगें हुए हैं और इसे प्राप्त करने के लिए वे नैतिक- अनैतिक कोई भी रास्ता अपनाने को तैयार रहते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि चोरी, डकैती, तस्करी, घूसखोरी और ब्लैकमेल के फैलाव में उपभोक्तावाद का हाथ कम नहीं है। उपभोक्तावाद सुख कम देता है पर सुखी होने के सपने ज्यादा दिखाता है।

उपभोक्तावाद ने रचनात्मक संभावनाओं पर भी आघात किया है। आज कला, साहित्य, संस्कृति पर भी उपभोक्तावाद का प्रभाव पड़ रहा है। "उपभोक्तावाद ने मनुष्य की अन्य रचनात्मक संभावनाओं को समाप्त करके उसे केवल उपभोक्ता बना दिया है और जीवन को संचालित करने वाली प्रत्येक चीज को वस्तु में परिवर्तित कर दिया है।"[18]

भौतिक संसाधनों के उपभोग करने की लालसा को उत्तेजित और आकर्षित करके उसकी गाढ़ी संचित कमाई को उससे कैसे खींचा जा सकता है यही कमाल है उपभोक्तावादी संस्कृति का। इस उपन्यास में किशोर बाबू अपने पुत्र द्वारा नई मँहगी गाड़ी लाने पर उससे पूछते हैं कि इतना रुपया उसके पास कहाँ से आया? तो वह उत्तर देता है- "पापा, रूपये किसी से माँगने नहीं पड़े। आजकल सौ प्रतिशत फाइनेन्स पर गाड़ी मिलती है। बस किस्तों में रकम चुका देंगें।"[19] यह जवाब उपभोक्तावादी संस्कृति की फैलती जड़ों का सबूत है। किशोर बाबू की चिंता और पीड़ा सही है कि तो तुमने भविष्य के रूपये आज खर्च कर दिये हैं- "यानी वो रूपये जो आगे कमाओगे।"[20] उपभोक्तावादी संस्कृति ऐसे लोगों को वस्तुओं के प्रति उत्तेजित कर उकसाती है यदि पूरा पैसा नहीं है तो किस्तों में देते रहे। और लोग अपनी आमदनी से किस्तों में सूद के साथ पैसा भरते रहते हैं।

उपभोग और मांग केवल आय और कीमत संरचना से ही पूरी तरह प्रभावित नहीं होती बल्कि शान-शौकत तथा अहम् की भावना से भी प्रभावित होती है। किशोर बाबू का पुत्र भी पिता के समझाने पर अपने अहम् और शान- शौकत दिखाने के लिए अपने तर्क देता है- "देखते नहीं कितने लोग कैसे-कैसे किसलिए आत्महत्या कर रहे हैं। कोई लड़की इसलिए जहर खा लेती है क्योंकि उसका बाप उसे माधुरी दीक्षित वाली घाघरा-चोली लाके नहीं देता है और अपने इर्द-गिर्द क्या हो रहा है उसकी खबर है आपको? अभी मेरे दोस्त अरुण की पत्नी ने आत्महत्या कर ली क्योंकि अरुण उसे अपनी शादी की सालगिरह पर 'ताज बंगाल' नहीं ले गया था सेलीब्रेट करने और कांता भाभी का तो सबको मालूम ही है- "नये फर्नीचर और नये गहनों के सेट का दाम दिया नहीं भैयाजी ने। इसलिए ऐन दिवाली के पहले जहर खा लिया उन्होंने। दो दीदियों के घर में बड़ी गाड़ी है। हमारा मन नहीं होता क्या? क्या आप चाहते हैं कि जो भैयाजी के साथ हुआ मेरे साथ भी वही हो।"[21] यही सब बाते है जो उपभोग के लिए ऋण लेने की प्रवृत्ति को जन्म और बढ़ावा देती है। उपभोग की आदत ने मानवता व मानवीय मूल्यों को कुंठित कर दिया है।

वैश्वीकरण के फलस्वरूप जो एक विश्व व्यवस्था बन रही है उसमें विकासशील देशों के इतिहास और संस्कृति के लिए कोई जगह नहीं है, क्योंकि जब तक यह देश खुद की संस्कृति और इतिहास से मुक्त नहीं किए जाएंगे तब तक इस नई व्यवस्था को स्वीकार करने की स्थिति में नहीं आ पाएंगे। यानी स्वयं को नई विश्व व्यवस्था के अनुरूप बनाने की शर्त अपनी पहचान को नष्ट करना है। यह सारी दुनिया को एक साँचे में ढालने की साजिश है। 'कलि-कथा: वाया बाइपास' में किशोर बाबू की बातों से लेखिका इस षडंयत्र की ओर संकेत करती है "तो क्या एक दुनिया ऐसी बनानी होगी जहाँ एक जैसे आदमी ही एक साथ रहें- एक जैसे रंग वाले, एक जैसे धर्म वाले, एक जैसी भाषा वाले जैसे- बद्रिका चिड़ियों को अलग पिंजरे में रखा जाता है वरना वे दूसरी चिड़ियों को मार डालती है या खुद मर जाती है।"[22]

'एक न एक दिन' उपन्यास में लेखिका ने दिखाया है कि किसी भी तरह तरीके से धन कमाने के लिए लड़कियाँ बार बाला, और कॉलगर्ल तक बन रही हैं। क्योंकि उन्हें ब्रांडिड वस्त्र, सेलफोन और पैसा चाहिए। यह

उपभोक्तावादी समय युवाओं को अनवरत भोग की लत लगाकर उनके विवेक का हरण कर रहा है। आज मानो लोगों के जीवन का एक ही मंत्र रह गया है "अपना सपना मनी-मनी। आज जीने का एक ही फार्मूला है- फाइनेंस, 'फन एंड फन'।"[23]

बाजार की सत्ता के समक्ष राजनैतिक सत्ता कम प्रभावशाली होने लगी है। सरकार लोगों तक पीने का स्वच्छ पानी उपलब्ध करवाने में असफल भले रही हो परन्तु कोक, पेप्सी के निर्माताओं के उत्पाद अबाध गति से सभी जगह पहुँच पाने में पूर्णतः सफल रही है 'कितने पाकिस्तान' में अर्दली अदीब से कहता है- "आज भी इंडिया के हजारों गाँवों में जहाँ पीने का साफ पानी नहीं पहुँच पाया है, वहाँ पेप्सी और कोक पहुँच चुका है।"[24] "इसी प्रकार 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में बाजारवाद का असर कादम्बरी की बाड़मेर से इस रिपोर्ट में भी स्पष्ट देखा जा सकता है। इस देश को ओबिचुअरी लिख रही हूँ। तीन साल से लगातार सूखा पड़ रहा है और तीन साल से सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी है। कोक, पेप्सी और बिसलेरी की कंपनियाँ हजारों गैलन माल ट्रकों में यहाँ भेज सकते हैं, सरकार पानी नहीं भेज सकती। पर कोक, पेप्सी का स्वाद गाय बैल को तो है नहीं और न इनके मालिकों के पास इन्हें खरीदकर पीने के लिए पैसा है।"[25] बाजार की प्रभुता का उसकी सत्ता का इससे बेहतर उदाहरण क्या होगा? आज सत्ता एक प्रकार से विश्व पूंजीवाद के हाथ में चली गयी है। बाजार की सत्ता का उदय हो रहा है जो अपने को राजनैतिक सत्ता के समानांतर खड़ा करने में सफल रही है। बाजार और साम्राज्य का संबंध बहुत निकट का है। बाजार साम्राज्य के लिए और साम्राज्य बाजार के लिए है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में अदीब इन दोनों के संबंध में ठीक ही कहता है- "बाजारों के लिए ही बनते हैं साम्राज्य! और साम्राज्यों को जीवित रखने के लिए ही बनाएँ जाते हैं बाजार! साम्राज्यों की नाभि बाजार से जुड़ी है साम्राज्यों का रूप बदल सकते हैं... वे प्रजातांत्रिक आर्थिक साम्राज्यों का रुप ले सकते हैं परन्तु, इन पूंजीवादी प्रजातंत्रों को जीने के लिए मुनाफे के बाजारों की जरुरत है.. बाजार! बाजार!! बाजार!!! यही है औद्योगिक क्रांति का सतत् जीवित रहने की मजबूरी का सिद्धान्त। यही है पूँजीवाद। इसी का दूसरा नाम है साम्राज्यवाद। तीसरा नाम है उपनिवेशवाद। और आज दस्तक देती हुई नई सदी में इसका नाम है - बाजारवाद।"[26]

वैश्वीकरण से पैदा हुए आधुनिक बाजार के माध्यम से स्त्री के प्रति अपना वस्तुपरक दृष्टिकोण, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उपयोगितापरक दृष्टि पितृसत्ता ने अपना रखी है। बाजार स्त्री को सेक्स के खिलोने के तौर पर प्रस्तुत करता है तो दूसरी ओर परंपरागत मजदूर के तौर पर जिस पर काम का बोझ जन्म सें उसकी नियति बनकर आता है। स्त्री को एक तो निजी क्षेत्र में पुरुष के समान वेतन मिलता और बाहर काम करने के बावजूद घर के अन्दर भी काम करना पड़ता है यानी दुगुना श्रम। नौकरी करने के बाद भी परम्परागत रूप से उसकी स्थिति वही है जो पहले थी। बाजार आज स्त्री को मुक्ति देता है तो परम्परा के नाम पर वापस ले भी लेता है। बाजार स्त्री को बोल्ड होने का आभास कराता है। पुरुष जगह बनाती स्त्री से भयभीत भी है। मनोचिकित्सक अरूणा बूटा का कहना है- "पुरुष सफल औरतों को सशंकित नजर से देखते हैं। वे सांस्कृतिक संकट के शिकार हैं। पुरुष एक खूबसूरत गुड़िया चाहता है, जो हर निर्णय में उस पर निर्भर करे। वह दिखाना चाहता है कि बागडोर उसी के हाथ में है।"[27]

वैश्वीकरण के दौर में पितृसत्ता आधुनिक होने का ढोंग कर रही है परन्तु अन्दर से आज भी पुरुष की मानसिकता में ज्यादा बदलाव नहीं आया है। बाजार के माध्यम से पितृसत्ता ने स्त्री की यौनता का खूब फायदा उठाया है उसे एक वस्तु की भांति प्रचारित किया जाता है। स्त्री की देह का प्रयोग बाजार में लोगों को लुभाने के लिए किया जाता है इससे बाजार की नीयत का पता चलता है।

समाज के सारे मजबूत मुकामों पर पुरुषों का ही राज है। बाजार ने स्त्री की आदर्शवादी छवि के साथ-साथ उसे एक मुक्त स्त्री के रूप में अपने मनोभावों को दिखाने की आजादी भी दी है। "वैश्वीकरण के मूलतः विनाशकारी मंत्र ने चाहते न चाहते स्त्रियों की अस्मिता का विकास भी थोड़ा सा कर डाला है।"[28] स्त्री बाजार के

माध्यम से उपभोग की दृष्टि से तैयार की जाती है, जिसके पैमाने परंपरा और आधुनिकता के बीच होते हैं, फैशन की लिपाई-पुताई और एक विशेष शारीरिक बनावट के साथ। स्त्री को सुंदर, कोमल जैसे उपमानों में सामित कर दिया है। उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते स्त्रियों पर पुरुषों का आधिपत्य बढ़ा ही है। खूबसूरती का ऐसा मानक गढ़ा जाता है कि सुबह से शाम तक विज्ञापनों के जरिए यही बताया जाता है कि कौन-सी क्रीम, पाउडर, लिपस्टिक, काजल, शैम्पू इस्तेमाल कर वे सुन्दर दिख सकती हैं। स्त्री के बुद्धि-विवेक की अपेक्षा उसकी देह को संवारने और उन्हें वहीं तक सीमित रखने का प्रयत्न किया जाता है।

अब इंसान को संसाधन माना जाने लगा है उसका भी दोहन वैसे ही किया जा रहा है, जैसे कुदरत के अन्य करिश्मों का। यह तरक्की है अथवा पतन सोचने का विषय है। बाजार का ही कमाल है कि आज स्त्री की कोख भी बिकाउ मानी जाने लगी है। पैसे की शक्ति से पुरुष सोचने लगा है कि वो औरत की कोख भी अन्य वस्तुओं की भाँति खरीद सकता है। 'आंवा' उपन्यास में नमिता के स्वाभाविक गर्भपात हो जाने पर संजय कनोई का यह संवाद- "जानती हो बाप बनने के लिये मैंने तुम्हारे ऊपर कितना खर्च किया? उस मामूली औरत अंजना वासवानी की औकात है कि तुम्हारे ऊपर पैसा पानी की तरह बहा सके। उसका जिम्मा सिर्फ इतना भर था कि वह मेरे पिता बनने में मेरी मदद करे और सौदे के मुताबिक अपना कमीशन खाये।"[29] उसकी बाजारू मानसिकता का उद्बोधक है। संजय कनोई नमिता से प्रेम का नाटक करता है और धन इसलिए खर्च करता है कि उसे नमिता की कोख से संतान प्राप्ति की इच्छा होती है।

'आंवा' की गौतमी यदि नमिता को स्त्री देह के तिलिस्म का रहस्य समझाती है तो 'एक जमीन अपनी' की अंकिता अपनी मॉडल सहेली नीता को विज्ञापन जगत में हो रहे स्त्री शोषण के नए आयामों के बारे में बताती है "अधिकार, आधुनिकता, समता और स्वतंत्रता के नाम पर पुरुषों द्वारा ही अखबारों, पत्रिकाओं, विज्ञापनों, फिर पास्टरों, स्लाइडस के माध्यम से स्त्री को सौपी जा रही है.....बड़ी चतुरता से काया-कल्प के बहाने जिंस को जिंस बनाए रखने का षड्यंत्र!... क्या यही स्त्री को चाहिए?... स्त्री अब भी इस्तेमाल हो रही है।"[30] अंकिता जब मॉडल को देखती है तो सोचने पर मजबूर हो जाती है- "लोगों की दृष्टि में आकर्षण का केंद्र या गिद्ध दृष्टियों के बीच मांस का टुकड़ा।"[31]

स्वयं प्रकाश का उपन्यास 'ईंधन', बाजारवाद और वैश्वीकरण के लिए ईंधन बन गए आदमी की व्यथा-कथा कहता है। प्रियवंदा के 'परछाईं नाच' में देश की बदलती आर्थिक तस्वीर में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का बोलबाला है। पूँजीपतियों ने समूची व्यवस्था को अपने अनुरूप बना रखा है। रवीन्द्र वर्मा के उपन्यास 'जवाहर नगर' में उपभोक्तावाद और बाजारीकरण के फलस्वरूप एक बस्ती-जवाहर नगर में आ रहे बदलाव की कथा है। उपभोक्तावाद ने लोगों में ऐसी इच्छाएँ, लालसाएँ पैदा कर दी हैं कि उन्हें पूरी करने के लिए वे किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। कामतानाथ का उपन्यास 'समुद्र तट पर खुलने वाली खिड़की', तीर्थ स्थानों में बढ़ती भौतिकता, बाजारीकरण तथा पूँजीवादी दबावों को उजागर करता है।

सुषमा जगमोहन का उपन्यास 'जिंदगी-ई-मेल', मध्यमवर्गीय परिवारों की असीमित महत्त्वाकांक्षा और भौतिकता के पीछे भागने से पैदा हुई परिस्थितियों का अंकन करता है। पति-पत्नी को जिंदगी ईमेल तक सिमट कर रह जाती है। कुसुम कुमार का उपन्यास 'पूर्वी द्वार' भी भौतिकता के पीछे भागते लोगों की कथा है, जिसमें सुखी घर पीछे छूट जाते हैं। इस उपन्यास में परिवारों में सेंध लगाती बाजारवादी मानसिकता, भौतिकवादी स्वार्थी प्रवृत्ति को दिखाया है। प्रकाश शुक्ल के उपन्यास 'आकाश अपने-अपने' में अधिक धन कमाने के लोभ में विदेश में जा बसने वाले लोगों के दुख-दर्द, तकलीफ को बयां किया गया है। इस प्रकार हिंदी के अनेक उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में वैश्वीकरण के विभिन्न प्रभावों, उपभोक्तावाद, मूल्य-संक्रमण, बाजारू मानसिकता, पैसों की अंधी दौड, बाजार की प्रभुता, और भारतीयों के पश्चिमीकरण पर विभिन्न रूपों में चिंता प्रकट कर अपना रचनात्मक आक्रोश व्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उषा प्रियवंदा- अंतर्वंशी, पृ0. 203, संस्करण 2000, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. रवीन्द्र वर्मा - दस बरस का भंवर, संस्करण 2007, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. प्रभा खेतान - आओ पेपे घर चले, संस्करण 1990, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. अलका सरावगी - एक ब्रेक के बाद, संस्करण 2008, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. अलका सरावगी - कलि कथाः वाया बाईपास, पृ. 189, पांचवा संस्करण 2011, आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा।
6. वही - पृ0, 110
7. वही - पृ0, 214
8. रवीन्द्र वर्मा - दस बरस का भंवर, पृ0. 80
9. वही - पृ0, 73
10. रजनी गुप्त - एक न एक दिन, पृ0.22
11. प्रभा खेतान - आओ पेपे घर चले, पृ0. 147
12. वही - पृ0.25
13. वही - पृ0.110
14. रजनी गुप्ता - एक न एक दिन पृ0. 325
15. प्रभा खेतान - आओ पेपे घर चले, पृ0.105
16. भगवान सिंह - अपने अपने राम, पृ0. 54
17. जबरीमल्ल पारख - सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, पृ0. 50 सम्पादक, रमेश उपाध्याय, संस्करण 2009 शब्दसंधान, प्रकाशन, नई दिल्ली।
18. सच्चिदानंद सिन्हा - उपभोक्ता संस्कृति का विकास, पृ0. 84 सम्पादक, रमेश उपाध्याय, संस्करण 2009 शब्दसंधान, प्रकाशन, नई दिल्ली।
19. अलका सरावगी - कली-कथा: वाया बाईपास, पृ0. 198
20. वही
21. वही - पृ0. 199
22. वही - पृ0. 60
23. रजनी गुप्त - एक न एक दिन, पृ0. 311
24. कमलेश्वर - कितने पाकिस्तान, पृ0. 291
25. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ0 44, संस्करण 2001, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
26. कमलेश्वर - कितने पाकिस्तान, पृ0. 291, चौदहवां संस्करण, 2010, राजपाल एंड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली।
27. राजेन्द्र यादव - हंस पत्रिका, पृ0 34, मार्च 2001
28. वही - पृ0. 97
29. चित्रा मुदगल - आंवा, पृ0 539, प्रथम संस्करण, 1999, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
30. चित्रा मुद्गल - एक जमीन अपनी, पृ0. 94, संस्करण 2010, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
31. वही - पृ0. 85

डॉ. रीता
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

खामोशी और तन्हाई

खामोशी और तन्हाई में
बैठे कुछ सोचती रहती हूं|
अपनों को खोजती रहती हूं
कुछ मीठी यादें याद आती हैं
चेहरे पर मुस्कान छोड़ जाती हैं|

जिंदगी के इस सफर में
कुछ खोते हैं, कुछ पाते हैं
अकेलेपन में ही तो खामोशियों को सुन पाते हैं|

कोई प्यार से पुकारे तो मन बहलता है
कोई मुस्कान दे तो दिल खिल उठता है
सिर्फ धूप और पानी से ही नहीं
प्यार और खुशी से भी एक फूल खिल उठता है|

पास रहकर भी बहुत दूर चले जाते हैं
कितना भी पुकारो पास नहीं आते हैं
जाने का गम तो छोड़ जाते हैं
पर जीने की सीख जरूर छोड़ जाते हैं|

समंदर की लहरों में कुछ गम पीछे छूट जाते हैं
रात के गहरे अंधेरे में कई चेहरे छुप जाते हैं
सूरज की किरणें नए रिश्ते साथ लाती हैं
खुलकर जीने का फलसफा सिखलाती हैं|

खुश रहकर जीना आसान हो जाता है
हंसती आंखों में गम छिप जाता है
प्यार से संजोए इन रिश्तों की माला में
अपना पूरा संसार नजर आता है|

डॉ. जसप्रीत कौर
सहायक प्रोफेसर, प्राणी विज्ञान विभाग

"मेरा भारत"

देखे देश कई
कोई मेरा वतन-सा नहीं
हरा-भरा देश मेरा
खेती है पेशा बड़ा
आदर्श संस्कृति का साया है
जिसमें मेरा महान देश पनप पाया है
दुश्मनों ने रौंधा कई बार
फिर भी धैर्य नहीं गवाया है।।
सस्कृति का हाथ पकड़े
आधुनिक सभ्यता को अपनाया है
जिसने नई ऊंचाईयों पर कदम रखवाया है
आज मेरा नवीन भारत उभर कर आया है।।
जवानों के कदमों ने
लाखों दुश्मनों को कप-कपाया है
आधुनिक उपकरणों ने काम आसान बनाया है
आज मेरा आधुनिक भारत सामने आया है।।
कहीं रेत है कहीं हरियाली
कहीं बर्फ़ कहीं पानी है
लेकिन चारों तरफ सिर्फ
सुंदर हिन्दूस्तान की रवानी है।
हिमालय से बहती हवा
देशभक्ति का पैग़ाम सुनाती है
गाती लहरें भी सिर्फ
हिन्दूस्तान -हिन्दूस्तान चिल्लाती हैं।
चिड़ियों की चहचहाट ने सबुह उठाया है
जाते सूरज ने सोने का पैग़ाम सुनाया है
ये हमारी पुरानी परंपरा का साया है।।
ये भारत!!
आते मुसाफिरों का ठिकाना है
जाड़ों में लाखों पक्षियों का हौज है
"अथिति देवो भव:" का सम्मान कराया है
ये भारत ही है
जिसने समस्त विश्व को एक परिवार बताया है।।
"वसुधैव कुटुम्बकम्"!! का नारा लगाया है।।
नये भारत की नई सोच को
भारतवासियों ने अपनाया है
नीरज हरनाज़ ने भारत का मान बढ़ाया है
पैराओलंपिक में भी भारत ने परचम लहराया है।।
तिरंगा इसकी शान
संस्कृति इसकी आन
और धैर्यता इसकी पहचान
इसलिए तो सब देशों में
मेरा भारत देश महान।।

रितिका यादव
द्वितीय वर्ष, प्राणी विज्ञान (विशेष)

"औछी राजनीति "

हर ओर उदासीनता का साया है
नारी के सम्मान पर काला बादल घिर आया है
परंतु!!
राजनीति का पैर अब भी ओछेपन से नहीं डगमगाया है।।
नारी सुरक्षा की चिंता नहीं
एक नया वोट बैंक नज़र आया है
दलितों को खरीदने का एक नया तरीका आजमाया है
हर ओर औछी राजनीति का काला साया है
चिता की धधक्ति ज्वाला ने
हर ओर अंधेरा लाया है
बेटी की चिता से कोसो दूर
उसके पिता का बेबस साया है।।
एक नई "निर्भया" के साथ
कैसा हिन्दूस्तान उभर कर आया है।।

द्वितीय वर्ष प्राणी विज्ञान (विशेष)

मैं कौन हूं? (एक नारी का परिचय)

मैं वक्त हूं, मैं राग हूं,
मैं जल रही वो आग हूं।
जो उड़ चलूं इन हवाओं में,
तो बदलते मौसम की आग़ाज़ हूं।
जो मुश्किलों से कभी डरा नहीं,
मैं उस पिता की शाख हूं।
मैं काली का क्रोध लिए, निर्भया की आवाज हूं।
द्रोपदी की अंश मैं
रघुवंश की सम्मान हूँ।
मामूली- सी एक लड़की नहीं,
मैं अपने पिता का स्वाभिमान हूं।।
झुका दे जो सागर को,
रघुवीर की वो बाण मैं
सूर्य-सी ताप लिए वीर शिवाजी की संतान मैं।
गोकुल की गलियों में बिखरी, मुरली की एक तान हूं।
द्वेष को जो हर ले मन से, मैं कान्हा की वो मुस्कान हूं। बढ़े कुकर्म इस काल में तो, मैं सृष्टि की पुकार हूं।
जो उठे आंख शक्ति पर, तो मैं शिव की हुंकार हूं।
नारी कहते लोग मुझको, नर की मैं पहचान हूं।
बैठा है कैलाश पर जो उस महादेव की निर्माण हूं।
जननी मैं ही, मैं ही माया ।
मुझ से उत्पन्न होती काया ।
मुझ से ममता, दया भी मैं हूं।
सीता- सी समर्पण भी मैं हूं।
प्रकृति में मैं, सृष्टि में मैं।
प्रभु की रची नियति में मैं।
करुणा का स्वरूप हूँ।
मैं गायत्री का रूप हूँ।।

ज्योति झा
द्वितीय वर्ष, प्राणी विज्ञान (विशेष)

मां

मैंने कई मरतबा देखा था तुम्हें
आर्द्र नयनों से
भीगते हुए
सिसकते- कसकते
चहकते- महकते
स्वयं को मिटते
हुए रोज पर
बरबस चहकते हुए
मर्म समेटे, मुस्कुराहट लिए
गहन अंधकार को
तराशते पुनः नवतरण
लौटते अभिन्न, असहज
अक्षुण्ण सहृदय से
नव कर्म में आशीष लिए
नित्य तुम संग हो 'मां '

सौम्या
द्वितीय वर्ष, बी.एससी. प्राणी विज्ञान (विशेष)

अनुक्रमणिका

क्रमाङ्कः	विषयः	लेखकः/लेखिका	पृष्ठाङ्कः
१.	भाषाविज्ञानविमर्शः	डॉ. अनिरुद्ध ओझा	२
२.	संस्कृतभाषा जनभाषा कथं भवेत्	डॉ. धर्मेन्द्र कुमारः	८
३.	काव्यस्यात्मा ध्वनिः	डॉ. रेखा कुमारी	९
४.	लघु-कथा साधूनां जीवनम्	डॉ. राहुलरञ्जनः	१३
५.	संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्	निहारिका खुराना	१७

भाषाविज्ञानविमर्शः

विषयप्रवेशः– मनुष्याः स्वभावं प्रकटयितुं यत् अर्थपूर्णं वाचिकं च साधनं प्रयुञ्जते, तत् साधनविशेषं भाषा इति उच्यते। भाषा वस्तुतः मानवशरीरे दिव्यांशत्वेन प्रतिष्ठिता अस्ति। या लोके केवलं मनुष्येभ्यः एव उपलभ्यते। यथोक्तं भगवता भर्तृहरिणा–

वाग्रूपता चेदुत्क्रामेदवबोधस्य शाश्वती ।
न प्रकाशः प्रकाशेत सा हि प्रत्यवमर्शिनी ।।

– *वाक्यपदीयम् १/१२४*

इयं दिव्यज्योतिः सर्वेषु लोकेषु स्वप्रकाशं प्रसारयति। अस्य भाषारूपप्रकाशस्य अभावे अयं संसारः सर्वथा अन्धकारेण आवृत्तः स्यात्। यथोक्तं भगवता दण्डिना–

इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत् भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।

- *काव्यादर्शः, १/४*

अनया एव मनुष्याः अस्मिन् जगति श्रेष्ठः प्राणी इति पूजिताः भवन्ति। वैदिकऋषयः सर्वप्रथमं ऋग्वेदस्य वाक्सूक्ते भाषायाः दिव्यस्वरूपस्य प्रतिपादनं कृतवन्तः सन्ति। तत्र ऋषयः कथयन्ति यत् भाषायाः वाक्तत्वमेव तद्दिव्यज्योतिः यत् मनुष्यान् ऋषित्वेन, देवत्वेन, विद्वत्वेन च परिवर्धयति। यथोक्तम्–

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥

- *ऋग्वेदः, १०/१२/५*

अस्मादेव मनुष्याः स्ववाक्व्यवहारद्वारा ज्ञानविज्ञानस्य सर्वेषु क्षेत्रेषु स्वस्य आधिपत्यं स्थापितवन्तः सन्ति। वस्तुतः यस्मिन् शास्त्रे भाषायाः वैज्ञानिकाध्ययनं भवति तत् भाषाविज्ञानम् इति उच्यते। भाषाविज्ञानस्य वर्तमानरूपं यत् वयं पश्यामः तत् पाश्चात्यपण्डितानां मनसः उत्पादः अस्ति। परन्तु संस्कृतशास्त्रपरम्परायां बहुप्राचीनकालादेव भाषायाः अध्ययनस्य प्रवृत्तिः वर्तते। यथा – शिक्षाशास्त्रे भाषायाः सूक्ष्मविमर्शः अभवत्। तत्र ध्वनिविज्ञानस्य विविधघटकतत्त्वानि सम्यक्तया प्रतिपादितानि सन्ति । निरुक्ते प्रातिशाख्ये च शब्दानां व्युत्पत्तिः निरुक्तिश्च संजातः। तत्र धातूपसर्गप्रत्ययादिविषयाणां अध्ययनं विश्लेषणं प्रतिपादनं च भवति। तेषां पद-पदार्थ विश्लेषणान् वैज्ञानिकाध्ययनत्वमिति वक्तुं शक्यते। संस्कृतव्याकरणशास्त्रपरम्परायामपि बहवः आचार्याः ग्रन्थाश्च सन्ति यत्र भाषाविज्ञानस्य

प्रमुखघटकतत्वानां सम्यक् विश्लेषणं प्रतिपादनं च सञ्जातः। भगवता पतञ्जिना महाभाष्ये तथा भर्तृहरिणा वाक्यपदीये शब्दार्थविश्लेषणत्वेन भाषाविज्ञानस्य विविधपक्षाः निरूपिताः। तत्र शब्दमिति ब्रह्मत्वेन प्रतिपाद्य अक्षरसंज्ञया समुद्घोषितोऽस्ति। यथोक्त भगवता भर्तृहरिणा–

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्वं यदक्षरम् ।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः॥

- *वाक्यपदीयम्, १/१*

प्रकारान्तरेण वाक्यपदीयमपि भाषाध्ययनस्य ग्रन्थोऽस्ति। संस्कृतसाहित्ये दर्शने चापि शब्दार्थरसभावानां विवेचने सूक्ष्मत्वेन भाषावैज्ञानिकतत्वानामेव दर्शनं भवति। संस्कृतवाङ्मये इतस्ततः यदुपलभ्यमानानि भाषासम्बन्धीतत्वानि सन्ति तान्येवतत्वानि वर्तमानकालिकभाषाविज्ञानस्य आधारभूतानि सन्ति। आधुनिकविषयत्वेन भाषाविज्ञानस्य प्रवर्तनं यूरोपे १७८६ तमे वर्षे सरविलियमजोन्सनामधेयः विदुषा कृतम् इति मन्यते। संस्कृतभाषायाः अध्ययनस्य सन्दर्भे सरविलियमजोन्समहोदयः संस्कृत-ग्रीक-लैटिन-भाषाणां तुलनात्मक-अध्ययनं कुर्वन् एतासां त्रयाणां भाषाणां उत्पत्तिः सम्भवतः एकमेव भाषा एव आधाररूपेण विद्यते इति सम्भावनाम् अभिव्यक्तवान्। तस्य प्रत्ययानुसारेण एतेषां त्रयाणां भाषाणां मध्ये सूक्ष्मः सम्बन्धः अवश्यमेव भवितव्यः इति। सरविलियमजोन्समहोदयेन भाषाणां एतादृशः तुलनात्मकः अध्ययनः आधुनिकभाषाशास्त्रस्य क्षेत्रे प्रथमं सोपानम् इति संजातः ।

भाषाविज्ञानस्य विविधनामानि – भाषाविज्ञानं मूलतः पाश्चात्यविदुषां चिन्तनस्योत्पादः अस्ति। भारतीय चिन्तनपरम्परायां प्राचीनकाले भाषायाः विभिन्नभागानाम् अध्ययनार्थं भिन्नाः शब्दाः प्रचलिताः आसन्। यथा – शिक्षा, निरुक्तम्, व्याकरणम्, प्रातिशाख्यम् इत्यादिः। एतेषां शास्त्राणां सम्बन्धः भाषायाः कस्यचित् भागविशेषेण अस्ति। वर्तमानभाषाविज्ञानस्य पाश्चात्यदेशेषु अनेकानि नामानि प्रचलितानि सन्ति। यथा– Comparative Grammar, Comparative Philology, Glossology, Glottology इत्यादिः। आंग्लभाषायां Science of Language, Linguistics अपि प्रचलिताः सन्ति। Linguistics इति शब्दः वस्तुतः लैटिनभाषायाः लिंगुआशब्देन निर्मितः। फ्रांसदेशे अद्यापि भाषाविज्ञानस्य कृते Linguistique इति शब्दः प्रचलितः। ततः एव आंग्लभाषायां Linguistic इति नाम स्वीकृतः। कालान्तरे (एकोन्नविंशतिः षष्ठीतमेवर्षे) Linguistic तः Linguistics इति रूपेण परिवर्तितः सञ्जातः। जर्मनभाषायां भाषाविज्ञानस्य कृते Sprachwissenschaft शब्दस्य प्रयोगो भवति। भारतीयचिन्तनपरम्परायां प्राचीनकाले भाषाविज्ञानविषयकाध्ययने व्याकरणं, शब्दानुशासनं, शब्दशास्त्रं, निर्वचनशास्त्रञ्चेति शब्दाः प्रचलिताः आसन्। अधुनातने तस्य कृते तुलनात्मकभाषाविज्ञानं,

भाषाविज्ञानं, भाषाशास्त्रं, तुलनात्मकभाषाशास्त्रं, शब्दशास्त्रं, भाषिकी चेत्यादि शब्दाः प्रचलिताः सन्ति। वर्तमानकाले एतेषु शब्देषु भाषाविज्ञानं भाषाशास्त्रञ्चेति शब्दौ व्यवहृतौ स्तः। वस्तुतः भाषाविज्ञाने भाषासम्बन्धी सर्वेषां तत्त्वानां समावेशो जायते। अतः भाषाविज्ञानमिति शब्दः प्राचुर्येन प्रचलितोस्ति।

भाषाविज्ञानस्य परिभाषा– संस्कृते भाष्–व्यक्तायां वाचि धातोः अङ्+टाप् प्रत्यये कृते भाषा शब्दस्य निष्पतिर्जायते। यस्यार्थः भाष्यते व्यक्तवाग् रूपेण अभिव्यज्यते इति भाषा। वि उपसर्गपूर्वक् 'ज्ञा' धातोः 'ल्युट्' प्रत्यये कृते विज्ञानशब्दस्य निष्पतिर्जायते। यस्यार्थः विशिष्टं ज्ञानं इति विज्ञानम्, भाषायाः विज्ञानम् इति भाषाविज्ञानम्। अतः ज्ञायते यत् भाषाविज्ञानं तद् विज्ञानमस्ति यत्र भाषायाः सर्वांगीणं विश्लेषणात्मकम् अध्ययनं भवतीति। उक्तं कपिलदेव द्विवेदिना–

भाषाया यत्तु विज्ञानं सर्वाङ्गं व्याकृतात्मकम्।
विज्ञानदृष्टिमूलं तद् भाषाविज्ञानमुच्यते॥

\- *भाषाविज्ञानम्, पृ.-६*

एतदतिरिक्तमपि बहवः खलु पौरस्त्याः पाश्चात्याश्च आचार्याः सन्ति ये भाषाविज्ञानस्य स्व-स्व मतानुसारैः परिभाषां प्रदतवन्तः सन्ति।

भाषाविज्ञानस्य अंङ्गानि – भाषाविज्ञानं भाषायाः सर्वांगीणाध्ययनं विश्लेषणं च करोति। अतः तत्र भाषायाः सर्वेषां घटकानां सम्यकतया विश्लेषणं प्रतिपादनञ्च भवति। प्रधानत्वेन भाषायाः चत्वार्यङ्गानि सन्ति। यथा–

१. ध्वनिविज्ञानम्, २. पदविज्ञानम्, ३. वाक्यविज्ञानम्, ४. अर्थविज्ञानञ्च।

१.ध्वनिविज्ञानम् – ध्वनिस्तु भाषायाः मूलतत्त्वमस्ति। अत्र ध्वनेः सम्यक्तया विश्लेषणं भवति। यथा– किं नाम ध्वनिः, कियद्धवनिः, तेषां वर्गिकरणं केन कथं जायते। केन प्रकारेण तेषां सम्प्रेषणं भवति। तेषां भेदकत्वस्य कारणं किम्। अत्र भाषावैज्ञानिकैः प्रतिपादितानां ध्वनिनियमानां विवेचनं सविस्तरेण भवति। संस्कृतशास्त्रपरम्परायां ध्वनिविज्ञानस्य समयक्तया निरूपणं शिक्षाशास्त्रे, प्रातिशाख्ये व्याकरणे च जातम्। ध्वनेः वैशिष्टये यथोक्तं आचार्याः–

ध्वनेर्विश्लेषणं शिक्षा वर्णनं च विभाजनम्।
परिवृत्त्यादीतिहासश्च ध्वनिविज्ञानमुच्यते॥

\- *भाषाविज्ञानम्, पृ.– १०७*

\-

ध्वनेरुत्पत्तिर्विषये भगवता पाणिनिः कथयति–

आत्मा बुद्धया समेत्यार्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम्॥

– *पाणिनीयशिक्षा, श्लो. – ६*

मारुतस्तूरसि चरन् मन्द्रं जनयति स्वरम्।
प्रातस्सवनयोगं तं छन्दो गायत्रमाश्रितम्॥

– *तत्रैव, श्लो. – ७*

सोदीर्णो मूर्ध्न्यभिहतो वक्त्रमापद्य मारुतः।
वर्णाञ्जनयते तेषां विभागः पञ्धास्मृतः॥

– **तत्रैव, श्लो. – ९**

२. पदविज्ञानम् – विविधध्वनिनां समन्वयेन पदस्योत्पतिर्जायते। भाषाविज्ञानस्य अस्मिन्नाङ्गे पदस्य स्वरूपं किं, केन कथं निर्माणं जायते, पदस्य कानि घटकत्त्वानि सन्ति, तेषां विभाजनं केन कथं भवति। कानि सन्ति लिंगविभक्तिवचनपुरुषकालप्रकृतिप्रत्ययोपसर्गादिनि। एतेषां भाषायां किमुपयोगः, कति भेदाः सन्ति। इत्यादिः विषयानां विवेचनं विश्लेषणञ्च भवत्यत्र। संस्कृतस्य आचार्याः पदविज्ञानस्य वैशिष्ट्ये उक्तवन्तः यथा–

प्रकृतिप्रत्ययैर्मिश्रं सार्थकध्वनिसंगमात्।
रूपनिर्माणसंबद्धं पदविज्ञानमुच्यते॥

– *भाषाविज्ञानम्, पृ.– २५५*

भाषाविशेषसंबद्धो लघिष्ठः सार्थको ध्वनिः।
बद्धमुक्तगुणैर्युक्तो रूपिमः कथितो बुधैः॥

– *तत्रैव*

पदविज्ञाने व्याकरणिककोटिनां सम्यक् निरूपणं संजातः। पदविज्ञाने शब्दविज्ञानस्यान्तर्भावो जायते। अत्र शब्दनिर्माणस्य प्रक्रियायाः अध्ययनं भवति। अत्रोपसर्गः प्रकृतिप्रत्ययादि संयोगपूर्वकः शब्दस्य निष्पतिर्भवेदिति पदविज्ञानस्य प्रमुखविषयः।

वाक्यविज्ञानम् – भाषाविज्ञानस्य अस्मिनङ्गे वाक्यस्य विविधस्वरूपं भेदञ्च प्रतिपाद्यते। वाक्यस्य निर्माणं पदानां संयोगत्वेन भवति। तत्र पदानां ऐकः विशिष्टः क्रमः विद्यते। अयोगात्मकभाषासु पदक्रमस्य वयाकरणिक महत्वमस्ति। वाक्यविज्ञाने पदक्रमस्य अध्ययनं भवति। वाक्यविज्ञानस्य अध्ययने आकृतिमूलकवर्गिकरणं तथा वाक्यविभाजनमपि भवति। वाक्यविज्ञाने स्वरूपदृष्ट्या

अर्थदृष्ट्या वयाकरणादिशास्त्रदृष्ट्या च वाक्यानां वर्गिकरणं सञ्जायते। संस्कृतस्य आचार्याः वाक्यविज्ञानस्य वैशिष्ट्ये उक्तवन्तः यथा–

वाक्यानां रचना भेदाः परिवृत्तिः पदक्रमः।
वाक्यविश्लेषणं चैव वाक्यविज्ञानमिष्यते॥

– *भाषाविज्ञानम्, पृ.– २९५*

अनेन ज्ञायते यत् भाषायां वाक्यस्य विशिष्टं स्थानमस्ति। वाक्यं विना अर्थवोधौ न भवितुं शक्नोति। यथोक्तं भर्तृहरिणा–

पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च।
वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन।।

– *वाक्यपदीयम् १–७३*

अर्थविज्ञानम्– भाषायाः प्राणतत्त्वमस्ति अर्थविज्ञानम्। अस्यार्थवत्ता ध्वनिपदवाक्यानां सार्थकत्वेन सन्निहितःभवति। अत्र शब्दार्थस्याध्ययनं भवति। भाषाविज्ञानस्य अस्मिनङ्गे संकेतग्रहाणां साधकबाधकतत्वानां तथा च शब्दशक्तिनां समावेशो संजायते। भाषा परिवर्त्तनीया भवति, अतः अर्थविज्ञाने अर्थपरिवर्तनस्य क्षेत्राणां,कारकाणामपि अध्ययनं भवति। अर्थस्तु शब्दरूपात्मकशरीरस्य आत्मा अस्ति। येन प्रकारेण शरीरस्य ज्ञानाद् आत्मज्ञानमपेक्षितं तेनैव प्रकारेण ध्वनिपदवाक्यज्ञानादर्थरूपात्मकं आत्मज्ञानमपेक्षितम्। उक्तं भर्तृहरिणा– **यन्नेत्रः प्रतिभात्माऽयं भेदरूपः प्रतीयते।(वाक्यपदीय १–१०९)** अनेनैवप्रकारेण संस्कृतस्य अन्याः आचार्याः अपि अर्थविज्ञानविषये उक्वन्तः–

सुश्रुषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा।
ऊहापोहोऽर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः॥

– *महाभारतम्, वनपर्वः २–१९*

यथा च चोदनाशब्दो वैदिक्यामेव वर्तते।
शब्दज्ञानार्थविज्ञानशब्दौ शास्त्रे तथा स्थितौ॥

– *श्लोकवार्तिकः, शब्दपरिच्छेदः–१३*

भाषाविज्ञानस्य महत्वं वैशिष्ट्यञ्च– भाषाविज्ञानं वस्तुतः एकं विज्ञानमस्ति। विज्ञानं स्वतः निरपेक्षं भवति। भाषायाः तात्त्विकविवेचनं तत्त्वसंदर्शनमेव तस्य परमलक्ष्यमस्ति। तत्त्वसंदर्शनेन बौद्धिकशान्तिः

आनन्दानुभूतिश्च भवति। अतएव इदं वैज्ञानिकचिन्तनं निरपेक्षत्वादपि सापेक्षत्वमस्ति। अनया दृष्ट्या भाषाविज्ञानस्य निम्नलिखितानि वैशिष्ट्यानि सन्ति–

भाषाविज्ञानं वस्तुतः भाषाविषयकजिज्ञासानां प्रशमनं करोति। अनेन ज्ञानेन वैज्ञानिकाध्ययनं प्रति रूचिर्जायते। भाषायाः परिष्कृत स्वरूपं बोधयति। भाषाविज्ञानं वेदार्थज्ञाने साहाय्यं भवति। अनेन ज्ञानेन प्राचीनसंस्कृतेः सभ्यतायाश्च ज्ञानं भवति। भाषाविज्ञानस्य साहाय्येन विविधभाषाणां ज्ञानं भवति।

निष्कर्षः – अतः निष्कर्षत्वेन वक्तुं शक्नुमः यत् अन्यान्यविज्ञानसदृशमेव भाषाविज्ञानस्य क्षेत्रमपि सविस्तृतमस्ति। मानवमात्रस्य भाषया सह अस्य संबन्धः विद्यते। भाषाविज्ञाने भाषाया वर्त्तमानातीतं (अनयोः स्वरूपयोः) अध्ययनं भवति। मानवीयप्रवृत्तेः यावद् सूक्ष्मत्वेन अध्ययनं भाषाविज्ञाने भवति तावदन्यत्र दुर्लभः। भाषाविज्ञानस्य एकस्मिन् पक्षे व्याकरणस्य अध्ययनं भवति तर्हि द्वितीयपक्षे मनोविज्ञानस्य अध्ययनं भवति। तत्र सामान्यविषयेन सह भाषायाः दार्शनिकपक्षस्य समुद्घाटनं जायते। मानवमात्रस्य भाषया सह सम्बद्धत्वात् भाषाविज्ञानं वस्तुतःमानवमात्रस्य कृते अस्ति।

सन्दर्भ–ग्रन्थाः

ऋग्वेदसंहिता, संपादकः त्रिवेदी रामगोविन्दः, चौखम्बा विद्याभवनम्, वाराणसी, १९९१

काव्यादर्शः, संपादकः गुप्त धर्मेन्द्र कुमारः, मेहर चन्द्र लक्ष्मणदासः, दिल्ली, १९९३

भाषाविज्ञानम्, संपादकः लेखकश्च द्विवेदी कपिलदेवः, विश्वविद्यालयप्रकाशनः, वाराणसी, २००५

महाभारतम्, संपादकः, पोद्धारः हनुमानप्रसादः, गीताप्रेस–गोरखपुरम्, १९५८

संस्कृतभाषाविज्ञानम्, संपादकः लेखकश्च द्विवेदी शिवबालकः एवं चतुर्वेदी अवधेशकुमारः, रामबागः कानपुरः, १९७८

- **डॉ. अनिरुद्ध ओझा**
सहायक-प्राध्यापक:
संस्कृत-विभाग:
मैत्रेयी-महविद्यालय:।

संस्कृतभाषा जनभाषा कथं भवेत्

नवशिक्षानीतौ स्पष्टोल्लेखः वर्तते यत् बालस्य प्रारम्भिकी शिक्षा यदि मातृभाषायां प्रदीयेत् तदेयम् अधिका प्रभावशालिनी सिद्ध्यति। ध्यातव्यं यत् भाषाशिक्षणान्तर्गतं 'मातृभाषा' इति पदं प्रयुज्यते, परं पदस्यास्य संरचनायां कोऽपि सम्यग् ध्यानं न प्रददाति। द्वयोः पदयोः संयोगेन 'मातृभाषा' इति पदं निष्पद्यते, यत्र प्रथमं पदं 'मातृ'तथा द्वितीयं पदं 'भाषा'इति अस्ति। 'मातृ'इत्यनेन माता तथा 'भाष्=व्यक्तायां वाचि अनेन धातुना भाषा पदस्य निष्पत्तिर्भवति। यथा 'मातृ' एवं 'भाषा' इति द्वे एव पदे संस्कृतस्य स्तः। एतेन ज्ञायते यत् प्रारम्भिकी शिक्षा संस्कृतमाध्यमेन एव भवेत्। यदि एवं संभवेत् तर्हि संस्कृतभाषा जनभाषायाः पदं प्राप्तुं शक्नोति। यतो हि संस्कृत भाषा स्ववैज्ञानिकतायै विश्वे विश्रुतास्ति। 'संस्कृतम्'vइति पदं सम् उपसर्गपूर्वात् 'कृ' धातोः सुडागमः 'क्त' प्रत्ययोगेन सिद्ध्यति। यस्य मूलार्थः 'संस्कृताभाषा' इति भवति। भषार्थे 'संस्कृतम्' इत्यस्य प्रयोगः वाल्मीकीये रामायणे पूर्वस्मादेव विद्यते। सुन्दरकाण्डे वर्णितमस्ति यत् सीतया सह कया भाषया वार्तालापः क्रियेत् इति। एतद् विचारयन् हनुमानभाषत् यद्यहं द्विजतुल्यः संस्कृतेन वक्ष्यामि तदा सीता मां रावणम् मत्वा भयभीता भविष्यति। यदि वाचम् प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृतम्..(सुन्दरकाण्डम्)।

रामायणस्यानेनोद्धरेण स्पष्टमस्ति यत् तात्कालीनसमाजे संस्कृतभाषा जनभाषारूपेण प्रतिष्ठापितासीत्। यदि वर्तमानेऽपि प्रयासः क्रियेत् तर्हि संस्कृतं जनभाषा भवितुं शक्नोति।

वर्तमाने मनोरञ्जनस्य साधनेषु प्रसिद्धं साधनं संगीतं वर्तते। एतत् सर्वविदितमस्ति यत् संगीतस्य वर्णनं सस्कृतवाङ्मये पूर्वमेव आसीत्। तथापि सर्वसाधारणाः जनाः एतेन सत्येन अनभिज्ञाः सन्ति' सामभ्यो गीतमेव, 'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'। यथाधुना 'पंजाबी' इति भाषायां संगीतस्य प्रशंसनीयं प्रचलनं वर्तते। 'पंजाबी' लिपिं न जानन्तोऽपि श्रोतारः संगीतपक्षेण भावपक्षेण च तस्य आनन्दम् अनुभवन्ति। तथैव यदि संष्कृतभाषयापि संगीतस्य निर्माणं क्रियेत् गीतानां मध्ये-मध्ये प्रचलित-संस्कृतशब्दानां समावेशः क्रियेत् तथा नूनमेव संस्कृतं जनभाषा भवितुं शक्नोति।

धार्मिक-कर्मकाण्डेऽथवा स्वल्प-शिक्षणपाठ्यक्रमे एवं सीमितं संस्कृतं सम्मानं ददन् उत्तरप्रदेशान्तर्गते झांसीमण्डले मण्डलायुक्तः डॉ. अजयशंकरः पाण्डेयमहोदयः आयुक्त-न्यायालये 'राजस्व व आर्म एक्ट'इति वादस्य निर्णयं देववाण्यां लिपीबद्धं कृतवान्। हिन्दीभाषायाम् तस्य अनुवादं कृत्वा अधिवक्तृवर्गान् च बोधितवान्। अधुना यावत् न्यायव्यवस्थायां आंग्ल-हिन्दी-उर्दू भाषायाः एव उपयोगोऽभूत्। संस्कृत-भाषायां लिखितः एषः प्रथमः ऐतिहासिकः निर्णयः अस्ति। तदवसरे

मण्डलायुक्तः डॉ. अजयशंकर पाण्डेयः अवोचत्- 'संस्कृतं सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति। अधिकांशानां जनानां धारणास्ति यत् संस्कृतं क्लिष्टभाषास्ति ते विस्मरन्ति यत् इयं भाषा वैज्ञानिकी भाषास्ति। शिक्षणकालेऽहं संस्कृतम् अपठम्। द्वयोः निर्णयोः संस्कृतभाषायां संघोषणस्य उद्देश्यमस्ति यत् जनाः इमां भाषां प्रति आकर्षिताः भवेयुः निश्चितरूपेण एतादृशेन निर्णयेन संस्कृतस्य जनभाषारूपेण स्थापनायां महती भूमिका भविष्यति। संस्कृतानुरागिणः एतादृशानां महानुभावानां प्रयासस्य महतीं प्रशंसां कुर्वन्ति।

संस्कृते ज्ञानविज्ञानस्यापारः निधिः वर्तते इति जगत्प्रसिद्धम्। अद्यावश्यकता वर्तते यत् संस्कृतम् आकर्षकं मोहकं च भवेत्। एतस्य मोहकरूपम् आकर्षणं च संस्कृताध्येतृषु स्वप्रयासेन प्रतिष्ठापितव्यम् एतदर्थम् उत्पादकस्य विज्ञापनानि, परिवहननामानि, मार्गस्यनिर्देशानि, चिकित्साक्षेत्राणि, गीतसंगीतानि, बैंकिंगकार्याणि, चलचित्रनिर्माणानि इत्यादिभिः संस्कृतम् आकर्षकं मनोमोहकं च कर्तुं शक्यते। यदि वयम् एतत् कर्तुं सफलाः भवेम तर्हि एकदिनं निश्चितमेव संस्कृतम् अस्माकं राष्ट्रे जनभाषापदम् अलंकर्तुं शक्ष्यति।

– **डॉ. धर्मेन्द्र कुमारः**
सहायक-प्राध्यापकः
संस्कृत-विभागः
मैत्रेयी-महविद्यालयः।

काव्यस्यात्मा ध्वनिः

काव्यस्यात्मा ध्वनिः इति काव्यशास्त्रकाराणाम् मूर्धन्यस्य आचार्यवर्यस्य आनन्दवर्धनस्य मतम्। कवेः कृतिः काव्यम् कथ्यते, यद्धि सहृदय- हृदयाहलादकम् भवति। तत्र शब्दार्थमयम् यदि काव्यस्य शरीरम्, तर्हि तस्मिन् सारतया स्थितम् आत्मभूतम् तत्त्वम् किं स्यात् इति विचारसन्दर्भे विविधानि मतानि काव्यशास्त्रकारैरूपादेशिषत्। "रसः काव्यस्य आत्मा" इति एकः पक्षः। "अलङ्कारः काव्यस्य आत्मा" इति अपरः पक्षः। "रीतिः काव्यस्य आत्मा" इति इतरः पक्षः। "वक्रोक्तिः काव्यस्य आत्मा" वक्रोक्तिः काव्यजीवितम् इति अन्यः पक्षः। "औचित्यं काव्यस्य आत्मा" इति तथाप्यपरः पक्षः।

परन्तु काव्यस्यात्मा ध्वनिः इति यत् अथापि पक्षान्तरम् तत् अतीव मान्यम्। अस्य उद्भावकः महान् आचार्यः आनन्दवर्धनः वर्तते। तेन ध्वन्यालोकनामा ग्रन्थः ध्वनिसम्बन्धिना विशदेन विचारेण पूर्णो व्यरचि। तत्रैव काव्यस्यात्माध्वनिरिति पंक्तिः पद्यैकदेशतया प्रयुक्ता प्राप्यते। ध्वनिविवरणभूमिकायामेष आचार्यः स्पष्टीकरोति यत् "ध्वनिः काव्यस्य आत्मा इति पूर्वेषाम् आचार्याणाम् यन्मतम् तत् विप्रतिपति- निरसनपूर्वकम् विशदीकरोमि, येन विदुषाम् सहृदयानां मनसि आनन्दः प्रतिष्ठां लभेत् इति।

अयं ध्वनिः अतिव्यापकः विविधार्थकः भवति। ध्वनति इति ध्वनिः शब्दः अर्थश्च, ध्वननं ध्वनिरिति व्यञ्जनाव्यापारः, ध्वन्यते योऽसौ ध्वनिरिति ध्वन्यमानोऽर्थः, ध्वन्यते यत्र स ध्वनिरित्यनेन काव्यम् ध्वनिरिति सर्वम् लोचनकारस्य मतम्।

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृत स्वार्थौ ।

व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः॥

इति प्रतिपादयताऽऽनन्दवर्धनेन ध्वनयालोके ध्वनिकाव्यस्य हृद्यं लक्षणम् कृतम्। किन्तु काव्यस्य आत्मा ध्वनिः इत्यत्र यः ध्वनिः सः ध्वनिमानोयोऽर्थः व्यंङ्ग्यरूपः तस्य बोधकः। स च स्थूलतः त्रिविधः-

1. **वस्तुध्वनिः**

भ्रम धार्मिक विस्रब्धः स शुनकोऽध मारितस्तेन ।

गोदानदीकच्छकुञ्जवासिना दृप्तसिंहेन इतिच्छया॥

श्वश्रूरत्र निमज्जति अत्राहं दिवसकं प्रलोकय ।

मा पथिक रात्र्यन्धक शय्यायां मम निमंक्ष्यसि ॥

कस्य वा न भवति रोषो इत्यादौ वस्तुध्वनिः।

2. **अलंकारध्वनिः**

स्वच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्द्धः ।

त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः ॥

इत्यादावलङ्कारध्वनिः।

3. रस ध्वनि:

य: कौमारहर: स एव चैत्रक्षपा

स्ते चोन्मीलितमालतीसुरभय: प्रौढ़ा: कदम्बानिला: ।

सा चैवास्मि तथापि तत्र सुरतव्यापारलीलाविधौ

रेवारोधसि वेतसीतरुतले चेत: समुत्कण्ठते॥

इत्यादौ रसध्वनि: ।

सोऽयं ध्वनि: विस्तरेण ध्वन्यालोकस्य उद्योतचतुष्के विशदम् प्रत्यपादि । तत्र आनन्दवर्धनेन ध्वने: त्रयो विरोधिन: परिकल्पिता: 1) अभाववादी 2) भक्तिवादी 3) अलक्षणीयतावादी च इति। अभाववादिनोऽपि त्रयो विकल्पा: भवन्ति।

तत्र काव्य-सम्बन्धीनि तत्त्वानि- शब्दार्थशरीरम् तावत् काव्यम्, अनुप्रासादय: शब्दस्य उपमादयश्चार्थस्य अलङ्कारा: वैदर्भ्यादयो: रीतय: तदनतिरिक्तवृत्तयो वृत्त्योऽपि उपनागरिकाद्या: इत्यादीनि गण्यन्ते तद्भिन्न: न कोऽपि क्षोददम: ध्वनि: इति प्रथमो विकल्प:।

अप्रसिद्धस्य ध्वने: (ध्वनि- काव्यस्य) लक्षणं कथमपि मान्यं नस्यात् - समान- चित्तेषु केषुचन ध्वने: प्रस्ताव:, समर्थनम्, अनुमोदनञ्च भवन्तु नाम सर्व विद्वज्जन- मान्यता अस्य न स्याद इति द्वितीयो विकल्प: ।

अलङ्कारातिरिक्त: कोऽपि ध्वनि: नैव भवेत् कामनीयम् अनतिवर्तमान: अलङ्काररूप एव कश्चिद् ध्वनिरपि स्यात्, न तु कश्चनध्वनिनामा अपूर्व: पदार्थ: इति तृतीयो विकल्प:। एषां खण्डनं कुर्वन्-

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्तवस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।

यतत् प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु॥

इत्यादिभि: कारिकाभि: ध्वने: वाच्यव्यतिरिक्तत्वेन दृढ़ं सद्भावं वर्णयित्वा विविधै: विचारै: च्यविलक्षणं तं सुव्यक्तं परिपोषयन् ध्वने: स्वरूपं साधूपस्थापितवान्। भक्तिवादस्यापि त्रीन् विकल्पान् परिकल्प्य तस्यापि खण्डनं कृतम् तथाहि: –

1. ध्वनिः भक्तया (लक्षणया) एकत्वं न बिभर्ति भिन्नरूपत्वात् । वाच्यभिन्नस्य अर्थस्य वाच्यवाचकाभ्यां यत्र (यः कौमारहरः इत्यादौ) व्यंग्यप्राधान्ये तात्पर्येण प्रकाशनम् स ध्वनिः उपचारमात्रम् भक्तिः।
2. न च ध्वनिः भक्तया लक्ष्यते, अतिव्याप्तेः अव्याप्तेश्च "... (वदति विसिनी पत्र शयनम्) इत्यादि ध्वन्यभावस्थले भक्तेः सत्त्वात् अलक्ष्ये लक्षणप्रवृत्या अतिव्याप्तेः यः कौमारहरः इत्यादौ रस ध्वनि स्थले भक्तेः असत्वात् लक्ष्ये लक्षणासत्वेन अव्याप्तेश्च भक्तिः ध्वनेः लक्षणम् अपि न सम्भवति।
3. भक्तिः ध्वनेः उपलक्षणमपि न मन्तव्या । अनेक- प्रभेद- मध्यात् अन्यतमस्य भेदस्य भक्तिः उपलक्षणं स्यात् इति निर्बन्धश्चेत्, अभिधयैव समग्रालङ्काराणां निर्वाहात् प्रत्येकम् अलङ्काराणां लक्षण- करण- वैयर्थ्यापत्तेः। तस्मात् गुणवृत्या भक्त्या ध्वनिः नोपलक्षयितुं शक्यः इति एवङ्कारं भक्तिवादोऽपि खण्डितः।

अलक्षणीयतावादस्तृतीयो विरोधस्तु अज्ञान- पराहतः खण्डितः एव। विस्तरेण निरुक्तस्य ध्वनेः 'निर्वचनं न सम्भवति' इति कथनम् असामर्थ्यद्योतकमेव केवलम्।

अत्रेदम् अवधेयम्- ध्वनि- शब्दः व्याकरणप्रयोगमूलकः। तत्र श्रूयमाणः शब्दः ध्वनिः कथ्यते, यः स्फोट- व्यञ्जको भवति। एवम् एव साहित्ये वाच्य- वाचक सम्मिश्रः काव्यत्वेन अभिधीयमानः ध्वनिः कथ्यते, यः व्यङ्ग्य- व्यञ्जको भवति। सोऽयं ध्वनि शब्दः विभिन्न व्युत्पत्तिः निष्पाद्यः अनेकार्थः।

इत्थञ्च स ध्वनिरेव वस्त्वलङ्कार- रस प्रभेदभिन्नः अतिव्यापक स्वरूपः काव्यात्मतया आनन्दवर्धनेन प्रतिष्ठापितः, स्वीयेनाति- विशदेन विचारचयेनाभिनवगुप्तपादेन लोचनकारेण परिपोषितः, काव्यप्रकाशकर्ता आचार्येण मम्मटेन च विपुलम् अनुमोद्य दृढ़ीकृतोराजते। अतः काव्यस्यात्मा ध्वनिः इति सिद्धः।

– डॉ. रेखा कुमारी
सहायक-प्राध्यापिका
संस्कृत-विभागः
मैत्रेयी-महविद्यालयः।

लघु-कथा

साधूनां जीवनम्

गङ्गातीरे एकः साधुः आसीत्। सः बहु उपकारं करोति स्म। यः अपकारं करोति तस्यापि उपकारं करोति स्म। एकस्मिन् दिने सः गङ्गानद्यां स्नानं कर्तुं नदीं गतवान्। नदीप्रवाहे एकः वृश्चिकः आगतः। साधुः वृश्चिकं दृष्टवान्। तं हस्तेन गृहीतवान्। तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। किन्तु सः साधोः हस्तम् अदशत्। साधुः तं त्यक्तवान्। वृश्चिकः जले अपतत्। पुनः साधुः वृश्चिकं गृहीत्वा तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। पुनः वृश्चिकः हस्तम् अदशत्। एवम् अनेकवारं साधुः वृश्चिकं गृहीतवान्। वृश्चिकोऽपि वारं-वारमदशत्।

नदीतीरे एकः पुरुषः आसीत्। सः उक्तवान् – साधुमहाराज! अयं वृश्चिकः दुष्टः। सः पुनः पुनः दशति। भवान् किमर्थं तं हस्ते वृथा स्थापयति। वृश्चिकं त्यजतु।

साधुः उक्तवान् – वृश्चिकः क्षुद्रः जन्तुः। दंशनं तस्य स्वभावः। सः स्वस्य स्वभावं न त्यजति। अहं तु मनुष्यः। अहं मम परोपकारस्वभावं कथं त्यजामि। यः अपकारिणाम् अपि उपकारं करोति सः एव साधुः भवति।

चाटुचणकः

आयाति निश्चिते काले किन्तु नास्त्येव निश्चिता।
प्रस्थानाय तिथिर्यस्य तस्मादतिथिरुच्यते॥

– अतिथिः

कश्चन भिक्षुः (संन्यासी) मांसं खादन् आसीत्। तं दृष्ट्वा कश्चित् अपृच्छत् - 'आर्य! किं भवता मांसं सेव्यते?' भिक्षुः अवदत् - 'आम्। किन्तु मांसेन सह मद्यं नास्ति किल इति मम खेदः' इति। प्रष्टा आश्चर्येण अपृच्छत् - 'किं मद्यसेवनाभ्यासः अपि अस्ति भवतः?' इति। 'आम्। यदि वाराङ्गनापि काचित् दद्यात् तर्हि महान् सन्तोषः' इति अवदत् भिक्षुः। 'वाराङ्गनार्थं धनम् आवश्यकं खलु? तत् कथं प्राप्यते?' - प्रष्टा अपृच्छत्। 'तत् तु द्यूतेन चौर्येण वा प्राप्यते' - इति शान्ततया अवदत् भिक्षुः। 'भिक्षुणा सता भवता मांसं मद्यं च सेव्यते । वाराङ्गना उपगम्यते । द्यूतं चौर्यं चापि क्रियते! किम् एतत्

सर्वम्!' इति आश्चर्येण पृष्टवान् प्रष्टा। तदा भिक्षुः खेदेन अवदत् - 'यदि भ्रष्टता प्राप्यते तर्हि एवमेव अधोगतिः भवति क्रमशः। सकृत् भ्रष्टस्य अधःपतनं सहजम्' इति ।

भिक्षो मांसनिषेवणं च कुरुषे किं तेन मद्यं विना
मद्यं चापि तव प्रियं प्रियमहो वाराङ्गनाभिः सह ।
तासामर्थरुचिः कुतस्तव धनं द्यूतेन चौर्येण वा
चौर्यद्यूतपरिग्रहोऽस्ति भवतः भ्रष्टस्य का वा गतिः॥

काचित् प्रेयसी स्वस्य प्रियं विटम् अपृच्छत् - 'आवयोः पुनः मेलनं कदा कुत्र वा भवितुम् अर्हति?' इति। तदा विटः झटिति अवदत् - 'अहमस्मि जारः । भवती अपि जारवृत्तिका एव । आवयोः उभयोः अपि कृत्यं पापाय । एतादृशं पापं ये कुर्वन्ति ते कुम्भीपाकरूपं नरकं गच्छन्ति इति वदन्ति वेदाः । वेदैः यत् उक्तं तत् प्रमाणं यदि स्यात् तर्हि कुम्भीपाकनामके नरके आवयोः मेलनं तु निश्चयेन भविष्यति' इति ।

आवयोर्मेलनं कान्त कदा कुत्र भविष्यति ।
यदि वेदाः प्रमाणं स्युः कुम्भीपाके भविष्यति ॥

ताम्बूलं सर्वे जानन्ति एव। जीवने कदाचित् वा तत् सेवितवन्तः स्युः अपि सर्वे। आयुर्वेदः अपि वदति- ''ताम्बूलस्य सखे त्रयोदश गुणाः'' इति। ताम्बूलस्य त्रीणि अङ्गानि- सुधा, पूगफलं, नागवल्लीपत्रं चेति। ताम्बूलं यत् सेव्यते तत्र सुधाधिक्यं भवतु इति शत्रुः इच्छति। यतः सुधाधिक्ये जिह्वादाहः, ततश्च अस्वास्थ्यम्। शत्रोः एतदेव खलु प्रियम्? वैद्यः इच्छति पूगफलस्य आधिक्यं भवतु इति। पूगफलस्य आधिक्ये अस्वास्थ्यं वर्धते । तस्मात् वैद्यस्य आयोऽपि वर्धते। पत्राणि रागं (रक्तवर्णतां) वर्धयन्ति। अतः पत्नी तम् इच्छति। माता तु त्रितयस्यापि समत्वम् इच्छति। त्रितयस्य समत्वे एव आरोग्यकरत्वम्। पुत्रस्य हितम् एव खलु मातुः प्रियतमम्?

सुधाधिक्यं स्पृहेच्छत्रुः फलाधिक्यं स्पृहेत् भिषक् ।
पत्राधिक्यं स्पृहेज्ज्ञाया माता तु त्रितयं स्पृहेत्॥
कौपीनं भस्मना लेपो दर्भाः रुद्राक्षमालिका ।
मौनमेकान्तिता चेति मूर्खसञ्जीवनानि षट्॥

मूर्खोऽपि सुखेन यदि जीवितुम् इच्छति तर्हि तेन कौपीनं धृत्वा भस्मना शरीरस्य लेपनं करणीयम्। दर्भासने उपविश्य रुद्राक्षमालिका चालनीया हस्तेन। एकान्ते वसता तेन मौनम् अवलम्बनीयम् । एतावत् कृतं चेत् जनाः अहमहमिकया आगत्य प्रणमन्ति, अर्चन्ति, सत्कुर्वन्ति च। अतः मूर्खता अस्ति चेदपि चिन्ता न करणीया। वेषधारणात् जनप्रीतिः प्राप्तुं शक्या निश्चयेन।

स्मृते सीदन्ति गात्राणि दृष्टे प्रज्ञा विनश्यति।
अहो महदिदं भूतमुत्तमर्णाभिशब्दितम्॥

यस्य स्मरणमात्रेण शरीरं शक्तिहीनं भवेत्, यस्य दर्शनात् बुद्धिः कार्यासमर्था भवेत् सः कः? स तु अस्ति 'ऋणदाता'। तस्य महापिशाचस्य पीडा तु अवर्णनीया। अतः एव स्मरणमात्रात् एव शरीरे कम्पः। दर्शनेन तु जङ्घाबलं विलुप्यते! अतः एव प्राचीनैः उक्तम् - 'ऋणगर्ते पतनं विनाशाय' इति।

भाण्डानि शतसहस्रं भग्नानि मम मस्तके ।
अहो गुणवती भार्या भाण्डमूल्यं न याचते॥

कश्चन शान्तस्वभावः आसीत्। तस्य पत्नी तु चण्डी । यदा यदा कोपः प्राप्यते तदा तदा सा मृद्घटेन पतिं शिरसि प्रहरति । एवं शताधिकाः सहस्राधिकाः च घटाः भग्नाः । एतादृशीम् अपि पत्नीं सः वर्णयति - 'अहो, सा गुणवती!' इति । 'बहुवारं घटाः भग्नाः चेदपि तया एकवारम् अपि भाण्डमूल्यं न याचितम् । अतः सा गुणवती एव' इति अभिप्रैति सः । पीडाकरीं पत्नीम् अपि गुणवतीं कथयतः तस्य कथनं वयं किमर्थं निराकुर्याम?

घटं भिन्द्यात् पटं छिन्द्यात् कुर्यात् रासभरोहणम् ।
येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्॥

तार्किकाः सदापि 'घटः' 'पटः' 'रासभः' - इत्यादीन् शब्दान् एव उच्चारयन्तः भवन्ति उदाहरणावसरे। अतः कश्चित् तान् उपहसन् वदति - 'घटः भेत्तव्यः, पटः छेत्तव्यः, रासभः आरोढव्यः वा । केनचित् उपायेन प्रसिद्धिप्राप्तिः चिन्तनीया' इति। अद्य जनाः एतदेव कुर्वन्तः दृश्यन्ते। प्रसिद्धिप्राप्त्यर्थं विलक्षणान् अर्थहीनान् उपायान् आश्रयन्तोऽपि ते न लज्जन्ते ।

आपाण्डुराः शिरसिजाः त्रिवली कपोले
दन्तावली विगलिता न च मे विषादः।

एणीदृशो युवतः पथि मां विलोक्य
तातेति भाषणपराः खलु वज्रपातः।

वृद्धः कश्चन वदति- 'मम केशाः श्वेताः जाताः। मुखचर्माणि शिथिलानि जातानि। दन्ताः सर्वे पतिताः। तथापि मम विषादः न आसीत्। किन्तु मार्गे गच्छन्तं मां दृष्ट्वा ललनामणयः मां – 'भोः पितामहः ...!' इति सम्बोधयन्त्यः सम्भाषणं कुर्वन्ति यत्, तत् तु वज्राघातायते।

सारांशः

प्रत्येकस्य व्यक्तेः जीवने कानिचन् कार्याणि एदादृशानि भवन्ति यानि करणे सम्भवं प्रतिभान्ति। यदा कश्चन् जनः तान्येव कार्याणि संभवं करोति तदा अस्माभिः अनुभूयते यत् स बहु भाग्यशाली अस्ति। यथार्थतया असंभव-कार्यस्य करणाय यावत् परिश्रमस्य आवश्यकता भवति तावत् अस्माभिः कदापि न कृतम्। किमपि कार्यमसम्भवं नास्ति। किन्तु किञ्चित् कठिनं भवति। यदा किमपि कार्यं अत्यधिक-काठिन्येन भवति यं वयं सरलतया न कर्तुं शक्नुमः। तत्कार्यम् वयम् असम्भवं कथयामः। एषः एव असम्भवशब्दः यदा अस्माकं मनसि स्थीयते तदा वयं प्रयासमेव न कुर्मः। कोऽपि प्रभावः न भवति यदि भवता प्रयासः न कृतः। किमपि न भवितुं शक्नोति यदि भवता असम्भवं अमन्यत। किन्तु स्मरतु एतत् यत् एकस्मिन् दिवसे यः कोऽपि आगत्य असम्भवं कार्यं सम्भवं करिष्यति। एवं कृत्वा स जगति प्रतिभास्यति। तदा भवान् एवमेव कथयिष्यति यत् सः भाग्यशाली अस्ति। जगति परिश्रमी-जनानां न्यूनता नास्ति। भवान् नो चेत् अपरः कोऽपि आगत्य चक्रव्यूहभेदनं कृत्वा क्षणात् सर्वाणि असम्भवकार्याणि संभावयिष्यति। असम्भवशब्दं मनसः निष्कासयतुं शब्दोऽयं अग्रे वर्धनात् अपहीयते।

– **डॉ. राहुलरञ्जनः**
सहायक-प्राध्यापकः
संस्कृत-विभागः
मैत्रेयी-महविद्यालयः।

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

'सम्' उपसर्गपूर्वात् 'कृ' धातोः 'क्त' प्रत्यये कृते 'संस्कृतम्' इति पदं सिद्ध्यति । एतस्य अर्थं परिमार्जितं शुद्धं च अस्ति। संस्कृतभाषा भारतस्य प्राचीनतमा भाषा अस्ति। सा देववाणी अपि कथ्यते। प्राचीनकाले ऋषिमुनिभिः दोषरहिता परिष्कृता भाषा संस्कृतभाषा सम्बोधिता। प्राचीनकाले एषा लोकव्यवहारस्य भाषा असीत्। संस्कृतभाषायाः महत्त्वमधोलिखितमस्ति–

१. **संस्कृतस्य विशालवाङ्मयम्** - संस्कृतस्य वाङ्मयम् अतिविशालम् अस्ति । विश्वस्य प्राचीनतमः ग्रन्थ ऋग्वेदः अपि संस्कृतभाषायां लिखितम् अस्ति । वेद–उपनिषद्–आरण्यक–ब्राह्मणग्रन्थाः, स्मृतिग्रन्थाः, दर्शनशास्त्रम् च सर्वं अस्यामेव सन्ति। विश्वस्य सुप्रसिद्धानि महाकाव्यानि, गीतिकाव्यानि, नाटकानि च अपि संस्कृतभाषायां सन्ति।

१.१ रामायणम्- रामायणं एकः विश्वाख्यातः ग्रन्थः अस्ति। एषा रचना अपि संस्कृतभाषायां अस्ति। अद्य अस्य ग्रन्थस्य अनुवादकार्याणि अनेकासु भाषासु उपलभ्यन्ते।

१.२ चाणक्यनीतिः- चाणक्यस्य चाणक्यनीतिः विश्वस्य एकः सुप्रसिद्धः राजनैतिकः प्रामाणिकः च ग्रन्थः अस्ति। एषः अपि संस्कृतभाषायां प्राप्यते।

१.३ भगवद्गीता- एषः एकः धार्मिकग्रन्थः अस्ति। एषः महाभारतस्य भागः अस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे अनेकानि जीवनमूल्यानि वर्णितानि सन्ति।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मेघदूतम, स्वप्नवासवदत्तं, मुद्राराक्षसं, कुमारसंभवं, नीतिशतकं इत्यादि अपि संस्कृतस्य विश्वप्रख्यातग्रन्थाः सन्ति। संस्कृतस्य विपुलवाङ्मयं न केवलं भारते, अपितु पाश्चात्यविदुषामपि आकर्षयन्ति।

२. **भाषाशास्त्रीय अध्ययनं**- संस्कृतमेव विश्वस्य एका भाषा अस्ति, यस्याः व्याकरणस्य सूक्ष्मातिसूक्ष्मम् अध्ययनं प्राप्यते। अत्र ध्वनि- विज्ञानं, पद- विज्ञानं, अर्थविज्ञानं, वाक्य–विज्ञानं च सम्बद्धाः पर्यापप्ता अध्ययन- सामग्री प्राप्यते। उदाहरणतः आचार्य यास्केन-निरुक्ते पदस्य विषये उच्यते-

चत्वारि पदजातानि नामाख्यातोसर्गनिपाताश्च इति।– निरुक्तम्, 1.1

अर्थात् पदस्य चत्वारः प्राकाराः नाम, आख्यातं, उपसर्गः निपातः च सन्ति । पाणिनि पदविषये कथयति- **सुप्तिङन्तं पदं** । अर्थात् पदं द्विविधं सन्ति- सुबन्तं तिङन्तं च । पाणिनिः संस्कृतस्य वैयाकरण: । तैः प्रदत्तानां नियमानां अद्यापि उपयोगिता अस्ति। नासा अपि एतत् मन्यते- 'संस्कृतं एका वैज्ञानिकी प्रौद्योगिकी च भाषा अस्ति। पाणिनीय–अष्टाध्याय्याः नियमा: तंन्त्रांशे उपयोगिन:।' फ़ोर्ब्सपत्रिकायां सङ्गणकयंत्रस्य तंन्त्रांशे एका उपयोगी भाषा मन्यते ।

३. **संस्कृ**तभाषा **अनेकभाषा**णां **जननी**- संस्कृतभाषा विश्वस्य अनेकानां भाषाणां जननी अस्ति। सर्वप्रथमं सर विलियम जोन्समहोदयः कलकत्ताएशियाटिकसोसायटीसम्मेलने 1864तमे वर्षे एतस्मिन् विषये कथयति -

The Sanskrit language, whatever be its antiquity, is of a wonderful structure more perfect than Greek, more copious than Latin, and more exquisitely refined then either yet bearing to both of the stronger affinity..... that no philologer could examine them without believing them to sprung from a common source that perhaps no longer exists...

४. **संस्कृतस्य अध्ययन**म्- विश्वस्य अनेकेषु संस्थानेषु एतस्य अध्ययन- अध्यापनं प्रचलति । जर्मनी देशे एतस्य विंशतिः संस्थानानि सन्ति । जर्मनीदेशे अनेकेषु विद्यालयेषु अपि संस्कृतस्य अध्ययनं प्रचलति । अमेरिकी–महाद्वीपे अपि संस्कृतस्य अनेके विद्यालयाः महाविद्यालयाश्च सन्ति । तस्य टेक्सस–महाविद्यालये संस्कृतस्य सङ्गणकीय–भाषाशास्त्रीय–अध्ययनं प्रचलति। विदेशे अनेकेषु संस्थानेषु श्रुतिपरंपराया: अनुसर्जनं कृत्वा अध्ययनं प्रचलति ।

– **निहारिका खुराना**
स्नातक-तृतीयवर्षः
संस्कृत-विभाग:
मैत्रेयी-महविद्यालय:।

ਤਤਕਰਾ

1. ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਮੇਰਾ ਪਹਿਲਾ ਦਿਨ 2
2. ਮੇਰੀ ਦੁਨੀਆਂ 5
3. ਕਿਤਾਬਾਂ ਦਾ ਮਹੱਤਵ 6
4. ਮੇਰੀ ਪਹਿਲੀ ਮੈਟਰੋ ਰੇਲ ਯਾਤਰਾ 7
5. ਜ਼ਿੰਦਗੀ 8
6. ਕਿੱਥੇ ਜਾਕੇ ਵੱਸ ਗਈ ਮਾਂ 9
7. ਕਿੱਥੇ ਹੈ ਮਾਂ..... 10
8. ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ 11
9. ਸਾਇਬਰ ਅਪਰਾਧ ਵੱਲ ਵੱਧਦੀ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ 12
10. ਕ੍ਰਿਸਮਸ 14
11. 20ਵੀਂ ਸਦੀ ਦਾ ਸੰਤ ਕਵੀ: ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ 18
12. ਕਾਲਜ ਦੇ ਦਿਨ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ 23
13. ਜੀਭ ਰੰਲਾ ਪਾਉਂਦੀ ਏ ••• 24

ਤਤਕਰਾ

- ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਮੇਰਾ ਪਹਿਲਾ ਦਿਨ 2
- ਮੇਰੀ ਦੁਨੀਆਂ 5
- ਕਿਤਾਬਾਂ ਦਾ ਮਹੱਤਵ 6
- ਮੇਰੀ ਪਹਿਲੀ ਮੈਟਰੋ ਰੇਲ ਯਾਤਰਾ 7
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ 8
- ਕਿੱਥੇ ਜਾਕੇ ਵੱਸ ਗਈ ਮਾਂ 9
- ਕਿੱਥੇ ਹੈ ਮਾਂ..... 10
- ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ 11
- ਸਾਇਬਰ ਅਪਰਾਧ ਵੱਲ ਵੱਧਦੀ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ 12
- ਕ੍ਰਿਸਮਸ 14
- 20ਵੀਂ ਸਦੀ ਦਾ ਸੰਤ ਕਵੀ: ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ 18
- ਕਾਲਜ ਦੇ ਦਿਨ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ 23
- ਜੀਭ ਰੌਲਾ ਪਾਉਂਦੀ ਏ ••• 24

ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਮੇਰਾ ਪਹਿਲਾ ਦਿਨ

ਬਾਰ੍ਹਵੀਂ ਦੀ ਪਰੀਖਿਆ ਖਤਮ ਹੋਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮੈਂ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ ਹੋਈ ਕਿ ਹੁਣ ਸਕੂਲ ਦੇ ਦਿਨ ਖ਼ਤਮ । ਮੇਰੇ ਅੰਦਰ ਇਕ ਨਵਾਂ-ਨਵਾਂ ਚਾਅ ਪੈਦਾ ਹੋ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਹੁਣ ਤੁਸੀਂ ਸੋਚੋਗੇ ਕਿ ਮੈਂ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੀ ਚੋਰ ਹਾਂ? ਅਜਿਹਾ ਮੇਰੇ ਮਾਪਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਲੱਗ ਰਿਹਾ ਸੀ ਪਰ ਤੁਸੀਂ ਗਲਤ ਹੋ। ਮੈਨੂੰ ਇਹ ਖੁਸ਼ੀ ਇਸ ਲਈ ਹੋ ਹੀ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਹੁਣ ਮੈਂ ਵੀ ਹੋਰਨਾਂ ਵਾਂਗ ਕਾਲਜ ਦੀ ਵਿਦਿਆਰਥਣ ਬਣਨ ਜਾ ਰਹੀ ਹਾਂ। ਮੇਰੇ ਮੁਹੱਲੇ ਦੇ ਸਾਰੇ ਬੱਚੇ ਮੈਨੂੰ ਛੋਟੀ ਛੋਟੀ ਕਹਿ ਕੇ ਬਹੁਤ ਚਿੜਾਉਂਦੇ ਸਨ। ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਕਾਲਜ ਜਾਣ ਲੱਗ ਜਾਵਾਂਗੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰਿਆਂ ਦੇ ਮੂੰਹ ਬੰਦ ਹੋ ਜਾਣਗੇ। ਬਾਰਵੀਂ ਦਾ ਰਿਜਲਟ ਆਉਣ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਸਭ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਮੇਰੇ ਮਾਪਿਆਂ ਨੂੰ ਹੋਈ ਸੀ। ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਅੰਕ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੇ ਸੀ। ਹੁਣ ਮੈਨੂੰ ਦੋਹਰੀ ਖੁਸ਼ੀ ਹੋ ਰਹੀ ਸੀ ਇੱਕ ਤਾਂ ਵਧੀਆ ਅੰਕ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਦੀ, ਦੂਜੇ ਕਾਲਜ ਜਾਣ ਦੀ । ਚਲੋ, ਇਸ ਗੱਲ ਨੂੰ ਛੱਡੋ ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਦੱਸਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਕਾਲਜ ਗਈ ਤਾਂ ਮੇਰਾ ਪਹਿਲਾ ਦਿਨ ਕਿਵੇਂ ਬੀਤਿਆ। ਮੇਰੇ ਰਿਜ਼ਲਟ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮੇਰੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਮੇਰਾ ਦਾਖਲਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਕਰਵਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਸਨ ਲੇਕਿਨ ਨਾਲ਼ ਹੀ ਉਹ ਮੇਰੀ ਸੁਰੱਖਿਆ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਵੀ ਚਿੰਤਿਤ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸੋਚਿਆ ਕਿ ਉਹ ਅਜਿਹਾ ਕਾਲਜ ਦੇਖਣਗੇ ਜੋ ਕੁੜੀਆਂ ਦਾ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਵਧੀਆ ਵੀ ਹੋਵੇ। ਇਸ

ਨਿਰਣੇ ਦੇ ਨਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮੇਰਾ ਦਾਖਲਾ ਮੈਤ੍ਰੇਈ ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਕਰਾ ਦਿੱਤਾ। ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਬਸ ਆਪਣੇ ਖੰਭ ਚਾਹੀਦੇ ਸਨ । ਮੇਰੇ ਪਾਪਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਸਨ ਕਿ ਮੈਂ ਇਕ ਵਾਰੀ ਆਪਣਾ ਕਾਲਜ ਦੇਖ ਆਵਾਂ ਅਤੇ ਆਪਣੀਆਂ ਅਧਿਆਪਿਕਾਵਾਂ ਨਾਲ ਮਿਲ ਲਵਾਂ। ਮੈਂ ਪਾਪਾ ਦੀ ਗੱਲ ਤੋਂ ਸਹਿਮਤ ਸੀ ਤੇ ਕਾਲਜ ਜਾਣ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਕਰਕੇ ਮੈਂ ਪੂਰੀ ਰਾਤ ਨਾ ਸੁੱਤੀ। ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਮੈਂ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠ ਕੇ ਕਾਲਜ ਜਾਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੋ ਗਈ। ਪਾਪਾ ਨੇ ਕਾਰ ਕੱਢੀ ਤੇ ਅਸੀਂ ਉਸ ਵਿੱਚ ਬੈਠ ਕੇ ਕਾਲਜ ਲਈ ਰਵਾਨਾ ਹੋ ਗਏ। ਮੈਂ ਕਾਰ ਵਿੱਚੋਂ ਉਤਰ ਕਰ ਕਾਲਜ ਨੂੰ ਨਿਹਾਰਨ ਲੱਗ ਪਈ । ਮੇਰੇ ਪਾਪਾ ਕਾਰ ਪਾਰਕ ਕਰਨ ਲਈ ਚਲੇ ਗਏ। ਮੈਂ ਹਾਲੇ ਵੀ ਕਾਲਜ ਨੂੰ ਹੀ ਦੇਖ ਰਹੀ ਸੀ। ਮੈਂ ਇੰਨਾ ਵੱਡਾ ਕਾਲਜ ਸਿਰਫ ਫ਼ਿਲਮਾਂ ਅਤੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਹੀ ਦੇਖਿਆ ਸੀ। ਮੈਂ ਅੰਦਰ ਜਾਣ ਲਈ ਬਹੁਤ ਉਤਸੁਕ ਸੀ। ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਪਾਪਾ ਨਾਲ ਕਾਲਜ ਅੰਦਰ ਦਾਖਲ ਹੋ ਰਹੀ ਸੀ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਕਾਲਜ ਦੇ ਮੇਨ ਗੇਟ 'ਤੇ ਰੋਕ ਲਿਆ ਗਿਆ। ਮੈਨੂੰ ਲੱਗਿਆ ਕਿ ਇਹ ਸਾਨੂੰ ਸ਼ਾਇਦ ਅੰਦਰ ਜਾਣ ਤੋਂ ਮਨਾ ਕਰ ਰਹੇ ਹੋਣ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅਸੀਂ ਅੰਦਰ ਕਿਸ ਕੰਮ ਤੋਂ ਜਾਣਾ ਹੈ? ਇਸੇ ਦੌਰਾਨ ਦੋ ਪੁਲਿਸ ਵਾਲੇ ਵੀ ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਆ ਗਏ ਮੈਨੂੰ ਲੱਗਿਆ ਕਿ ਇਹ ਸਾਨੂੰ ਸ਼ਾਇਦ ਕੋਈ ਚੋਰ-ਡਾਕੂ ਸਮਝ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਹ ਸਾਨੂੰ ਗ੍ਰਿਫਤਾਰ ਕਰ ਲੈਣਗੇ, ਮੈਂ ਡਰਦੇ ਮਾਰੇ ਆਪਣੇ ਹੱਥ ਪਿੱਛੇ ਕਰ ਲਏ। ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਮਨ ਵਿਚ ਕੀ ਕੁਝ ਸੋਚੀ ਜਾ ਰਹੀ ਸੀ। ਅਚਾਨਕ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨਾਲ ਹੀ ਬੋਲਣ ਲੱਗ ਪਈ ਕਿ ਮੈਨੂੰ ਛੱਡ ਦਿਓ, ਮੈਂ ਕੋਈ ਗਲਤ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ। ਮੇਰੀ ਘਬਰਾਹਟ ਵੇਖ ਕੇ ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਆਏ ਪੁਲਸਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਅਤੇ ਗਾਰਡ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਕੋਲ ਬਿਠਾਇਆ ਤੇ ਮੈਨੂੰ ਪਾਣੀ ਪਿਲਾਇਆ। ਮੇਰੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਸੁਣ ਕੇ ਮੇਰੇ ਪਾਪਾ ਵੀ ਮੇਰੇ ਉਪਰ ਹੱਸ ਰਹੇ ਸਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਕਿਹਾ “ਤੁਸੀਂ ਆਪਣਾ ਹੱਥ ਅੱਗੇ ਕਰੋ ਬੁਖਾਰ ਨਾਪਣਾ ਹੈ” ਸੱਚਮੁੱਚ ਮੈਨੂੰ ਇੰਨੀ ਸ਼ਰਮ ਆਈ ਕਿ ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਦੱਸ ਵੀ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ। ਜੀ ਹਾਂ! ਸਾਨੂੰ ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਅੰਦਰ ਜਾਣ ਲਈ ਬੁਖ਼ਾਰ ਨਪਵਾਉਣਾ ਅਤੇ ਟੀਕਾਕਰਨ ਦਾ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਦਿਖਾਉਣਾ ਵੀ ਜਰੂਰੀ ਸੀ। ਮੇਰੇ ਕਾਲਜ ਦਾਖ਼ਲੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਕੋਵਿਡ-19 ਬੀਮਾਰੀ ਫੈਲ ਰਹੀ ਸੀ। ਉਹ ਇੰਨੀ ਖਤਰਨਾਕ ਸੀ ਕਿ ਉਸ ਬਿਮਾਰੀ ਦੇ ਖੌਫ਼ ਕਾਰਨ ਸਾਰੇ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਮਾਸਕ ਲਗਾ ਰੱਖੇ ਸਨ। ਮੈਂ ਵੀ ਮਾਸਕ ਲਗਾਇਆ ਹੋਇਆ ਸੀ ਅਤੇ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਵੀ ਨਾਲ ਰੱਖਿਆ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਮੈਨੂੰ ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਐਂਟਰੀ ਤਾਂ ਮਿਲ ਗਈ ਪਰ ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਵੜਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮੈਨੂੰ ਇਹ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਆ ਰਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਮੈਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕਿੱਥੇ ਜਾਵਾਂ? ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਮੈਂ ਆਪਣੀ ਕਲਾਸ ਵਿੱਚ ਗਈ, ਕਲਾਸ ਰੂਮ ਵੇਖ ਕੇ ਮੈਨੂੰ ਬਹੁਤ ਚੰਗਾ ਲੱਗਿਆ । ਕਲਾਸ ਨੂੰ ਵੇਖਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮੈਂ ਆਪਣੀਆਂ ਅਧਿਆਪਿਕਾਵਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਲਈ ਸਟਾਫ ਰੂਮ ਗਈ। ਇੱਥੇ ਮੈਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਅਧਿਆਪਿਕਾਵਾਂ ਮੌਜੂਦ ਸਨ। ਮੈਂ ਹਿੰਮਤ ਕਰ ਕੇ ਸਟਾਫ ਰੂਮ ਦੇ ਅੰਦਰ ਗਈ ਤੇ ਸਭ ਨੂੰ ‘ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ’ ਆਖਿਆ। ਅਧਿਆਪਿਕਾਵਾਂ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ‘ਜੀ ਆਇਆਂ ਨੂੰ’ ਆਖਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਪਹਿਲੇ ਦਿਨ ਦੀ ਵਧਾਈ ਦਿੱਤੀ ਅਤੇ ਅੱਗੇ ਵੱਧਣ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਵੀ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਅਸੀਸਾਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਅਤੇ ਕਾਲਜ ਬਾਰੇ ਦੱਸਿਆ। ਉਹਨਾਂ ਨਾਲ ਲਗਭਗ ਅੱਧਾ ਘੰਟਾ ਹੀ ਗੁਜ਼ਾਰਿਆ ਸੀ ਕਿ ਮੈਂ ਆਪਣੀ ਅਧਿਆਪਿਕਾਵਾਂ ਨਾਲ ਏਨੀ ਰਲ ਮਿਲ ਗਈ ਸੀ ਕਿ ਹੁਣ ਤੁਹਾਨੂੰ ਕੀ ਦੱਸਾਂ.... ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਗੱਲ ਕਰਕੇ ਮੈਨੂੰ ਇਹ ਤਾਂ ਪਤਾ ਲੱਗ ਗਿਆ ਕਿ ਉਹ ਬਹੁਤ ਮਿਲਣਸਾਰ ਸਨ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮੈਂ

ਮੇਰੀ ਮਨਪਸੰਦ ਥਾਂ ਜਥੇ ਮੇਰਾ ਸਭ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਦਿਲ ਲੱਗਦਾ ਸੀ ਲਾਇਬਰੇਰੀ ਪਹੁੰਚ ਗਈ ਉਥੇ ਪਹੁੰਚ ਕਰ, ਮੈਂ ਵੇਖਿਆ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਕੁੜੀਆਂ ਲਾਇਬਰੇਰੀ ਵਿੱਚ ਸਨ ਸ਼ਾਇਦ ਕੋਵਿਡ ਕਰਕੇ। ਇਹ ਸਭ ਵੇਖ ਕੇ ਮੈਨੂੰ ਅੰਦਰੋਂ ਅੰਦਰ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ੀ ਹੋ ਰਹੀ ਸੀ। ਖੁਸ਼ੀ ਖੁਸ਼ੀ ਵਿਚ ਮੇਰੀ ਚੀਕ ਨਿਕਲ ਗਈ ਬਸ ਫੇਰ ਕੀ ਸੀ? ਉਥੇ ਮੌਜੂਦ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਦੇਖਿਆ। ਹੁਣ ਉਹ ਕਿਉਂ ਦੇਖਣ ਲੱਗ ਪਏ ਇਹ ਦੱਸਣ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ। ਇਹ ਮੇਰੇ ਲਈ ਦੂਜਾ ਸ਼ਰਮਿੰਦਗੀ ਵਾਲਾ ਸਮਾਂ ਸੀ। ਮੈਂ ਜਲਦੀ ਤੋਂ ਜਲਦੀ ਲਾਇਬਰੇਰੀ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਆਈ। ਅੱਗੇ ਮੈਂ ਕੰਟੀਨ ਦੀ ਭਾਲ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਕੰਟੀਨ ਪਹੁੰਚੀ ਪਰ ਕੈਂਟੀਨ ਤਾਂ ਬੰਦ ਸੀ। ਕੰਟੀਨ ਦੇ ਬਾਹਰ ਲਿਖਿਆ ਹੋਇਆ ਸੀ “ਕੋਵਿਡ ਦੇ ਕਾਰਨ ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਕੰਟੀਨ ਬੰਦ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ” ਪਰ ਮੈਨੂੰ ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਭੁੱਖ ਲੱਗ ਰਹੀ ਸੀ। ਕੈਨਟੀਨ ਦੇ ਬਾਹਰ ਖੜ੍ਹੀ ਦੇਖ ਇੱਕ ਕੁੜੀ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਆਈ ਤੇ ਕਹਿਣ ਲੱਗੀ “ਤੁਹਾਨੂੰ ਭੁੱਖ ਲੱਗ ਰਹੀ ਹੈ ? ” ਮੈਂ ਵੀ ਹਾਂ ਵਿਚ ਸਿਰ ਹਿਲਾ ਦਿੱਤਾ। ਉਸ ਕੁੜੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਬੈਗ ਵਿਚੋਂ ਚਿੱਪਸ ਦਾ ਪੈਕਟ ਕੱਢ ਕੇ ਦੇ ਦਿੱਤਾ ਮੇਰੇ ਮਨ੍ਹਾਂ ਕਰਨ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਵੀ ਉਹਨੇ ਮੈਨੂੰ ਇਹ ਕਹਿ ਦਿੱਤਾ ‘ਜਦੋਂ ਭੁੱਖ ਲੱਗੇ ਤਾਂ ਜਲਦੀ ਕੁਝ ਖਾ ਲੈਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਬੀਮਾਰ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਾਂ।’ ਸ਼ਾਇਦ ਉਹ ਕੁੜੀ ਸਾਇੰਸ ਦੀ ਵਿਦਿਆਰਥਣ ਸੀ। ਓਹਦਾ ਨਾਂ ਜਾਨਣ ਲਈ ਪੁੱਛਣ ਹੀ ਵਾਲੀ ਸੀ ਕਿ ਉਸ ਨੇ ਕਿਹਾ “ ਮੈਂ ਜੀਯਾ ਤੁਹਾਡੀ ਸੀਨੀਅਰ ਹਾਂ” ਮੈਨੂੰ ਇੱਕ ਮਿੰਟ ਤਾਂ ਇਹ ਲੱਗਿਆ ਕਿ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਮਖੌਲ ਤਾਂ ਨਹੀ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਸੀਨੀਅਰ ਜੂਨੀਅਰ ਨੂੰ ਤੰਗ ਕਰਦੇ ਸਨ ਪਰ ਉਸ ਨੇ ਮੇਰੀ ਬਹੁਤ ਮਦਦ ਕੀਤੀ ਹੈ ਉਹ ਸਚਮੁੱਚ ਬਹੁਤ ਪਿਆਰੀ ਸੀ। ਮੇਰੀ ਸੀਨੀਅਰ ਨੇ ਕਾਲਜ ਬਾਰੇ ਸਭ ਕੁਝ ਦੱਸਿਆ। ਮੇਰਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਦਿਨ ਇੰਝ ਬੀਤਿਆ ਜਿਵੇਂ ਉਹ ਮੇਰੀ ਸੱਚੀ ਸਹੇਲੀ ਹੋਵੇ। ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਮੇਰੀ ਸੀਨੀਅਰ ਮੈਨੂੰ ਕਾਲਜ ਦੇ ਗਾਰਡਨ ਵਿਚ ਛੱਡ ਕੇ ਚਲੀ ਗਈ ਤੇ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਪਾਪਾ ਕੋਲ ਚਲੀ ਗਈ । ਪਾਪਾ ਨੇ ਮੇਰੀਆਂ ਕਾਲਜ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਤਸਵੀਰਾਂ ਖਿੱਚੀਆਂ ਫਿਰ ਅਸੀਂ ਕਾਰ ਵਿੱਚ ਬੈਠ ਗਏ। ਕਾਰ ‘ਚ ਬੈਠ ਕੇ ਕਾਲਜ ਅੰਦਰ ਗੁਜ਼ਾਰੇ ਸਮੇਂ ਬਾਰੇ ਸੋਚਣ ਲੱਗ ਗਈ ਇਨ੍ਹਾਂ ਖਿਆਲਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਕਦ ਅਸੀਂ ਘਰ ਪਹੁੰਚ ਗਏ ਮੈਨੂੰ ਪਤਾ ਵੀ ਨਹੀਂ ਲੱਗਿਆ। ਮੇਰਾ ਕਾਲਜ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਦਿਨ ਬਹੁਤ ਵਧੀਆ ਰਿਹਾ।

ਦਿਵਯਾ ਗੁਪਤਾ ,

ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ)

ਪਹਿਲਾ ਸਾਲ

ਮੇਰੀ ਦੁਨੀਆਂ

ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵੱਖੋ ਵੱਖਰੀ
ਪਰ ਮੇਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਮੇਰਾ ਬਾਪੂ
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮੈਨੂੰ ਦੁਨੀਆਂ ਸੰਗ ਮਿਲਵਾਇਆ
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਉਂਗਲੀ ਪਕੜ ਕੇ ਚੱਲਣਾ ਸਿਖਾਇਆ,
ਮੈਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਇਆ ਤੇ ਲਿਖਾਇਆ
ਹਰ ਇੱਕ ਸ਼ੌਕ ਪੁਗਾਇਆ
ਆਪਣਾ ਪੁੱਤ ਕਹਿ ਕੇ ਬੁਲਾਇਆ
ਬੇਬੇ ਦੀ ਝਿੜਕ ਤੋਂ ਬਚਾਇਆ
ਸੁਪਨੇ ਮੇਰਿਆਂ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਾਇਆ
ਜਿਸ ਦੇ ਨਾਲ ਸਾਂਝੀ ਕਰ ਸਕਦੀਆਂ,
ਮੈਂ ਮੇਰੀਆਂ ਗੱਲਾਂ
ਜਿਸ ਨੂੰ ਮੈਂ ਆਪਣਾ ਰੱਬ ਹੀ ਨਹੀਂ
ਰੱਬ ਤੋਂ ਵੀ ਹੈ, ਜ਼ਿਆਦਾ ਮੰਨਿਆ
ਕਰ ਰਹੀ ਹਾਂ ਉਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਗੱਲਾਂ
ਕਿਉਂਕਿ ਮੇਰਾ ਬਾਪੂ ਹੈ ਮੇਰੀ ਦੁਨੀਆਂ।

ਬਿਪਾਸ਼ਾ,
ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ), ਪਹਿਲਾ ਸਾਲ

ਕਿਤਾਬਾਂ ਦਾ ਮਹੱਤਵ

ਗੁੰਜਨ, ਪਹਿਲਾ ਸਾਲ

ਕਿਤਾਬਾਂ ਸਾਡੀਆਂ ਦੋਸਤ ਹਨ, ਉਹ ਹਮੇਸ਼ਾ ਸਾਡੇ ਉਤੇ ਆਪਣਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕੁਰਬਾਨ ਕਰਨ ਲਈ ਤਿਆਰ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਕਿਤਾਬਾਂ ਸਾਨੂੰ ਮਨੋਰੰਜਨ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਚੰਗਾ ਜੀਵਨ ਜੀਉਣ ਦੀ ਰਾਹ ਵੀ ਦਿਖਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਉਹ ਬਦਲੇ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ ਤੋਂ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ ਲੈਂਦੀਆਂ ਹਨ ਤੇ ਸਗੋਂ ਉਹ ਸਾਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਦਿੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਕਿਤਾਬਾਂ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਸਾਥੀ ਜਾਂ ਮਿੱਤਰ ਹੋਰ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਜੋ ਹਮੇਸ਼ਾ ਚੰਗੇ ਮਾੜੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਸਾਡੀ ਹਰ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਦਾ ਹੱਲ ਲੱਭਣ ਵਿੱਚ ਮਦਦ ਕਰਦਾ ਹੋਵੇ। ਕਿਤਾਬਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਣ ਨਾਲ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਮਹਾਨ ਕਾਰਜ ਕਰਨ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਵੀ ਜਾਗਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਕਿਤਾਬਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਦਾ ਭੰਡਾਰ ਵੀ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕਿਤਾਬਾਂ ਅੱਜ ਦੀ ਮਨੁੱਖੀ ਸੱਭਿਅਤਾ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਦਾ ਮੁੱਖ ਹਿੱਸਾ ਬਣ ਚੁੱਕੀਆਂ ਹਨ। ਕਿਤਾਬਾਂ ਦੁਆਰਾ ਇੱਕ ਪੀੜ੍ਹੀ ਦਾ ਗਿਆਨ ਦੂਜੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਸਾਰੇ ਜਗਤ ਵਿੱਚ ਫੈਲਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸੋਚ, ਰਸਮ ਜਾਂ ਭਾਵਨਾ ਨੂੰ ਫੈਲਾਉਣ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਸ਼ਕਤੀਸ਼ਾਲੀ ਸਾਧਨ ਹਨ। ਕਿਤਾਬਾਂ ਨਾਲ ਹੀ ਵੱਡੇ-ਵੱਡੇ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਤਰੱਕੀ ਹਾਸਲ ਕੀਤੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਤਾਬਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਹੀ ਇੰਨ੍ਹਾ ਸਾਰਾ ਗਿਆਨ ਹਾਸਲ ਕੀਤਾ ਹੈ । ਕਿਤਾਬਾਂ ਤੋਂ ਹੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਲੈ ਕੇ ਲੇਖਕ ਆਪਣੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਲਿਖਦੇ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਸਾਡੇ ਮਨ ਦੇ ਅੰਦਰ ਕੁਝ ਸਿੱਖਣ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਜਾਗਦੀ ਹੈ। ਕਿਤਾਬਾਂ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ ਜਿਵੇਂ – ਇਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੇ ਸਿਲੇਬਸ ਵਿਚ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਕੀਤੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਅਤੇ ਦੂਜੀਆਂ ਸਿਲੇਬਸ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਜਿਵੇਂ ਕਵਿਤਾ, ਨਾਵਲ, ਨਾਟਕ, ਹਾਸ, ਵਿਅੰਗ ਆਦਿ ਦੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ। ਇਸ ਲਈ ਅਸੀਂ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਇਹੀ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਕਿਤਾਬਾਂ ਜੀਵਨ ਦਾ ਇਕ ਬਹੁਤ ਹੀ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਅੰਗ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਿਲਕੁਲ ਅਧੂਰੀ ਹੈ, ਇਹ ਸਾਡੇ ਲਈ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਕਿਤਾਬਾਂ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਤੇ ਇਹਨਾਂ ਤੋਂ ਮਨ ਨਹੀਂ ਚੁਰਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ।

ਗੁੰਜਨ,

ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ), ਪਹਿਲਾ ਸਾਲ

ਮੇਰੀ ਪਹਿਲੀ ਮੈਟਰੋ ਰੇਲ ਯਾਤਰਾ

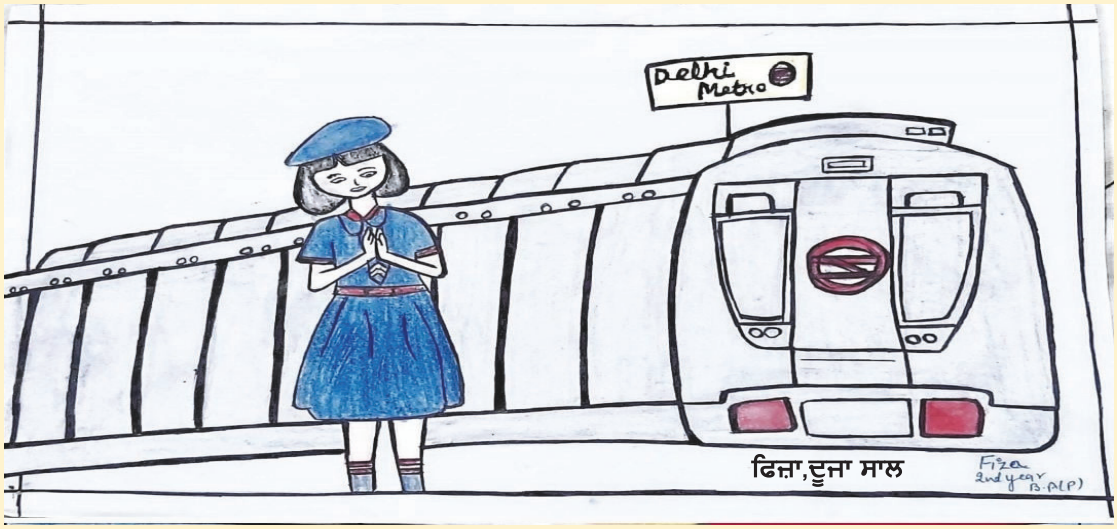

ਅੱਜ ਦੇ ਯੁਗ ਵਿੱਚ ਇਨਸਾਨਾਂ ਨੇ ਬੜੀ ਤਰੱਕੀ ਕਰ ਲਈ ਹੈ । ਨਵੀਆਂ ਨਵੀਆਂ ਇਜਾ਼ਤਾਂ ਨਾਲ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬੜੀ ਸਹਿਜ ਅਤੇ ਸਰਲ ਹੋ ਗਈ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਨਵੀ ਤਕਨੈਲਜੀ ਬਾਰੇ ਗੱਲ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਉਸ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਉਦਾਹਰਣ ਹੈ – 'ਮੈਟਰੋ ਰੇਲ' ਜਿਸ ਰਾਹੀਂ ਅਸੀਂ ਲੰਬੀ ਤੋਂ ਲੰਬੀ ਦੂਰੀ ਵੀ ਬੜੀ ਛੇਤੀ ਨਾਲ ਤੈਅ ਕਰ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ। ਮੈਟਰੋ ਦੀ ਸਹੁਲਤ ਕਰਕੇ ਸਾਡੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਵੀ ਬਚਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜੇ ਮੈਂ ਆਪਣੀ ਗੱਲ ਕਰਾਂ ਤਾਂ ਮੇਰੀ ਇਕ ਮਿੱਠੀ ਯਾਦ ਜੁੜੀ ਹੈ ਮੈਟਰੋ ਰੇਲ ਨਾਲ । ਕਾਲਜ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਦਿਨ ਮੇਰਾ ਮਨ ਉਤਸ਼ਾਹ ਨਾਲ ਭਰਿਆ ਸੀ ਕਿ ਮੈਂ ਮੈਟਰੋ ਰਾਹੀਂ ਕਾਲਜ ਜਾਵਾਂਗੀ। ਅੱਜ ਤਾਂ ਮੈਟਰੋ ਦੀ ਠੰਡੀ–ਠੰਡੀ ਹਵਾ ਵਿੱਚ ਬੈਠਕੇ ਜਲਦੀ ਹੀ ਕਾਲਜ ਪਹੁੰਚ ਜਾਵਾਂਗੀ। ਮੈਨੂੰ ਇਕ ਅਲਗ ਹੀ ਖੁਸ਼ੀ ਸੀ। ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਮੈਂ ਸਮਾਟ-ਕਾਰਡ ਲਿਆ ਅਤੇ ਮੈਟਰੋ ਸਟੇਸ਼ਨ ਦੇ ਅੰਦਰ ਦਾਖਲ ਹੋ ਗਈ। ਆਪਣੀ ਮੈਟਰੋ ਦੇ ਆਉਣ ਦਾ ਇੰਤਜ਼ਾਰ ਕਰਨ ਲੱਗੀ। ਮੈਟਰੋ ਆਈ ਤੇ ਮੈਂ ਅੰਦਰ ਬੈਠ ਗਈ ਜਦੋਂ ਅਗਲਾ ਸਟੇਸ਼ਨ ਆਇਆ ਤਾਂ ਮੈਨੂੰ ਅਚਾਨਕ ਚੇਤਾ ਆਇਆ ਕਿ ਮੈਂ ਦੂਸਰੇ ਰੂਟ ਦੀ ਮੈਟਰੋ ਵਿੱਚ ਬੈਠ ਗਈ ਹਾਂ। ਮੈਨੂੰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਦੇ ਉੱਤੇ ਬਹੁਤ ਗੁੱਸਾ ਵੀ ਆਇਆ ਤੇ ਹਾਸਾ ਵੀ । ਮੈਂ ਅਗਲੇ ਸਟੇਸ਼ਨ ਤੇ ਉੱਤਰ ਕੇ ਦੂਸਰੇ ਪਲੈਟਫਾਰਮ ਤੋਂ ਗੱਡੀ ਲਈ ਫਿਰ ਸਾਹ ਵਿਚ ਸਾਹ ਆਇਆ। ਯਾਤਰਾ ਜਾਰੀ ਸੀ ਕਿ ਅਚਾਨਕ ਤੀਸਰੇ ਸਟੇਸ਼ਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਕੁਝ ਯਾਤਰੀਆਂ ਵਿੱਚ ਝਗੜਾ ਹੋ ਗਿਆ। ਸ਼ਾਇਦ ਕਿਸੇ ਦਾ ਪਰਸ ਚੋਰੀ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ। ਉਹ ਬੰਦਾ ਬਹੁਤ ਪਰੇਸ਼ਾਨੀ ਵਿੱਚ ਸੀ। ਝਗੜੇ ਕਰਕੇ ਗੱਡੀ ਰੋਕਣੀ ਪਈ ਤੇ ਪੁਲਸ ਆ ਕੇ ਕੁੱਝ ਬੰਦਿਆਂ ਨੂੰ ਨਾਲ ਲੈ ਗਈ। ਮੈਂ ਵੀ ਆਪਣਾ ਪਰਸ ਅਤੇ ਮੋਬਾਇਲ ਫੋਨ ਚੈਕ ਕਰਨ ਲੱਗੀ ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਜਗ੍ਹਾ ਤੇ ਵੇਖ ਕੇ ਮੈਨੂੰ ਤਸੱਲੀ ਹੋਈ। ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਸਾਮਾਨ ਦਾ ਆਪ ਧਿਆਨ ਰੱਖਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ, ਬੇਫ਼ਿਕਰ ਹੋ ਕੇ ਯਾਤਰਾ ਨਹੀਂ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ। ਆਖਿਰ ਮੇਰਾ ਸਟੇਸ਼ਨ ਆ ਗਿਆ । ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਕਾਲਜ ਬੜੇ ਆਰਾਮ ਨਾਲ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਪਹੁੰਚ ਗਈ। ਮੈਨੂੰ ਆਪਣੀ ਪਹਿਲੀ ਮੈਟਰੋ ਯਾਤਰਾ ਹਮੇਸ਼ਾ ਯਾਦ ਰਹੇਗੀ।

ਮੀਤ ਭੋਲਾ,
ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ), ਪਹਿਲਾਂ ਸਾਲ

ਜ਼ਿੰਦਗੀ

- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਸੁੰਦਰਤਾ ਹੈ, ਇਸ ਦੀ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਾ ਕਰੋ।
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇਕ ਨਜ਼ਾਰਾ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਖੁੱਲ ਕੇ ਜੀਓ।
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇਕ ਸੁਪਨਾ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਸਾਕਾਰ ਕਰੋ।
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇਕ ਚੁਣੌਤੀ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਸਵੀਕਾਰ ਕਰੋ।
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇਕ ਫਰਜ਼ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰੋ।
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇੱਕ ਖੇਡ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਜ਼ਿੰਮੇਦਾਰੀ ਨਾਲ ਖੇਡੋ।
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇਕ ਵਾਅਦਾ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਦਿੱਲੋਂ ਨਿਭਾਓ।
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇਕ ਕਲਾ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਹੋਰ ਨਿਖਾਰੋ।
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇਕ ਗੀਤ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਗਾਓ।
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇਕ ਦੁਖਾਂਤ ਹੈ, ਇਸ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰੋ।
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਹੁਤ ਕੀਮਤੀ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਤਬਾਹ ਨਾ ਕਰੋ।
- ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇਕ ਫੁੱਲ ਹੈ, ਉਸ ਦੀ ਖ਼ੁਸ਼ਬੂ ਨੂੰ ਫੈਲਾਉ।

ਕਾਜਲ
ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ),
ਪਹਿਲਾਂ ਸਾਲ

ਕਿੱਥੇ ਜਾਕੇ ਵੱਸ ਗਈ ਮਾਂ

ਪਾਰੁਲ, ਤੀਜਾ ਸਾਲ

ਗਿੱਲੇ ਪੋਤੜੇ ਸਾਡੇ ਸੁਕਾਉਂਦੀ ਸੀ
ਚੂਰੀ ਕੁੱਟ ਕੇ ਸਾਨੂੰ ਖਵਾਉਂਦੀ ਸੀ।
ਸੱਟ ਜਦ ਲੱਗਦੀ ਵਰ੍ਹਾ ਲੈਂਦੀ ਸੀ
ਹੁਣ ਵਰਾਉਣ ਆਉ ਸਾਨੂੰ ਕਿਹੜਾ ਮਾਂ?
ਕੋਠੇ ਉੱਤੇ ਬੈਠ ਰੋਂਦਾ ਪਿਆ ਇਕ ਚਿਹਰਾ
ਕਿੱਥੇ ਜਾ ਕੇ ਵੱਸ ਗਈ ਮਾਂ ਸੁੰਨਾ ਕਰ ਸਾਡਾ ਵਿਹੜਾ?
ਤੇਰੀ ਹੱਥ ਦੀਆਂ ਰੋਟੀਆਂ ਨੂੰ ਤਰਸਣਗੇ ਧੀ-ਪੁੱਤ
ਖੂੰਜੇ ਲੱਗ-ਲੱਗ ਭਰੇ ਹੁਣ ਸਬਰਾਂ ਦਾ ਘੁੱਟ
ਛੋਟੀ ਭੈਣ ਦਾ ਵੀ ਡਿਕ-ਡੋਲੇ ਖਾਵੇ ਹੁਣ ਚਿੱਤ
ਕਿੱਥੋਂ ਕਰਾਂਗੇ ਤਕੜਾ ਜੇਰਾ
ਕੋਠੇ ਉੱਤੇ ਬੈਠ ਰੋਂਦਾ ਪਿਆ ਇਕ ਚਿਹਰਾ
ਕਿੱਥੇ ਜਾ ਕੇ ਵੱਸ ਗਈ ਮਾਂ ਸੁੰਨਾ ਕਰ ਸਾਡਾ ਵਿਹੜਾ?
ਬਹੁਤ ਰੀਝਾਂ ਦਿਲ ਦੀਆਂ ਦਿਲ ਵਿਚ ਰਹਿ ਗਈਆਂ
ਸੁਪਨੇ ਵਾਲਿਆਂ ਕੋਠਿਆਂ ਪਲਾਂ ਵਿੱਚ ਢਹਿ ਗਈਆਂ
ਆਵਾਜ਼ ਨੀਂ ਪੈਣੀ ਤੇਰੀ ਕੰਨਾਂ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ
ਫੋਟੋ ਨੂੰ ਹਿੱਕ ਨਾਲ ਲਾਉਣ ਧੀ-ਪੁੱਤ ਤੇਰੇ
ਕੋਠੇ ਉਤੇ ਬੈਠ ਰੋਂਦਾ ਪਿਆ ਇਕ ਚਿਹਰਾ
ਕਿੱਥੇ ਜਾ ਕੇ ਵੱਸ ਗਈ ਮਾਂ ਸੁੰਨਾ ਕਰ ਸਾਡਾ ਵਿਹੜਾ?
ਕਿੱਥੇ ਜਾ ਕੇ ਵਸ ਗਈ ਮਾਂ ਸੁੰਨਾ ਕਰ ਸਾਡਾ ਵਿਹੜਾ?

ਉਪਾਸਨਾ ਜੋਸ਼ੀ,
ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਪਹਿਲਾ ਸਾਲ

ਕਿੱਥੇ ਹੈ ਮਾਂ.....

ਮਾਂ ਬਗੈਰ ਕੀ ਦੱਸਾਂ ਜੀਵਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਕਿਵੇਂ
ਜਿਵੇਂ ਬਿਨ ਸਾਗਰ ਸੁੱਕੀ ਨਾਓ ਵਾਂਗ
ਰੋ ਰੋ ਕੇ ਮਾਂ, ਮੈਂ ਆਪਣੀ ਰਾਤ ਬਿਤਾਉਂਦੀ
ਰਾਤਾਂ ਨੂੰ ਮੈਨੂੰ ਨੀਂਦ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ
ਮੇਰੇ ਤੋਂ ਮਾਂ ਮੂੰਹ ਕਿਉਂ ਇੰਝ ਮੋੜ ਗਈ
ਮੈਨੂੰ ਇੰਜ ਇਕੱਲਾ ਕਿਉਂ ਛੱਡ ਗਈ
ਹੁਣ ਮੈਂ ਜੀਵਾਂ ਕਿਵੇਂ ਤੇਰੇ ਬਗੈਰ
ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਜਿਵੇਂ ਜੀ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ ਤੇਰੇ ਬਗੈਰ
ਜਿਵੇਂ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਸੀ ਮਾਂ ਤੂੰ ਮੈਨੂੰ ਬੁਲਾਉਂਦੀ
ਹੁਣ ਉਹ ਹੀ ਯਾਦ ਮੈਨੂੰ ਅਕਸਰ ਰੁਆਉਂਦੀ
ਬਸ ਤੇਰੀਆਂ ਯਾਦਾਂ ਦਾ ਹੈ ਢੇਰ
ਤੈਨੂੰ ਸੋਚ ਸੋਚ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਸਵੇਰ
ਮੇਰੇ ਤੋਂ ਮਾਂ ਮੂੰਹ ਕਿਉਂ ਇੰਝ ਮੋੜ ਗਈ
ਮੈਨੂੰ ਇੰਜ ਇਕੱਲਾ ਕਿਉਂ ਛੱਡ ਗਈ

ਅਸ਼ਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ ,
ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ)
ਪਹਿਲਾ ਸਾਲ

ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ

ਜੇ ਸਮਾਂ ਹੈ ਤਾਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਹੈ, ਸਮਾਂ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨਹੀਂ। ਅਸੀਂ ਬਹੁਤ ਵਾਰੀਂ ਦੁਬਾਰਾ ਚੀਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਇਸਤੇਮਾਲ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ, ਪਰ ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਰਿਸਾਇਕਲ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਗੁਆਚਿਆ ਸਮਾਂ ਮੁੜ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਹਰ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਵਿਚਾਰ ਕਰਕੇ, ਸੋਚ-ਸਮਝ ਕੇ ਆਪਣਾ ਸਮਾਂ ਸਹੀ ਥਾਂ ਤੇ ਲਗਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਸਮਾਂ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਆਪਣੀ ਚਾਲ ਨਾਲ ਚਲਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਲਈ ਆਦਮੀ ਤਾਕਤਵਰ ਜਾਂ ਕਮਜ਼ੋਰ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ, ਉਸਦਾ ਸਮਾਂ ਬਲਵਾਨ ਜਾਂ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਮਨੁੱਖ ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਫਾਲਤੂ ਦੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਕਰਨ ਵਿਚ ਗੁਜ਼ਾਰਦਾ ਹੈ, ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਹੱਥੀਂ ਹੀ ਬਰਬਾਦ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਸਮਾਂ ਆਪਣੀ ਰਫ਼ਤਾਰ ਨਾਲ ਚੱਲਦਾ ਹੈ ਨਾ ਕਿਸੇ ਦੀ ਉਡੀਕ ਕਰਦਾ ਹੈ ਨਾ ਹੀ ਆਪਣੀ ਰਫਤਾਰ ਨੂੰ ਤੇਜ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਕਿਸੇ ਲਈ ਆਪਣੀ ਰਫ਼ਤਾਰ ਨੂੰ ਹੌਲੀ ਵੀ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ, ਨਾ ਹੀ ਸਮਾਂ ਕਿਸੇ ਦੇ ਰੁਕਣ ਨਾਲ ਰੁਕਦਾ ਹੈ। ਕੁਦਰਤ ਵੱਲੋਂ ਵੀ ਹਰ ਕੰਮ ਨੂੰ ਕਰਨ ਦਾ ਵਕਤ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਹੈ। ਦਿਨ-ਰਾਤ ਆਪਣੇ-ਆਪਣੇ ਗੇੜ ਅਨੁਸਾਰ ਚਲਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਮੌਸਮ 'ਤੇ ਰੁੱਤਾਂ ਨੂੰ ਬਦਲਦੇ ਹਨ, ਜਨਮ-ਮਰਨ ਦਾ ਸਮਾਂ ਵੀ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਹੈ। ਸਮੇਂ ਦੀ ਸਹੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨ ਦੀ ਆਦਤ ਨੇ ਥਾਮਸ ਐਡੀਸਨ ਨੂੰ ਇਕ ਮਹਾਨ ਵਿਗਿਆਨੀ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ।

ਇਤਿਹਾਸ ਗਵਾਹੀ ਭਰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਵੱਡੇ ਲੋਕ ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ ਕਰਕੇ ਹੀ ਮਹਾਨ ਅਤੇ ਸਫ਼ਲ ਬਣੇ ਹਨ । ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਨੈਪੋਲਿਅਨ ਨੇ ਇਕ ਵਾਰ ਆਪਣੇ ਜਰਨੈਲਾਂ ਨੂੰ ਦਾਵਤ ਦਿੱਤੀ, ਉਹ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਸਮੇਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਪਹੁੰਚੇ, ਪਰ ਨਪੋਲਿਅਨ ਨੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਖਾਣਾ ਖਾ ਲਿਆ। ਜਰਨੈਲਾਂ ਦੇ ਆਉਣ ਤੇ ਨਪੋਲਿਅਨ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੁਣ ਸਮਾਂ ਬੀਤ ਗਿਆ ਹੈ, ਹੁਣ ਆਪਣੇ ਕੰਮ ਤੇ ਚਲੋ ਅਜਿਹਾ ਨਾ ਹੋਵੇ ਉਥੇ ਵੀ ਦੇਰ ਹੋ ਜਾਵੇ ਭਾਵ ਨੈਪੋਲਿਅਨ ਕਿਹਾ ਕਰਦਾ ਸੀ ਕਿ "ਹਰ ਘੜੀ ਜਿਹੜੀ ਅਸੀਂ ਵਿਅਰਥ ਗੁਆ ਦਿੰਦੇ ਹਾਂ ਉਹ ਸਾਨੂੰ ਸਫਲਤਾ ਤੋਂ ਇਕ ਕਦਮ ਦੂਰ ਲੈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ"। ਵੱਡੇ ਵੱਡੇ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾਂ ਨੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਉੱਪਰ ਜ਼ੋਰ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਕੀਮਤੀ ਮੰਨਿਆ ਹੈ। ਸਮੇਂ ਨੇ ਵੀ ਆਪਣੀ ਕਦਰ ਕਰਨ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਸਫ਼ਲਤਾ ਦੀ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਬਿਠਾਇਆ ਹੈ।

ਸਮਾਂ ਗਤੀਸ਼ੀਲ ਹੈ ਇਹ ਕਿਸੇ ਦੀ ਉਡੀਕ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ ਤੇ ਬੀਤਿਆ ਵਕਤ ਵਾਪਸ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ। ਇਸ ਲਈ ਵਕਤ ਦੀ ਕਦਰ ਕਰਨ ਦੀ ਜਾਂਚ ਸਿੱਖਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਸਾਨੂੰ ਹਰ ਕੰਮ ਤਰਤੀਬ 'ਤੇ ਵਕਤ ਅਨੁਸਾਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਅੱਜ ਦਾ ਕੰਮ ਕੱਲ੍ਹ 'ਤੇ ਨਾ ਛੱਡੋ, ਆਲਸ ਤਿਆਗੋ । ਅਸੀਂ ਅਜੇ ਤੱਕ ਵਕਤ ਦਾ ਮੁੱਲ ਪਾਉਣਾ ਨਹੀਂ ਸਿੱਖੇ। ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਵਕਤ ਦੀ ਕਦਰ ਦਾ ਸਬਕ ਤਾਂ ਹੀ ਸਿਖਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜੇ ਤੁਸੀਂ ਆਪ ਉਸ 'ਤੇ ਅਮਲ ਕਰੋ। ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਖੁੰਝਣਾ ਅਣਗਹਿਲੀ ਹੈ ਤੇ ਜਦੋਂ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਸਿੱਖ ਲਵਾਂਗੇ ਤਾਂ ਸਮਝ ਲਓ ਕਿ ਅਸੀਂ ਵੀ ਸੱਭਿਅਤਾ ਦੀ ਪੌੜੀ ਚੜ੍ਹ ਰਹੇ ਹਾਂ।

ਸ਼ਗੁਨ ਵਤਸ,

ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ), ਦੂਜਾ ਸਾਲ

ਸਾਇਬਰ ਅਪਰਾਧ ਵੱਲ ਵੱਧਦੀ ਨੈਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ

ਵਰਤਮਾਨ ਸਮੇਂ ਅਧੀਨ ਕੰਪਿਊਟਰ ਅਤੇ ਇੰਟਰਨੱਟ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿਚ ਸਾਡੇ ਹਰ ਕੰਮ ਮਿੰਟਾਂ ਸੈਕਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਜ ਲੋਕ ਕੰਪਿਊਟਰ ਅਤੇ ਇੰਟਰਨੱਟ ਉੱਤੇ ਪੂਰੀ ਤਰਾਂ ਨਿਰਭਰ ਹਨ। ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਤਕਨੀਕੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਘਟ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਕਈ ਲੋਕ ਇਸ ਦਾ ਗਲਤ ਫਾਇਦਾ ਵੀ ਉਠਾਉਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਧੋਖਾਧੜੀ ਕਰਦੇ ਹਨ ਜਿਥੇ ਕੰਪਿਊਟਰ ਤੇ ਇੰਟਰਨਟ ਨ ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਸੁਖਾਲਾ ਬਣਾਇਆ ਹੈ ਉਥੇ ਇਸ ਨ ਕਈ ਮੁਸ਼ਕਿਲਾਂ ਵੀ ਖੜ੍ਹੀਆਂ ਕਰ ਦਿਤੀਆਂ ਹਨ ਹਰ ਕੰਮ ਦੇ ਢੰਗ-ਤਰੀਕੇ ਬਿਲਕੁਲ ਬਦਲ ਚੁਕੇ ਹਨ ਇਸ ਕਰਕੇ ਅਜ ਸਾਇਬਰ ਅਪਰਾਧ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਮਾਮਲੇ ਵਧਦੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ ਕੰਪਿਊਟਰ ਨੱਟਵਰਕ ਦੀ ਮਦਦ ਰਾਹੀਂ ਅਜ ਵਧ ਤੋਂ ਵਧ ਨੈਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ ਕੰਪਿਊਟਰ ਨੱਟਵਰਕ ਤਕਨਾਲੋਜੀ ਦਾ ਉਪਯੋਗ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ ਤੇ ਸਾਇਬਰ ਅਪਰਾਧ ਵਲ ਵਧ ਰਹੀ ਹੈ। ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਅਜਿਹਾ ਅਪਰਾਧ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਕੰਪਿਊਟਰ ਨੱਟਵਰਕ ਨੂੰ ਆਧਾਰ ਬਣਾ ਕੇ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਜੁਰਮ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੈ। 18 ਸਾਲ ਤੋਂ ਘਟ ਓਮਰ ਦੇ ਵਿਅਕਤੀ ਲਈ ਵਰਜਿਤ ਸਮਗਰੀ ਨੂੰ ਵੇਖਣਾ ਜਾਂ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਭੇਜਣਾ ਵੀ ਸਾਇਬਰ ਅਪਰਾਧ ਦੇ ਅੰਤਰਗਤ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿਸੇ ਵਿਅਕਤੀ ਜਾਂ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਸੁਰਖਿਆ ਅਤੇ ਆਰਥਕ ਪਾਸਿਓਂ ਖਤਰਾ ਪੈਦਾ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਖਤਰਨਾਕ ਸਾਬਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਇਕ ਨਵੀਂ ਅਤੇ ਗੰਭੀਰ ਇੰਟਰਨਟ ਅਪਰਾਧ ਸਮਸਿਆ ਹੈ। ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਦੇ ਕੁਝ ਮਾਮਲੇ ਮੌਤ ਦਾ ਕਾਰਨ ਵੀ ਬਣਦੇ ਹਨ। ਕੰਪਿਊਟਰ ਦੀ ਦੁਰਵਰਤੋਂ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਕੀਤੇ ਜਾਂਦੇ ਅਪਰਾਧਾਂ ਕਰਕੇ ਕੰਪਿਊਟਰ ਦੀ ਪਾਰਦਰਸ਼ਤਾ ਦੇ ਉੱਤੇ ਵੀ ਸਵਾਲ ਖੜੇ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ ਸਾਇਬਰ ਅਪਰਾਧ ਕਰਨਾ ਕਾਨੂੰਨੀ ਜ਼ੁਰਮ ਤਾਂ ਹੈ ਹੀ, ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ- ਨਾਲ ਨਤਿਕ ਅਪਰਾਧ ਵੀ ਹੈ। ਸਾਇਬਰ ਅਪਰਾਧ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਕਈ ਸਾਰਿਆਂ ਕਿਸਮਾਂ ਦੇਖਿਆਂ ਜਾ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ।

ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਦੀਆਂ ਕਿਸਮਾਂ :

ਡਾਸ ਹਮਲੇ (DDos) : ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਆਨ ਲਾਈਨ ਸੇਵਾ ਨੂੰ ਅਣਉਪਲਬਧ ਬਣਾਉਣ ਅਤੇ ਕਈ ਸਰੋਤਾਂ ਤੋਂ ਟ੍ਰੈਫਿਕ ਨਾਲ ਸਾਈਟ ਨੂੰ ਹਾਵੀ ਕਰਕੇ ਨੱਟਵਰਕ ਨੂੰ ਹੇਠਾਂ ਲੈ ਜਾਣ ਲਈ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਇਸ ਕਰਕੇ ਸਾਡੇ ਸਰਵਰ ਕਾਫੀ ਹੌਲੀ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਇਸ ਕਿਸਮ ਦਾ ਹਮਲਾ ਆਮ ਹੈ।

ਪਛਾਣ ਚੋਰੀ : ਇਹ ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਉਦੋਂ ਵਾਪਰਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਅਪਰਾਧੀ ਪਾਸਵਰਡ ਚੋਰੀ ਕਰਨ, ਗੁਪਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਤਕ ਪਹੁੰਚਣ, ਟੈਕਸ ਜਾਂ ਸਿਹਤ ਬੀਮਾ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਧੋਖਾਧੜੀ ਕਰਨ ਲਈ ਉਪਭੋਗਕਰਤਾ ਦੀ ਸਮੁਚੀ ਨਿੱਜੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਚੋਰੀ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਲੋਕੀਂ ਆਏ ਦਿਨ ਫੇਸਬੁਕ ਵਲੋਂ ਫੇਕ ਆਈ.ਡੀ ਬਣਾ ਕੇ ਲੋਕਾਂ ਕੋਲੋਂ ਪੈਸੇ ਮੰਗਦੇ ਹਨ। ਕਿਸੇ ਦੀ ਈ.ਮੇਲ ਦਾ ਪਾਸਵਰਡ ਹੈਕ ਕਰ ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਫੋਨ ਕਰਕੇ ਓ.ਟੀ.ਪੀ ਪੁਛਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧੀ ਬੈਂਕ ਦੇ ਖਾਤੇ 'ਚੋਂ ਬਹੁਤ ਹੀ ਅਸਾਨੀ ਨਾਲ ਪੈਸੇ ਚੋਰੀ ਕਰ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਬਹੁਤ ਗੰਭੀਰ ਅਪਰਾਧ ਹੈ।

ਸਾਈਬਰ ਸਟਾਕਿੰਗ (cyber staking) : ਇਸ ਕਿਸਮ ਦੇ ਅਪਰਾਧ ਮੁਖ ਤੌਰ ਤੇ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ, ਫੇਸਬੁਕ, ਇੰਸਟਾਗ੍ਰਾਮ , ਈ.ਮੇਲ ਜਾਂ ਹੋਰ ਸਾਈਟਸ ਦੀ ਮਾਧਿਅਮ ਰਾਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਿਸਮ ਦੇ ਸਾਇਬਰ ਕ੍ਰਾਈਮ ਵਿਚ

ਅਸ਼ਲੀਲ ਚੈਟ ਜਾਂ ਉਲਟੀ ਸਿਧੀ ਤਸਵੀਰਾਂ ਭੇਜ ਕੇ ਉਪਭੋਗਕਰਤਾ ਲਈ ਪਰੇਸ਼ਾਨੀ ਪੈਦਾ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਹੈਕਿੰਗ (Hacking) : ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਵਿਅਕਤੀ ਕਿਸੇ ਦੇ ਕੰਪਿਊਟਰ, ਨੱਟਵਰਕ ਆਦਿ ਤਕਨੀਕ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਰਾਹੀਂ ਸਿਸਟਮ ਨੂੰ ਮੋਡਿਫਾਈ ਕਰਕੇ ਡਾਟਾ ਨਸ਼ਟ ਕਰਦਾ ਹੈ ਜਾਂ ਉਸ ਵਿਚ ਕੋਈ ਬਦਲਾਵ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਆ ਨੂੰ ਹੈਕਿੰਗ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵਾਇਰਸ ਸੌਫ਼ਟਵੇਅਰ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਰਾਹੀਂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਅਪਰਾਧ, ਸਾਇਬਰ ਜਾਸੂਸੀ (spying), ਸਾਇਬਰ ਧਕੇਸ਼ਾਹੀ (Bullying) ਆਦਿ ਹੋਰ ਸਾਰੀਆਂ ਕਿਸਮਾਂ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਅਪਰਾਧ ਅਜ ਸਮਾਜ ਲਈ ਬਹੁਤ ਸਮਸਿਆਵਾਂ ਹਨ।

ਨੈਜਵਾਨ ਅਤੇ ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ : ਪ੍ਰਮੁਖ ਕਾਰਣ

ਅਜ ਦੇ ਨੈਜਵਾਨ ਤਕਨਾਲੈਜੀ ਦੇ ਯੁਗ ਇਚ ਇੰਟਰਨਟ ,ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਅਤੇ ਕੰਪਿਊਟਰ ਨਾਲ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ ਇਸ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਆਨ ਲਾਈਨ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਕਲਪਨਾ ਤਕ ਵੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਆਪਣੇ ਦੋਸਤਾਂ ਨਾਲ ਵੀਡਿਓ ਕਾਨਫਰੰਸਿੰਗ ਕਰਦੇ, ਆਪਣੀਆਂ ਫੋਟੋਆਂ ਅਪਲੋਡ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਅਪਰਾਧ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਇੰਟਰਨਟ ਦੀ ਮਦਦ ਰਾਹੀਂ ਨੁਕਸਾਨ ਪਹੁੰਚਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧਾਂ ਦਾ ਡਾਟਾ ਇਹ ਸਬੂਤ ਵੀ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਨੈਜਵਾਨਾਂ ਦੀ ਆਬਾਦੀ ਨੂੰ ਵਧ ਤੋਂ ਵਧ ਆਕਰਸ਼ਿਤ ਕਰ ਕੇ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਖੇਡ-ਖੇਡ ਵਿਚ ਜਾਂ ਗ਼ੈਰਕਾਨੂੰਨੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਪੈਸਾ ਇਕਠਾ ਕਰਨਾ ਕਈ ਨੈਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਵਲ ਧਕੇਲ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਰੋਨਾ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧਾਂ ਨ ਆਪਣਾ ਰੂਪ ਹੋਰ ਵੀ ਭਿਆਨਕ ਕਰ ਲਿਆ। ਕੋਵਿਡ-19 ਦੌਰਾਨ ਇਕ-ਇਕ ਇੰਜੈਕਸ਼ਨ ਦੋ-ਦੋ ਲਖ ਰੁਪਏ ਦਾ ਮਿਲ ਰਿਹਾ ਸੀ, ਔਕਸੀਜ਼ਨ ਦੇ ਸਿਲੰਡਰ ਦੀ ਚੋਰ ਬਾਜ਼ਾਰੀ ਨੂੰ ਕੌਣ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦਾ? ਇਸ ਦੇ ਪਿਛੇ ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਦਾ ਹਥ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਹੋਰ ਕੀ ਹੈ? ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਸਾਡੇ ਨੈਜਵਾਨਾਂ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਨੁਕਸਾਨ ਪਹੁੰਚਾ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਸਾਇਬਰ ਅਪਰਾਧ ਤੋਂ ਬਚਾਅ : ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਰੋਕਿਆ ਜਾਵੇ, ਇਸ ਬਾਰੇ ਜਾਗਰੂਕ ਹੋਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ ਸਾਈਬਰ ਅਪਰਾਧ ਰਾਹੀਂ ਭਾਰੀ ਨੁਕਸਾਨ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਉਠਾਉਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ ਰੁਪਏ ਪੈਸੇ ਦੇ ਨੁਕਸਾਨ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਮਨਵਿਗਿਆਨਕ ਅਤੇ ਭਾਵਨਾਤਮਕ ਨੁਕਸਾਨ ਤੋਂ ਗੁਜਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਆਮ ਤੌਰ ਤੇ ਮਾਮਲੇ ਧੋਖਾਧੜੀ ਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਮਾਪਿਆਂ ਤੋਂ ਗੁਜ਼ਾਰਿਸ਼ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੇ ਬਚਿਆਂ ਦੇ ਸੋਸ਼ਲ ਨੱਟਵਰਕ ਦੇ ਉਪਯੋਗ ਬਾਰੇ ਧਿਆਨ ਰਖਣ। ਸਾਨੂੰ ਮਜਬੂਤ ਤੇ ਵਿਲਖਣ ਪਾਸਵਰਡ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਪਬਲਿਕ ਵਾਈ-ਫਾਈ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਵੀ ਸਾਵਧਾਨ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਸੰਖੇਪ ਵਿਚ : ਸਾਵਧਾਨ , ਕਿਰਿਆਸ਼ੀਲ ਅਤੇ ਸੁਚੇਤ ਰਹੋ।

'ਸਾਵਧਾਨੀ ਹਟੀ, ਦੁਰਘਟਨਾ ਘਟੀ'

ਇਸ਼ਮੀਤ ਕੌਰ, ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ), ਤੀਜਾ ਸਾਲ

ਕ੍ਰਿਸਮਸ

ਕ੍ਰਿਸਮਿਸ ਨੇੜੇ ਆ ਰਹੀ ਸੀ ਤੇ ਹੈਰਿਸ ਇਸ ਸਾਲ ਕੁਝ ਜਿਆਦਾ ਖੁਸ਼ ਨਜ਼ਰ ਆ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਰੋਜ਼ ਸਵੇਰੇ ਘਰੋਂ ਨਿਕਲ ਜਾਂਦਾ, ਬੈਗ ਦੇ ਬੈਗ ਭਰਕੇ ਸ਼ੌਪਿੰਗ ਦੇ ਲੈ ਕੇ ਆਂਦਾ। ਮੈਂ ਉਸ ਦੀ ਇਹ ਹਰਕਤ ਦੇਖ ਦੇਖ ਹੈਰਾਨ ਹੁੰਦੀ ਜਾ ਰਹੀ ਸੀ। ਕਿਧਰੇ ਫੇਰ ਡਿਪ੍ਰੈਸ਼ਨ ਦਾ ਦੌਰਾ ਤੇ ਨਹੀਂ ਪੈ ਗਿਆ? ਅੱਗੇ ਵੀ ਕਈ ਵਾਰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੋਇਆ ਸੀ, ਉਹ ਡਿਸਲੈਕਸੀਆ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਸੀ, ਜਦੋਂ ਕਦੇ ਕੋਈ ਬਿਲ ਡਾਕ ਵਿੱਚ ਆ ਜਾਂਦਾ, ਉਸ ਕੋਲੋਂ ਪੜ੍ਹਿਆ ਨਾ ਜਾਂਦਾ ਤਾਂ ਗੁੱਸੇ ਨਾਲ ਲਾਲ ਹੋ ਜਾਂਦਾ। ਮੇਰਾ ਦਰਵਾਜ਼ਾ ਖੜਕਾ ਮੈਨੂੰ ਆਪਣਾ ਬਿਲ ਵਖਾਉਂਦਾ, ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਬਿੱਲ ਦੀ ਰਕਮ ਲਿਖਵਾਉਂਦਾ ਤੇ ਪੋਸਟ ਆਫਿਸ ਜਾ ਕੇ ਬਿਲ ਤਾਰ ਆਉਂਦਾ। ਰਕਮ ਤਾਂ ਸ਼ਾਇਦ ਉਹ ਪੜ੍ਹ ਹੀ ਲੈਂਦਾ ਸੀ ਪਰ ਬਾਕੀ ਦੀ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਉਸ ਕੋਲੋਂ ਪੜ੍ਹੀ ਨਾ ਜਾਂਦੀ ਤੇ ਨਾ ਹੀ ਉਸ ਕੋਲੋਂ ਠੀਕ ਢੰਗ ਨਾਲ ਲਿਖੀ ਜਾਂਦੀ ਪਰ ਉਹ ਆਪਣਾ ਕੰਮ ਸਾਰੀ ਜਾ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਮਸਾਂ ਟੁੱਟੇ-ਫੁੱਟੇ ਆਪਣੇ ਦਸਤਖ਼ਤ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਸੀ। ਮਕਾਨਾਂ ਵਿੱਚ ਵਾਲਪੇਪਰ ਲਾਉਣਾ, ਪੇਂਟ ਕਰਨਾ, ਘਰ ਨੂੰ ਡੈਕੋਰੇਟ ਕਰਨਾ, ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰੇ ਕੰਮਾਂ ਵਿਚ ਉਹ ਬੜਾ ਮਾਹਿਰ ਸੀ। ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਫਲੈਟ ਵਿਚ ਮੂਵ ਹੋਈ ਸੀ ਤਾਂ ਸਾਰਾ ਪੈਂਟ ਅਤੇ ਵਾਲਪੇਪਰ ਦਾ ਕੰਮ ਇਸੇ ਨੇ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਇਸ ਵਾਰ ਉਸ ਨੇ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਡੈਕੋਰੇਸ਼ਨ ਪੀਸ ਖਰੀਦੇ । ਮੈਂ ਇੱਕ ਦਿਨ ਪੁੱਛ ਹੀ ਲਿਆ,

"ਹੈਰਿਸ ਕੀ ਗੱਲ ਇਸ ਵਾਰ ਤੂੰ ਕ੍ਰਿਸਮਸ ਦੀ ਏਨੀ ਸ਼ਾਪਿੰਗ ਕਰ ਰਿਹੈਂ, ਤੇ ਕੁਝ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੀ ਖ਼ੁਸ਼ ਨਜ਼ਰ ਆ ਰਿਹੈਂ ਕੋਈ ਖਾਸ ਗੱਲ ਐ, ਜਾਂ ਕੋਈ ਲਾਟਰੀ ਤੇ ਨਹੀਂ ਨਿਕਲ ਆਈ, ਜਾਂ ਕੋਈ ਖ਼ਜ਼ਾਨਾ ਤੇ ਨਹੀਂ ਮਿਲ ਗਿਆ?"

"ਨੋ ਦਵੀਨ ਆਈ ਐਮ ਵੈਰੀ ਹੈਪੀ ਦਿਸ ਟਾਇਮ ਮਾਈ ਬਰਦਰ ਫਰੌਮ ਮਾਨਚੈਸਟਰ ਹੈਜ਼ ਸਟਾਰਟਿਡ ਸਪੀਕਿੰਗ ਵਿਦ ਮੀ। ਹੀ ਹੈਜ਼ ਇਨਵਾਈਟਿਡ ਮੀ ਫਾਰ ਕ੍ਰਿਸਮਿਸ ਦਿਸ ਟਾਇਮ ,ਹੀ ਇਜ਼ ਗੋਇੰਗ ਟੂ ਬਰਿੰਗ ਹਿਜ਼ ਡਾਟਰਜ਼ ਆਫਟਰ ਫਿਫਟੀਨ ਈਅਰਜ਼ ਦਿਸ ਕ੍ਰਿਸਮਸ । ਆਈ ਐਮ ਡੂਇੰਗ ਸ਼ਾਪਿੰਗ ਫਾਰ ਮਾਈ ਨੀਸਿਜ਼।"

"ਤੂੰ ਅੱਗੇ ਕਦੇ ਇਸਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਕਿੰਨੀਆਂ ਭਤੀਜੀਆਂ ਨੇ ਤੇਰੀਆਂ ਤੇ ਕਿੱਥੋਂ ਆ ਰਹੀਆਂ ਨੇ?" ਮੈਂ ਪੁੱਛਿਆ! ਤੇ ਉਹ ਬੋਲਿਆ ;

" ਅਸੀਂ ਚਾਰ ਭਰਾ ਹਾਂ, ਸਾਡੀ ਕੋਈ ਭੈਣ ਨਹੀਂ। ਦੋ ਭਰਾ ਬਰਮਿੰਘਮ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਆਹ ਨਹੀਂ ਕਰਾਏ ਪਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲ ਗਰਲ ਫਰੈਂਡਸ ਹਨ । ਮੇਰਾ ਇਕ ਭਰਾ ਮਾਨਚੈਸਟਰ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਉਸ ਦੀਆਂ ਦੋ ਬੇਟੀਆਂ ਹਨ ,ਬਹੁਤ ਛੋਟੀਆਂ ਸਨ ਜਦੋਂ ਅਕਸਰ ਮੇਰਾ ਭਰਾ ਤੇ ਉਹਦੀ ਵਾਈਫ ਦੋਹਾਂ ਨੂੰ ਘਰ ਛੱਡ ਘੁੰਮਣ ਚਲੇ ਜਾਂਦੇ। ਦੋਵੇਂ ਬੜੇ ਲੇਜ਼ੀ ਹਨ। ਇਕ ਦਿਨ ਉਹ ਮਾਰਕੀਟ ਸ਼ਾਪਿੰਗ ਕਰਨ ਗਏ ਪਿੱਛੋਂ ,ਦੋਵੇਂ ਲੜ ਪਈਆਂ, ਤੇ ਉੱਚੀ ਉੱਚੀ ਰੋਣ ਲੱਗਿਆਂ। ਨਾਲ ਦੇ

ਗਵਾਂਢੀ ਨੇ ਆਵਾਜ਼ ਸੁਣਦਿਆਂ ਹੀ ਸੋਸ਼ਲ ਸਿਕਿਓਰਿਟੀ ਨੂੰ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਕਰ ਦਿੱਤੀ, ਉਹ ਝੱਟ ਲੈਣ ਆ ਗਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੋਹਾਂ ਭੈਣਾਂ ਨੂੰ ਇਕ ਪਰਿਵਾਰ ਕੋਲ ਫੋਸਟਰ ਕੇਅਰ ਲਈ ਭੇਜ ਦਿੱਤਾ । ਉਹ ਪਰਿਵਾਰ ਇੰਡੀਅਨ ਹੈਂ , ਬਹੁਤ ਅਮੀਰ ਹੈ , ਫਾਰਮ ਹਾਊਸ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਮੇਰੀਆਂ ਭਤੀਜੀਆਂ ਪਿਛਲੇ ਪੰਦਰਾਂ ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲ ਰਹਿ ਰਹੀਆਂ ਹਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਆਪਣਾ ਕੋਈ ਬੱਚਾ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਉਹਨਾਂ ਮੇਰੀਆਂ ਭਤੀਜੀਆਂ ਨੂੰ ਪਾਲਿਆ, ਪੜ੍ਹਾਇਆ ਹੈਂ, ਉਹ ਹੁਣ ਅਠਾਰਾਂ ਸਾਲ ਤੋਂ ਉਪਰ ਹੋ ਗਈਆਂ ਹਨ, ਮੇਰਾ ਭਰਾ ਭਰਜਾਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਲਿਆ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਕ੍ਰਿਸਮਸ ਤੇ ਅਸੀਂ ਸਾਰੇ ਭਰਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਲੈ ਜਾਵਾਂਗੇ ਤੇ ਇਕੱਠਿਆਂ ਏਨੇ ਸਾਲਾਂ ਬਾਅਦ ਕ੍ਰਿਸਮਸ ਮਨਾਵਾਂਗੇ।"

"ਤੇਰੇ ਬੱਚੇ ਵੀ ਆ ਰਹੇ ਨੇ? ਮੈਂ ਪੁਛਿਆ!

"ਨਹੀਂ, ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬੁਲਾਇਆ ਹੀ ਨਹੀ। ਜੇ ਬੁਲਾਇਆ ਵੀ ਤਾਂ ਵੀ ਸ਼ਾਇਦ ਉਹ ਨਾ ਆਉਣ ।"

"ਕਿਉਂ? ਮੈਂ ਪੁੱਛਿਆ!

"ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮਾਂ ਸ਼ਾਇਦ ਨਾ ਆਣ ਦੇਵੇ, ਮੇਰਾ ਉਸ ਨਾਲ 20 ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਕੋਈ ਰਾਬਤਾ ਨਹੀਂ। ਬੱਚੇ ਵੀ ਕਦੇ-ਕਦੇ ਹੀ ਮੈਨੂੰ ਫੋਨ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਖਾ਼ਸ ਕਰਕੇ ਉਦੋਂ ਜਦੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੈਸੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹੋਣ । ਮੈਂ ਨਾਂਹ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ ਪਰ ਉਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮੇਰਾ ਬਜਟ ਅਪਸੈਟ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਅੱਜ ਕੱਲ ਤਾਂ ਮੈਨੂੰ ਕੋਈ ਕੰਮ ਵੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲ ਰਿਹਾ ਤੇ ਸਿਰਫ ਬੈਨੀਫੈਟਸ ਤੇ ਮਸਾਂ ਘਰ ਦਾ ਖਰਚਾ ਚਲਦਾ ਹੈ।"ਤੇ ਤੂੰ ਏਨੀ ਸਾਰੀ ਸਾ਼ਪਿੰਗ ਕੀਤੀ ਹੈ ਪੈਸੇ ਕਿੱਥੋਂ ਆਏ ਨੇ? ਮੇਰੇ ਪੁੱਛਣ ਤੇ ਉਸ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਉਸ ਨੇ ਆਪਣੇ ਦੋਸਤ ਕੋਲੋਂ ਉਧਾਰ ਲਏ ਨੇ ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਕੰਮ ਮਿਲ ਗਿਆ , ਉਸ ਨੂੰ ਥੋੜ੍ਹੇ ਥੋੜ੍ਹੇ ਕਰਕੇ ਵਾਪਸ ਕਰ ਦਿਆਂਗਾ। ਮੈਂ ਉਸ ਨੂੰ ਕੌਫੀ ਲਈ ਪੁੱਛਿਆ, ਉਸ ਨੇ ਹਾਂ ਕਹਿ ਕੇ ਥੈਂਕਸ ਕੀਤਾ ਤੇ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਬੈਠ ਗਿਆ।

ਕਿਵੇਂ ਕੋਚ ਤੇ ਜਾ ਰਿਹੈਂ ?ਮੈਂ ਪੁੱਛਿਆ!

" ਨਹੀਂ, ਮੇਰੇ ਦੋਵੇਂ ਭਰਾ ਬਰਮਿੰਘਮ ਤੋਂ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਆਣਗੇ। ਮੈਂ ਟੈਕਸੀ ਬੁੱਕ ਕਰ ਲਈ ਹੈ, ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਦੀ ਟੈਕਸੀ ਹੈ, ਅਸੀਂ ਤਿੰਨ ਜਣੇ ਹਾਂ, ਉਹ 50 ਪੌਂਡ ਵਿਚ ਸਾਨੂੰ ਮਾਨਚੈਸਟਰ ਵੀ ਲੈ ਜਾਵੇਗਾ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਕ੍ਰਿਸਮਸ ਮਨਾਏਗਾ ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਵਾਪਸ ਵੀ ਲੈ ਆਵੇਗਾ।"

"ਵਾਓ!" ਮੈਂ ਕਿਹਾ ਉਸਨੂੰ ਮਾਨਚੈਸਟਰ ਜਾਣ ਦੀ ਅਗਾਊਂ ਮੁਬਾਰਕਬਾਦ ਵੀ ਦਿੱਤੀ, ਕੁਆਲਟੀ ਸਵੀਟਸ ਦਾ ਇਕ ਡਿੱਬਾ ਵੀ ਦਿੱਤਾ ਤੇ ਅਸੀਂ ਦੋਵੇਂ ਕਾਫੀ ਪੀਣ ਲੱਗ ਪਏ ।

ਮੈਂ ਅੰਦਰੋਂ ਬੜੀ ਖੁਸ਼ ਸਾਂ ਕਿ ਹੈਰਿਸ ਲੋੜ ਤੋਂ ਵੱਧ ਖੁਸ਼ ਨਜ਼ਰ ਆ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਚਲੋ ਚੰਗਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਵਾਰ ਇਹ ਕ੍ਰਿਸਮਸ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿਚ ਮਨਾਏਗਾ, ਕਿਉਂਕਿ ਅਕਸਰ ਹੀ ਇਹ ਆਪਣੇ ਫਲੈਟ ਦੇ ਉਪਰ ਰਹਿਣ ਵਾਲੇ ਜੋੜੇ ਤੋਂ ਪਰੇਸ਼ਾਨ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਅਕਸਰ ਮੇਰਾ ਦਰਵਾਜ਼ਾ ਖੜਕਾ ਕੇ ਮੈਨੂੰ ਰਾਤ ਭਰ ਸੌਂ ਨਾ ਸਕਣ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਬਿਆਨ ਕਰ ਕੇ ਸੁਣਾਉਂਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਦਰਅਸਲ ਇਹਦੇ ਗਵਾਂਢੀ ਰਾਤ ਦੇਰ ਤੱਕ ਜਾਗਦੇ, ਡਰਿੰਕ ਕਰਦੇ, ਦਗੜ ਦਗੜ ਫਲੋਰ ਤੇ ਤੁਰਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ , ਇਸ ਨੂੰ ਜਲਦੀ ਸੌਣ ਤੇ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਹੈ। ਦਵਾਈਆਂ ਖਾਣ ਕਰਕੇ ਜਦੋ ਨਾ ਸੌਂ ਸਕਣ ਕਰਕੇ ਇਹਦੀ ਤਬੀਅਤ ਬੇਚੈਨ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਕੁੜਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹਾਇਪਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਆਪਣੀ ਤਬੀਅਤ ਵਿਗਾੜ ਲੈਂਦਾ ਹੈ, ਮੈਨੂੰ ਵੀ ਸਾਰੀ ਕਹਾਣੀ ਬਾਰ ਬਾਰ ਸੁਣਾ ਡਿਸਟਰਬ ਕਰਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਵੈਸੇ ਵੀ ਇਹਦੇ ਕੰਨ ਏਨੇ ਬਰੀਕ ਹਨ ਕਿ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਥੋੜੀ ਜਹੀ ਹਿਲਜੁਲ ਵੀ ਇਸਨੂੰ ਨੀਂਦਰ ਨਹੀਂ ਆਉਣ ਦੇਂਦੀ। ਮੈਂ ਇਸ ਦੀ ਸਿਚੂਏਸ਼ਨ ਨੂੰ ਜਾਣਦੀ ਹੋਈ ਬਸ ਸੁਣਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹਾਂ, ਅੱਗੋਂ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਬੋਲਦੀ, ਉਸ ਨਾਲ ਹਮਦਰਦੀ ਜਤਾਉਂਦੀ ਹਾਂ ਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਪਦਾ ਹੈਕਿ ਮੈਂ ਉਸਦੀ ਹਮਦਰਦ ਹਾਂ। ਚਲੋ ਖ਼ੈਰ ! ਮੈਂ ਖੁਸ਼ ਸਾਂ ਕਿ ਇਹ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਕੋਲ ਜਾਏਗਾ, ਹਾਲਾਂਕਿ ਇਹ ਵੀ ਜਾਣਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਗੋਰਿਆਂ ਵਿਚ ਪਰਿਵਾਰ ਦਾ ਸੰਕਲਪ ਬੜਾ ਅਜੀਬ ਜਿਹਾ ਹੈ। ਉਹ ਆਪਣੀ ਪਤਨੀ, ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਹੀ ਆਪਣਾ ਪਰਿਵਾਰ ਮੰਨਦੇ ਹਨ। ਭਰਾਵਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਲਈ ਵੱਖਰੇ ਪਰਿਵਾਰ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਲੇਕਿਨ ਫਿਰ ਥੋੜਾ ਜਿਹਾ ਇੰਡੀਅਨ ਟਾਇਪ ਦਾ ਗੋਰਾ ਸੀ ,ਉਸ ਦਾ ਕਾਰਨ ਉਸਦੀ ਮਾਸੀ ਨੇ ਪਾਕਿਸਤਾਨੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਲ ਸ਼ਾਦੀ ਕੀਤੀ ਹੋਈ ਸੀ ਤੇ ਉਸਦੇ ਇਕ ਭਰਾ ਦੀ ਗਰਲਫਰੈਂਡ ਵੀ ਇੰਡੀਅਨ ਕੁੜੀ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਹੈਰਿਸ ਬਾਕੀ ਗੋਰਿਆਂ ਨਾਲੋਂ ਵੱਖਰਾ, ਮਿਲਾਪੜੇ ਸੁਭਾਅ ਦਾ ਗੋਰਾ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਸ਼ਾਇਦ ਉਹ ਇਸ ਕ੍ਰਿਸਮਸ ਤੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਖੁਸ਼ ਨਜ਼ਰ ਆ ਰਿਹਾ ਸੀ।

ਕੌਫੀ ਪੀਂਦਿਆਂ ਹੀ ਹੈਰਿਸ ਨੇ ਸਵੀਟਸ ਦਾ ਡੱਬਾ ਫੜਿਆ, ਮੇਰਾ ਥੈਂਕਸ ਕੀਤਾ ਤੇ ਆਪਣੇ ਫਲੈਟ ਵਿਚ ਚਲਾ ਗਿਆ। ਮੈਂ ਕਿੰਨੀ ਦੇਰ ਹੈਰਿਸ ਦੇ ਇਸ ਦੇ ਸੁਭਾਅ ਬਾਰੇ ਸੋਚਦੀ ਰਹੀ। ਮੈਨੂੰ ਉਹ ਦਿਨ ਵੀ ਯਾਦ ਆਉਣ ਲੱਗੇ ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਨਵੀਂ ਨਵੀਂ ਇਸ ਫਲੈਟ ਵਿਚ ਮੂਵ ਹੋਈ ਸੀ, ਤੇ ਇਹਨੇ ਮੈਨੂੰ ਦੋਸਤੀ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਸ਼ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਸੀ ਤੇ ਕਿੰਨੇ ਯਤਨਾਂ ਨਾਲ ਮੈਂ ਏਸ ਦੇ ਦਿਲ ਵਿੱਚੋਂ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਕੱਢਣ ਵਿੱਚ ਕਾਮਯਾਬ ਹੋਈ ਸੀ ਕਿ ਜੋ ਉਹ ਸੋਚ ਰਿਹਾ ਹੈਂ, ਉਸਦੀ ਖ਼ਾਹਿਸ਼ ਪੂਰੀ ਨਹੀਂ ਹੋਣੀ

ਤੇ ਉਹਨੇ ਗੁੱਸੇ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਸ਼ੁਰੂ ਸ਼ੁਰੂ ਵਿੱਚ ਮੇਰੇ ਬਾਥਰੂਮ ਦੀ ਖਿੜਕੀ ਇੱਟ ਮਾਰ ਕੇ ਤੋੜ ਦਿੱਤੀ ਸੀ, ਲੇਕਿਨ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਉਹ ਨਾਰਮਲ ਹੁੰਦਾ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ ਇਕ ਚੰਗੇ ਗਵਾਂਢੀ ਵਾਂਗ ਉਸ ਦਾ ਵਿਹਾਰ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ, ਗਾਹੇ ਬਗਾਹੇ ਉਹ ਮੇਰੇ ਨਿੱਕੇ ਮੋਟੇ ਕੰਮ ਜਿਵੇਂ ਪੋਸਟ ਆਫਿਸ ਤੋਂ ਦੁੱਧ ਲਿਆਉਣਾ ਮੇਰੇ ਬਿਜਲੀ ਅਤੇ ਗੈਸ ਦੇ ਕਾਰਡਾਂ ਵਿੱਚ ਪੋਸਟ ਆਫਿਸ ਤੋਂ ਪੈਸੇ ਪੁਆ ਲਿਆਉਣੇ ਆਦਿ। ਜਦੋਂ ਕਦੇ ਮੈਂ ਇੰਡੀਆ ਆਉਣਾ, ਇਕ ਚਾਬੀ ਮੈਂ ਇਹਦੇ ਕੋਲ ਛੱਡ ਦੇਣੀ, ਤਾਂ ਕਿ ਮੇਰੇ ਫਲੈਟ ਦੀ ਨਿਗਰਾਨੀ ਰਹੇ ਤੇ ਪੂਰੀ ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਨਾਲ ਆਪਣੀ ਇਹ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਨਿਭਾਉਂਦਾ ਸੀ।

ਆਖ਼ਿਰ ਕ੍ਰਿਸਮਿਸ ਦਾ ਦਿਨ ਚਲਾ ਗਿਆ। ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਹੀ ਮੇਰਾ ਦਰਵਾਜ਼ਾ ਖੜਕਿਆ। ਦਰਵਾਜ਼ਾ ਖੋਲਿਆ, ਅੱਗੇ ਹੈਰਿਸ ਖੜਾ ਸੀ। ਮੇਰੇ ਪੁੱਛਣ ਤੇ ਕਿ ਐਨੀ ਜਲਦੀ ਉਹ ਵਾਪਸ ਆ ਗਿਆ, ਉਸਦੀ ਕ੍ਰਿਸਮਸ ਕੈਸੀ ਰਹੀ? ਤਾਂ ਇਕ ਦਮ ਬੋਲਿਆ, ਕਾਹਦੀ ਕ੍ਰਿਸਮਸ ਸੀ, ਅਸੀਂ ਤਿੰਨੇ ਭਰਾ ਬੇਟੀਆਂ ਦੀ ਉਡੀਕ ਕਰ ਰਹੇ ਸਾਂ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਆਉਣ ਤੇ ਕ੍ਰਿਸਮਸ ਡਿਨਰ ਕਰਾਂਗੇ, ਮੇਰਾ ਭਰਾ ਭਰਜਾਈ ਖਾਲੀ ਹੱਥ ਮੁੜ ਆਏ, ਬੇਟੀਆਂ ਬੜੀਆਂ ਖੁਸ਼ ਸਨ ਉਸ ਪਰਿਵਾਰ ਨਾਲ, ਬੜੀਆਂ ਨਿਖਰ ਆਈਆਂ ਸਨ, ਸਕੂਲ ਦੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਪੂਰੀ ਕਰ ਚੁੱਕੀਆਂ ਸਨ, ਕਿੰਨੀ ਵਾਰ ਇੰਡੀਆਂ ਦਾ ਚੱਕਰ ਲਗਾ ਆਈਆਂ ਸਨ, ਉਹ ਹੁਣ ਅੱਧੀਆਂ ਪੰਜਾਬੀ ਬਣ ਚੁੱਕੀਆਂ ਸਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੇਰੇ ਭਰਾ ਭਰਜਾਈ ਨਾਲ ਆਉਣ ਤੋਂ ਇਨਕਾਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ।

ਡਾ.ਦੇਵਿੰਦਰ ਕੈਰ (ਯੂ .ਕੇ)

20ਵੀਂ ਸਦੀ ਦਾ ਸੰਤ ਕਵੀ: ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ

ਨਿਕਿਤਾ

ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ ਦਾ ਨਾਮ 20ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਸਿਰਮੋਰ ਵਿਦਵਾਨ, ਸਿੱਖ ਸੰਤ, ਸੂੱਚੀ ਤੇ ਸੁਚੱਜੀ ਕਲਾ ਦੇ ਮਾਲਕ, ਬਹੁਪੱਖੀ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ, ਮਹਾਨ ਚਿੰਤਕ, ਮਿੱਠੀ ਤੇ ਮਨਮੋਹਣੀ ਹਸਤੀ ਵਜੋਂ ਜਾਣਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜੋ ਬਹੁਤ ਹੀ ਘੱਟ ਕਿਸੇ ਸਮਾਜ ਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਨਸੀਬ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਆਤਮਿਕ, ਧਾਰਮਿਕ, ਸਮਾਜਕ, ਸਦਾਚਾਰਕ ਸੂਝ ਦੇਣ ਵਾਲੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ ਨੇ ਸਮੇਂ ਦੇ ਹਾਲਾਤਾਂ ਨਾਲ ਜੂਝ ਰਹੀ ਅਤੇ ਢਹਿੰਦੀ ਕਲਾ ਨੂੰ ਇਕ ਨਵਾਂ ਰਾਹ ਦਿਖਾਇਆ।

ਮੱਧਕਾਲੀਨ ਸੰਤ ਕਵੀਆਂ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਕੋਈ ਵੀ ਐਸਾ ਸੰਤ-ਕਵੀ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ ਜਿਸਦਾ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਜ਼ਿਕਰ ਹੋਵੇ। ਸੰਤ ਤਾਂ ਕਈ ਹੋਏ ਹਨ ਪਰ ਕੋਈ ਉਲੇਖਣੀਯ ਸੰਤ ਕਵੀ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ। ਅਸਲ ਵਿਚ ਕਵਿਤਾ ਨਿੱਜੀ ਸਾਧਨਾਂ ਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਅਨੁਭੂਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਗਟਾਵਾ ਹੈ। ਕਵਿਤਾ ਕਲਪਨਾ, ਵਲਵਲਾ, ਜਜ਼ਬਾ ਅਤੇ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ ਦੁਆਰਾ ਹੀ ਰੂਪ ਧਾਰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰ ਭਾਵ ਵਿਚ ਸਮੋਇਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਸੰਤ ਆਮ ਕਰਕੇ ਬੋਲਦੇ ਘੱਟ ਹਨ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਅਨੁਭਵ ਅੰਦਰ ਰਮਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਬੋਲਦਾ ਕਵੀ ਵੀ ਘੱਟ ਹੈ ਪਰ ਲਿਖਤ ਰਾਹੀਂ ਉਸ ਦਾ ਆਪਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਰੂਪ ਧਾਰਦਾ ਹੈ। ਅਨੁਭੂਤੀ ਭਾਰੂ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਉਹ ਕਈ ਵਾਰੀ ਤਾਂ ਦਰਿਆ ਵਾਂਗ ਵੱਗ ਟੁਰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਕਈਆਂ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਅਨੁਭਵ ਨੂੰ ਸਾਂਝਿਆਂ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਧਾਰਮਕ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਧੂਹ ਵਿੱਚ ਖਿੱਚੀ ਇੱਕ ਅਰਜ਼ੀ ਸੱਦ ਹੈ ਤੇ ਆਪ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਆਤਮਕ ਟੋਹ ਦਾ ਲੰਮਾ ਗੀਤ। "ਪੰਜ ਦਰਿਆਵਾਂ ਦੀ ਧਰਤੀ ਰਿਸ਼ੀਆਂ ਦੀ ਧਰਤੀ ਹੈ ਮਾਨੋ ਵਿਵੇਕ ਰਿਸ਼ੀਆਂ ਦਾ ਪੁਨਰ-ਜਨਮ ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ ਵਿਚ ਹੋਇਆ ਹੈ"। ਆਪ ਦੀ ਰਚਨਾ ਦੀ ਤੈਹ ਵਿਚ ਧਾਰਮਿਕ ਭਾਵਾਂ ਦੀ ਨਿੰਮੀ ਨਿੰਮੀ ਚਾਲ ਹੈ। ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਦੀਆਂ ਪਿਆਰ ਤਾਂਘਾਂ ਨੂੰ ਕਵਿਤਾ ਦੀ ਕੋਮਲ ਛੋਹ ਨਾਲ ਧਾਰਮਕ ਜਿਹਾ ਜਜ਼ਬਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਰਾਂਝੇ ਮਗਰ ਹੀਰ ਦੀ ਘਬਰਾਹਟ, ਪੁੰਨੂ ਪਿੱਛੇ ਸੱਸੀ ਦੀ ਤੜਫਣ, ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਮਗਰ ਗੋਪੀਆ ਦਾ ਲੁਭਾਣਾ ਕੋਈ ਮੋਹ ਦ੍ਰਿਸ਼ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਇੱਕ ਰੂਹਾਨੀ ਰਮਜ਼ ਲੁਕੀ ਪ੍ਰਤੀਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ:

ਹੇ ਅਰੂਪ! ਇਹ ਤੜਪ ਉਹ ਨਹੀਂ
ਧੁਰੋਂ ਤੁਸਾਂ ਜੋ ਲਾਈ,
ਕੀ ਇਹ ਚਿਣਗ ਨਹੀਂ ਉਹ
ਜਿਹੜੀ ਤੁਸਾਂ ਸੀਨਿਆਂ ਪਾਈ? (ਬਿਜਲੀਆਂ ਦੇ ਰਾਹ)

ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਇਕ ਗੁਰਮੁਖ ਸੰਤ ਕਵੀ ਹਨ। ਉਹ ਗ੍ਰਿਹਸਤੀ ਹੁੰਦੇ ਹੋਇਆਂ ਨਿਰਲੇਪ ਵੀ ਨਿਰਮਲ ਜੀਵਨ ਬਤੀਤ ਕਰਦੇ ਰਹੇ। ਗੁਰੂ ਦਾ ਪ੍ਰੇਮ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਰੋਮ-ਰੋਮ ਵਿੱਚ ਸਮਾਇਆ ਰਿਹਾ। ਬਿਰਹਾ ਦੀ ਤੜਫਨ, ਵੈਰਾਗ, ਉਡੀਕ ਵਿਚ ਕਲਵਲਤਾ, ਮਿਲਾਪ ਦਾ ਆਨੰਦ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਦੇ ਮੁੱਖ ਵਿਸ਼ੇ ਹਨ। ਪਿਆਰ ਕਾਵਿ ਦਾ ਮੂਲ ਧੁਰਾ ਹੈ। ਕਵੀ ਕਦੇ ਭਗਤੀ ਪਿਆਰ ਦਾ ਸੰਗੀਤ ਅੰਦਰ ਲਹਿਰਦਾ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਕਦੀ ਝੁਣਝੁਣੀ ਜਿਹੀ, ਕੰਬਣੀ ਜਿਹੀ, ਥਰਕਣ ਜਿਹੀ, ਕਦੇ ਮਿੱਠਾ-ਮਿੱਠਾ ਦਰਦ ਰਸ ਅਤੇ ਕਦੇ ਤਰਸੇਵਾਂ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਭਗਤੀ ਮਿਲਾਪ ਦੇ ਇਸ ਸੰਕਲਪ ਨੂੰ ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਰੁਬਾਈ ਦਰਸਾਉਂਦੀ ਹੈ:

ਕਿਉਂ ਹੋਯਾ? ਤੇ ਕੀਕੂੰ ਹੋਯਾ?
ਖਪ ਖਪ ਮਰੇ ਸਿਆਣੇ
ਉਸੇ ਰਾਹ ਪਵੇਂ ਕਿਉਂ ਜਿੰਦੇ
ਜਿਸ ਰਾਹ ਪੂਰ ਮੁਹਾਣੇ
ਭਟਕਣ ਛੱਡ ਲਟਕ ਲਾ ਇਕੋ
ਖੀਵੀ ਹੋ ਰਸ ਮਾਣੀ
ਹੋਸ਼ਾਂ ਨਾਲੋਂ ਮਸਤੀ ਚੰਗੀ
ਰੱਖਦੀ ਸਦਾ ਟਿਕਾਣੇ। (ਲਹਿਰਾਂ ਦੇ ਰਾਹ)

ਭਗਤ ਨੂੰ ਜਦੋਂ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਛੁਹ ਲੱਗਦੀ ਹੈ ਜਾਂ ਵਸਲ ਦਾ ਖ਼ਿਆਲ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਉਸਦੇ ਸਰੀਰ ਅਤੇ ਦਿਲ ਦੀ ਕੀ ਅਵਸਥਾ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਆਪਣੀ ਰੁਬਾਈ ਵਿਚ ਯਾਦ ਨੂੰ ਸੰਗੀਤ ਅਤੇ ਨਸ਼ੇ ਵਾਲਾ ਸਰੂਰ ਦੱਸਦੇ ਹਨ:

ਯਾਦ ਸਜਨ ਦੀ ਹਰਦਮ ਰਹਿੰਦੀ
ਲਹਿ ਗਈ ਡੂੰਘੇ ਥਾਈਂ,
ਵਾਂਗ ਸੰਗੀਤ ਲਹਿਰਦੀ ਅੰਦਰ
ਬਣ ਗਈ ਰਾਗ ਇਲਾਹੀ।
ਦਾਰੂ ਵਾਂਗ ਸਰੂਰ ਚਾੜ੍ਹਦੀ
ਤਰਬ ਵਾਂਗ ਥਰਰਾਵੇ,
ਖਿੱਚੇ ਤੇ ਰਸ ਭਿੰਨੀ ਕਸਕੇ–
ਲੱਗੇ ਫਿਰ ਸੁਖਦਾਈ । (ਲਹਿਰਾਂ ਦੇ ਰਾਹ)

ਸੂਫ਼ੀਆਂ ਵਾਂਗ ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ ਵੀ ਆਪਣੇ ਮੁਰਸ਼ਦ ਦੇ ਵਿਛੋੜੇ ਦੀ ਪੀੜ੍ਹ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਵਿਛੋੜੇ ਦਾ ਖਿਆਲ ਸਰੀਰ ਨਾਲੋਂ ਵਧੇਰੇ ਮਨ ਨੂੰ ਪੀੜ੍ਹਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਜਾਗਰਤ ਅਵਸਥਾ ਵਿੱਚ ਮੇਲ ਦੀ ਅਪ੍ਰਾਪਤੀ ਸੁਪਨੇ ਵਿੱਚ ਮਿਲਾਪ ਦਾ ਭਰਮ ਜਿਹਾ ਸਿਰਜਦੀ ਹੈ।

ਸੁਪਨੇ ਵਿਚ ਤੁਸੀਂ ਮਿਲੇ ਅਸਾਨੂੰ
ਅਸੀਂ ਧਾ ਗਲਵੱਕੜੀ ਪਾਈ,
ਨਿਰਾ ਨੂਰ ਤੁਸੀਂ ਹੱਥ ਨ ਆਏ,
ਸਾਡੀ ਕੰਬਦੀ ਰਹੀ ਕਲਾਈ। (ਕੰਬਦੀ ਕਲਾਈ)

ਇਹ ਸੁਪਨਮਈ ਵਸਲ ਵੀ ਅਨੰਦਮਈ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਾਗਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਚੰਗਾ ਹੈ, ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਨੇੜਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨੀ ਹੀ ਭਗਤ ਦਾ ਲਕਸ਼ ਹੈ:

ਸਈਓ ਨੀ ਸ਼ਹੁ ਆਪ ਨਾ ਆਯਾ
ਪਰ ਉਸ ਨੇ ਨਿਜ ਘੱਲ ਹਜ਼ੂਰੀ
ਕਰ ਲਿਆ ਹਾਜ਼ਰ ਸਾਨੂੰ ਆਪ–
ਕੋਲੇ ਕੋਲ ਤੇ ਨਾਲੋ ਨਾਲ
ਦੂਰੀ ਸੱਟੀ ਦੂਰ ਨਿਕਾਲ

ਸਾਈਆਂ ਜੀ ਦਾ ਤੱਕ ਕਮਾਲ

ਦੂਰ ਸੱਟੀ ਦੂਰ ਨਿਕਲ--- (ਮੇਰੇ ਸਾਈਆਂ ਜੀਓ)

ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਦੀਆਂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਕਰਕੇ 'ਕੰਬਦੀ ਕਲਾਈ' ਪੁਸਤਕ ਦੀਆਂ ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਗੁਰੂ ਭਗਤੀ ਨੂੰ ਵਿਅਕਤ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਗੁਰੂ ਭਗਤੀ ਵਿੱਚ ਗੁਰੂ ਦੀ ਹਰ ਇੱਕ ਯਾਦ ਨਾਲ ਭਾਵੁਕ ਸੰਬੰਧ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿੱਥੇ ਜਿੱਥੇ ਗੁਰੂ ਦੇ ਚਰਨ ਪੈਂਦੇ ਹਨ ਭਗਤ ਵੀ ਉਥੇ ਧਰਤੀ ਨੂੰ ਪਵਿੱਤਰ ਜਾਣ ਕੇ ਉਸ ਪ੍ਰਤੀ ਸ਼ਰਧਾ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਉਥੋਂ ਦੀ ਧੂੜੀ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਮੱਥੇ ਨਾਲ ਲਗਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ ਦੀਆਂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਵਿਚ ਇਹੀ ਭਾਵ ਅਭਿ ਵਿਅਕਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਸੰਤ ਜਾਂ ਸਾਧ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਸਾਧਨਾਂ ਹਉਮੈ ਦੀ ਨਿਵਰਤੀ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਮੈਂ, ਮੇਰੀ ਤੋਂ ਉਚੇਰਾ ਉੱਠਣਾ ਬਹੁਤ ਹੀ ਕਠਿਨ ਹੈ। ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਬੋਲਾਂ ਵਿੱਚ ਬਾਬਾ ਫਰੀਦ ਗੰਜ ਸ਼ੱਕਰ ਦੀ ਮਿਠਾਸ ਹੈ। ਅਭਿਮਾਨ ਦੀ ਕੁੜਿੱਤਣ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਕਦੀ ਨਹੀਂ ਆਈ--

ਮੇਰੀ ਛਿਪੇ ਰਹਿਣ ਦੀ ਚਾਹ

ਤੇ ਛਿਪ ਟੁਰ ਜਾਣ ਦੀ, ਹਾ!

ਪੂਰੀ ਹੁੰਦੀ ਨਾ ਮੈਂ ਤਰਲੇ ਲੈ ਰਿਹਾ।

ਨਾਮ ਭਗਤੀ ਦਾ ਸਾਧਨ ਵੀ ਹੈ ਅਤੇ ਲਕਸ਼ ਵੀ। ਨਾਮ ਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਗੁਰਬਾਣੀ 'ਨਾਮ' ਨੂੰ ਮਹਾਂਰਸ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਨਾਮ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਨਸ਼ਾ ਹੈ ਜਿਸ ਦੀ ਖੁਮਾਰੀ ਸਦੀਵੀ ਹੁਲਾਸ ਭਰੀ ਹੈ ਪਰ ਇਹ ਰਾਜ ਕੋਈ ਵਿਰਲਾ ਹੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਅਨੁਸਾਰ ਇਹ ਰਸ ਉਸ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਅੰਦਰ ਦੀ ਸੱਧਰ ਪ੍ਰਬਲ ਹੋਵੇ:

ਨਾਮ ਸੋਹਣੇ ਦਾ ਭਰਿਆ ਪਿਆਲਾ

ਡੁਲ ਡੁਲ ਪੈ ਰਿਹਾ ਸਹਿਓਂ! ਜਿ

ਕੋਣ ਪੀਏ ਭਰ ਘੁਟ ਇਕ ਇਸਦਾ

ਸਹੀਓ ਤੱਕਦੀਆਂ ਰਹਿਓ।

ਸਬਰ ਪਿਆਲਾ ਜਿਸਦਾ ਆਪਣਾ

ਡੁੱਲ ਡੁੱਲ ਪੈ ਰਿਹਾ ਹੋਵੇ,

ਉਸਨੂੰ ਸਿਦੀ ਮਿਲੇ ਘੁੱਟ, ਪਰ

ਭੇਤ ਸੰਭਲ ਕੇ ਕਹੀਓ। (ਮੇਰੇ ਸਾਈਆਂ ਜੀਓ)

ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ ਦੀ ਕਥਨੀ ਕਰਨੀ ਅਤੇ ਲੇਖਣੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ 20ਵੀਂ ਸਦੀ ਦਾ ਇੱਕ ਮਹਾਨ ਸੰਤ ਕਵੀ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ ਪਹਿਲਾ ਕਵੀ ਹੈ ਜੋ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੇਰੇ ਪੜ੍ਹਿਆ ਗਿਆ। ਇਸ ਦਾ ਕਾਰਨ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਸਗੋ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਬੋਲੀ ਵੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ਹੈ। ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਕਰਕੇ ਇਕ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਨੂੰ ਪਹਿਲੀ ਵਾਰ ਸਾਹਿਤਕ ਮਾਨਤਾ ਮਿਲੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪੰਜਾਬੀ ਮੁੱਖ ਤੌਰ ਤੇ ਕੇਂਦਰੀ ਪੰਜਾਬੀ ਹੈ ਜੋ ਹਰ ਵਰਗ ਦੀ ਸਮਝ ਤੇ ਪਕੜ ਵਿੱਚ ਹੈ। ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ 'ਨਵੀਨ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਦਾ ਪਿਤਾਮਾ' ਆਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਨਵੀਨ ਰੂਪਾਂ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦਿੱਤਾ। ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸਮੇਂ ਦੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਸੁਧਾਰ ਅਤੇ ਪਰਿਵਰਤਨ ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਵੀ ਯੋਗਦਾਨ ਦਿੱਤਾ ਪਰ ਜੋ ਕੁਝ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਨੂੰ ਦਿੱਤਾ ਉਹ ਇੱਕ ਅਮਰ ਦੇਣ ਹੈ।

1 ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਅਪਨਾਉਣ ਅਤੇ ਕੇਵਲ ਇਸ ਨੂੰ ਵੀ ਲਿਖਣ ਦਾ ਮਾਧਿਅਮ ਬਣਾਉਣਾ।

2 ਨਿਰੰਤਰ ਘਾਲਣਾ ਨਾਲ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਸਾਰੇ ਰੂਪਾਂ ਤੇ ਲਿਖ ਕੇ ਇੱਕ ਸੰਸਥਾ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦੇਣਾ।

3 ਪੰਜਾਬੀ ਲਈ ਹੋਰ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾਂ ਨੂੰ ਪਰੇਰਨਾ।

ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਲੱਗਭੱਗ ਸਾਢੇ ਚੁਰਾਸੀ ਸਾਲਾਂ ਦੀ ਆਯੂ ਵਿੱਚ ਪੰਜਾਬ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਇਕ ਬੇਮਿਸਾਲ ਪਰਿਵਰਤਨ ਲਿਆ ਕੇ ਅਦੁੱਤੀ ਕਾਰਨਾਮਾ ਕਰ ਵਿਖਾਇਆ। ਅਜਿਹੀ ਘਾਲਣਾ ਨੂੰ ਸ਼ੱਤ ਸ਼ੱਤ ਪ੍ਰਣਾਮ।

ਡਾ. ਹਰਮੀਤ ਕੌਰ

ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

ਕਾਲਜ ਦੇ ਦਿਨ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ

ਕੁਝ ਨਾ ਚੇਤੇ ਰਹਿਣਾ, ਬਸ ਇਹ ਪਲ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ,
ਜੋ ਤੇਰੇ ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ ਬਿਤਾਏ, ਉਹ ਪਲ ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ।
ਕਦੇ ਕਲਾਸ ਵਿੱਚ ਹੀ ਬਹਿਣਾ, ਤੇ ਕਦੇ ਗਰਾਊਡ 'ਚ ਗੇੜੀ ਲਾਉਣਾ,
ਵੇਲੇ ਕੁਵੇਲੇ ਦਿਲ ਦੀ ਕੁੰਡੀ ਖੜਕਾਉਣਗੇ ,
ਜੋ ਤੇਰੇ ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ ਬਿਤਾਏ, ਉਹ ਪਲ ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ।
ਕਦੇ ਲੈਕਚਰ ਨਾ ਲਾਉਣਾ, ਤੇ ਕਦੇ ਲੈ ਉਬਾਸੀਆਂ ਲੈਕਚਰ ਲੰਘਾਉਣਾ,
ਕਦੇ ਦੋਸਤਾਂ ਮਿਤਰਾਂ ਨਾਲ ਚਾਹ ਦੀਆਂ ਸ਼ਰਤਾਂ ਲਾਉਣਾ,

ਔਖੇ ਵੇਲੇ ਨਿੰਮੇ ਦੀਵੇ ਦੀ ਧਰਵਾਜ਼ ਬਣ ਆਉਣਗੇ,

ਤੇਰੇ ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ ਬਿਤਾਏ ਉਹ ਪਲ ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ।

ਕਦੇ ਟੈਮ ਸਿਰ ਕਾਲਜ 'ਚ ਆਉਣਾ ਤੇ ਕਦੇ ਘੜੀ ਨਾਲ ਸ਼ਰਤਾਂ ਲਾਉਣਾ ,

ਫੇਰ ਖੜੇ ਪੈਰੀਂ ਬਹਾਨੇ ਬਣਾਉਣਾ , ਫੁੱਲ ਨਵੇਂ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਤੇਰੀਆਂ ਹਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਮਹਿਕਾਉਣਗੇ,

ਉਹ ਪਲ ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ, ਉਹ ਪਲ ਬੜੇ ਚੇਤੇ ਆਉਣਗੇ ।।

ਬਿਪਾਸ਼ਾ,

ਗੁੰਜਨ, ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਪਹਿਲਾ ਸਾਲ

ਜੀਭ ਰੌਲਾ ਪਾਉਂਦੀ ਏ •••

ਜੀਭ ਰੌਲਾ ਪਾਉਂਦੀ ਏ
ਕਿਉਂ ਪਾਉਂਦੀ ਏ ?
ਕੀ ਦੱਸਣਾ ਜਾਂ ਸੁਣਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਏ ??
ਦੰਦ ਗਿਣਤੀ 'ਚ ਬੇਸ਼ੱਕ ਬੱਤੀ ਨੇ
ਫੇਰ ਵੀ ਜੀਭ ਦਾ ਰੌਲ਼ਾ ਸੁਣਨ, ਇਨਕਾਰੀ ਨੇ !
ਕਦੇ ਕਦੇ ਚੀਕਦੇ ਵੀ ਨੇ
ਤੇ ਕਦੇ ਸੁਆਦਾਂ ਨੂੰ ਭਰਮਾਉਂਦੇ ਨੇ
ਇਕ ਅਨੇਖਾ ਰੰਗ
ਇਕ ਅਦਭੁੱਤ ਸੰਸਾਰ
ਜੀਭ ਨੂੰ ਵਿਖਾਉਂਦੇ ਨੇ
ਓਹਨਾਂ ਦੇ ਜਿੰਮੇ ਕਿੰਨੇ ਕੰਮ
ਕਿੰਨੇ ਹੀ ਨੇ ਕਾਰ - ਵਿਹਾਰ
ਅੱਗੇ ਪਿੱਛੋਂ ਉਪਰ ਥੱਲੇ
ਆਖਿਰ ਅਹਿਮੀਅਤ ਦਰਸਾਉਂਦੇ ਨੇ
ਤਾਂ ਕੀ ਬੋਲਦੀ ਏ - ਜੀਭ ਕੱਲ੍ਹੀ
ਇਕੱਲੀ
ਕੀ ਕਰਾਂ
ਕਿਵੇਂ ਕਰਾਂ
ਬੇਲੋੜਾ ਆਖ ਛੱਡਦੇ
ਉਸ ਨੂੰ ਕਈ ਵਾਰੀ
ਤਾਂ ਕਦੇ ਉਸ ਨੂੰ ਭਰਮਾਉਂਦੇ ਨੇ
ਲੇਕਿਨ -
ਅਣਥੱਕ ਜੀਭ
ਮਿਹਨਤ ਕਰਦੀ
ਨਾ ਡਰਦੀ
ਆਪਣੇ ਡੂੰਘੇ ਪਾਣੀਆਂ ਸਮੇਤ
ਵਹਿੰਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਏ
ਦੱਸਦੀ ਆਖਦੀ
ਉਹ ਦੰਦਾਂ ਦੀ ਹਾਣੀ ਬਣ ਬਣ
ਫੇਰ ਵੀ
ਕਦੇ ਤਕਰੀਰਾਂ ਤਾਂ ਕਦੇ ਤਦਬੀਰਾਂ
ਕਦੇ ਖਾਮੋਸ਼ੀ ਵਰਤਾਉਂਦੀ ਏ
ਕਦੇ ਖਾਮੋਸ਼ੀ ਵੀ ਗੁਣਗਣਾਉਂਦੀ ਏ
ਅੰਦਰੋਂ ਅੰਦਰ ਉਸ ਨੂੰ ਜਾਣਦੇ ਨੇ
ਦੰਦ ਤੇ ਕੰਨ ਸਾਰੇ
ਸਮਝਦੇ ਨੇ -
ਮਗਰ ਦੱਸਦੇ ਨਹੀਂ •••
ਹਰ ਸਵਾਲ ਦਾ ਜਵਾਬ
ਆਪ ਆਖ਼ਰ ਜੀਭ ਹੀ ਏ
ਸਾਇਦ ਤਾਹੀਓਂ

ਜੀਭ ਰੌਲਾ ਪਾਉਂਦੀ ਏ
ਕਿਸੇ ਮਜਬੂਰੀ ਦਾ ਨਹੀਂ
ਆਪਣੀ ਮਜ਼ਦੂਰੀ ਦਾ ਹੱਕ ਜਮਾਉਂਦੀ ਏ

ਅੱਜ ਉਸ ਨੂੰ ਵੀ ਦਿਲਾਸਾ
ਹੋਰ ਜੀਭਾਂ ਦਿਵਾਉਂਦੀਆਂ ਨੇ
ਉਦੋਂ ਅਜੀਬ ਜਿਹਾ ਰੌਲਾ
ਇੱਕਠ ਬਣਾਂਦਾ
ਮਿੱਠਾ ਗੀਤ ਬਣ ਬਣ
ਮਹਿਕਦੀ ਹਵਾ ਬਣ ਬਣ
ਸਾਰੀ ਕਾਇਨਾਤ 'ਚ
ਪਸਰ ਜਾਂਦਾ ਏ
ਜੀਭ ਦਾ ਰੌਲ਼ਾ ਵਾਵਰੋਲਾ

ਹਮੇਸ਼ਾ ਨਾ ਹੁੰਦਾ ਕਦੇ ਕਦੇ
ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਰਖਾ ਵਾਂਗ
ਕਰ ਜਾਂਦਾ ਆਤਮਾ ਤ੍ਰਿਪਤ
ਨਵੀਂ ਹਸਤੀ ਦੀ ਭਿੱਜੀ
ਦਾਸਤਾਨ ਹੁੰਦੀ ਏ -ਜੀਭ
ਜੀਭ ਰੌਲਾ ਪਾਉਂਦੀ ਏ
ਮਤਭੇਦ ਨਹੀਂ
ਦਿਲਾਂ ਦੇ ਭੇਦ
ਸੱਜਰੇ ਸੁਲੱਖਣ ਉਹਦੇ ਬੋਲ
ਜੀਭ ਹੀ ਦੱਸਦੀ ਏ....

ਡਾ. ਸਾਰਿਕਾ ਸ਼ਰਮਾ
ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਨਕ ਦੀ ਰਬਾਬ ਵਰਗੀ

ਪੰਜਾਬੀ ਚਮਕਦੇ ਆਫ਼ਤਾਬ ਵਰਗੀ,

ਭੁੱਲ ਕੇ ਵੀ ਨਾ ਇਸ ਨੂੰ ਭੁਲਾਉਣਾ,

ਕਿਉਂਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਹੈ ਸਾਡੀ ਮਾਂ ਵਰਗੀ

Glimpses of Events

HINDI

SANSKRIT

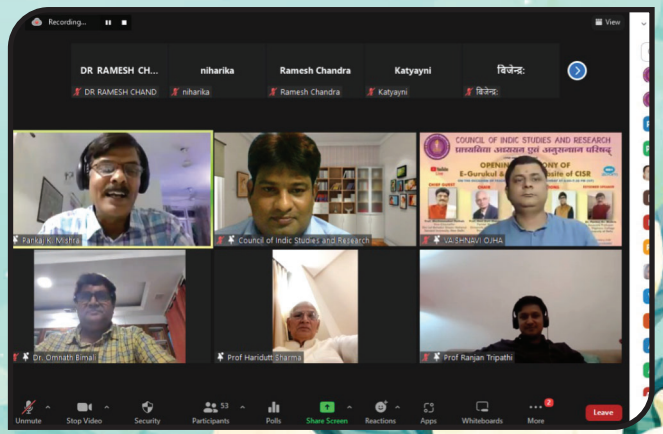

MATHEMATICS

PUNJABI

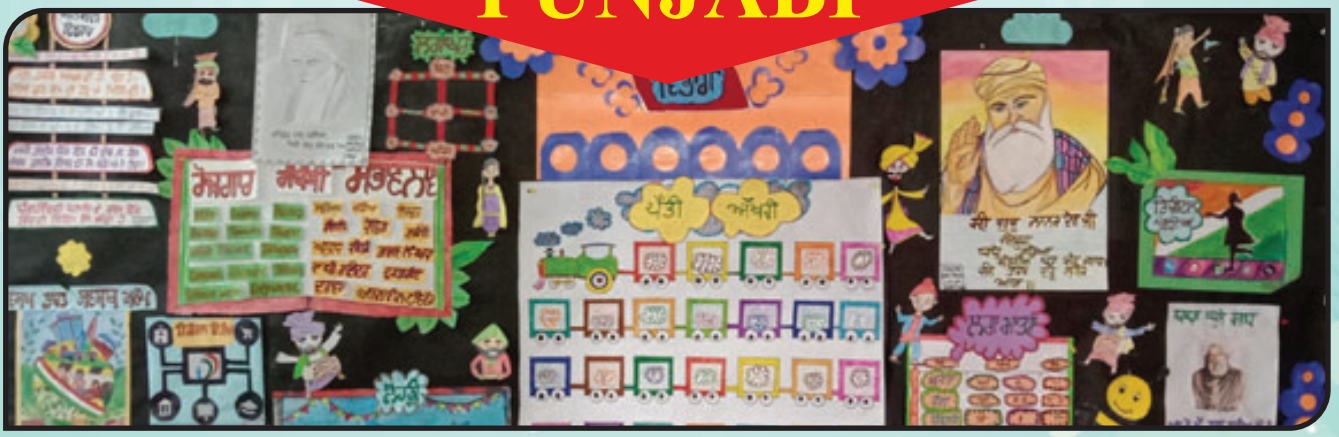

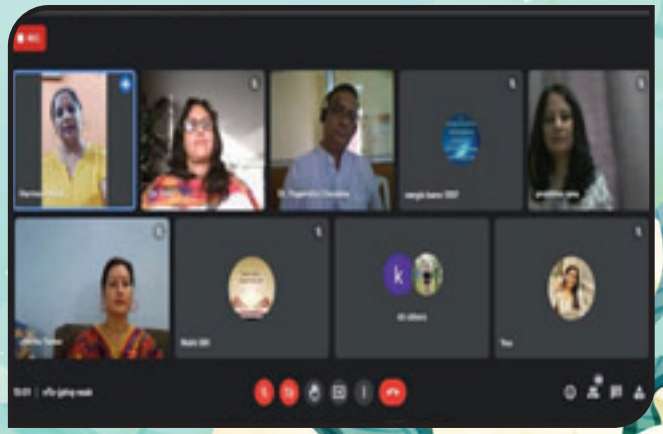

SOCIOLOGY

COMPUTER SCIENCE

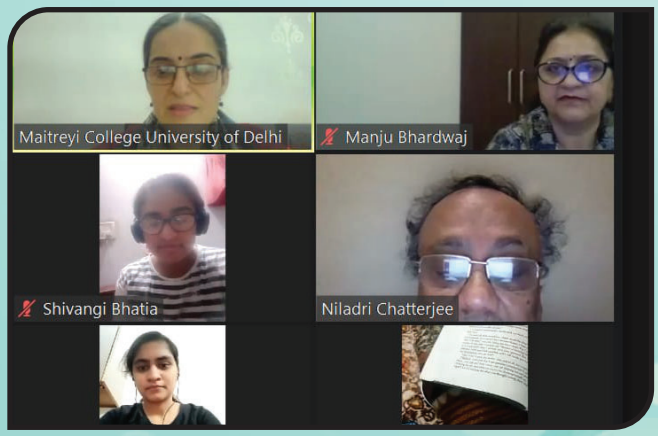

COMMERCE

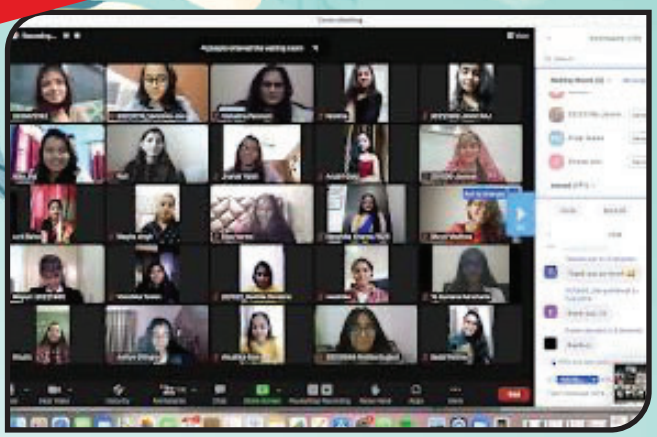

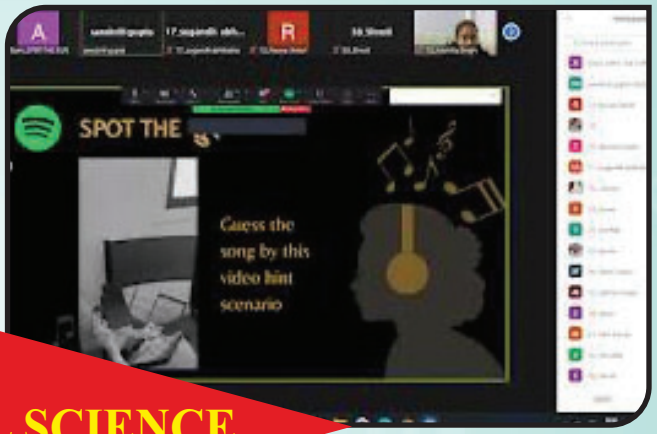

POLITICAL SCIENCE

100 YEARS 1922-2022

Indian Council of Social Science Research

Azadi Ka Amrit Mahotsav

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

MAITREYI COLLEGE, UNIVERSITY OF DELHI

(Accredited with Grade 'A' by NAAC)

In Partnership with Delhi School of Transnational Affairs, Institution of Eminence, University of Delhi

invites all to the INAUGURAL SESSION of rhe International Conference on the topic

HISTORY

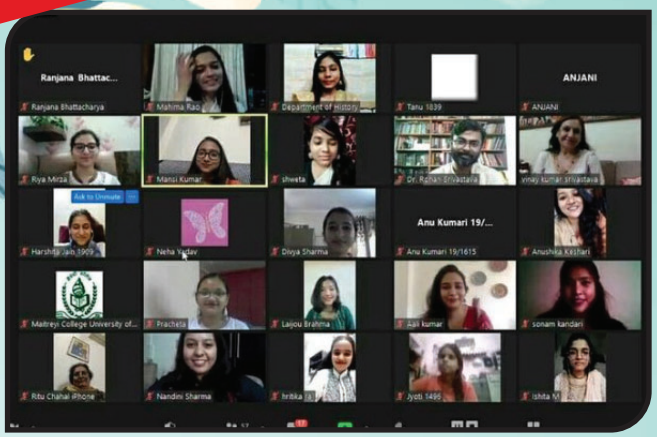

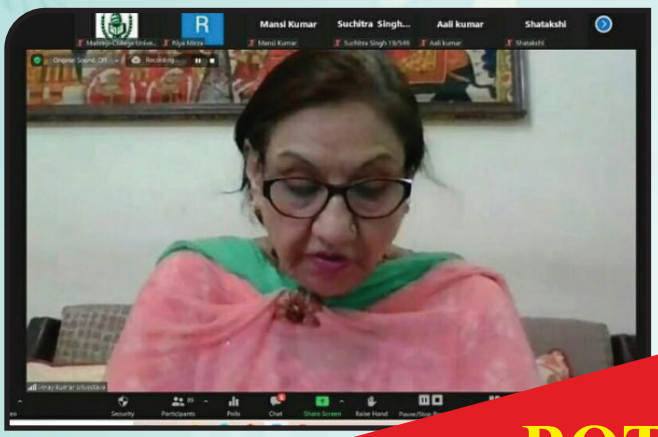

BOTANY

ONE DAY NATIONAL
"REALMS OF PLANT DIVERSITY: EXPLO
NOVEL PERSPECTIVES"

DATE OF THE EVENT: 24th August 2021

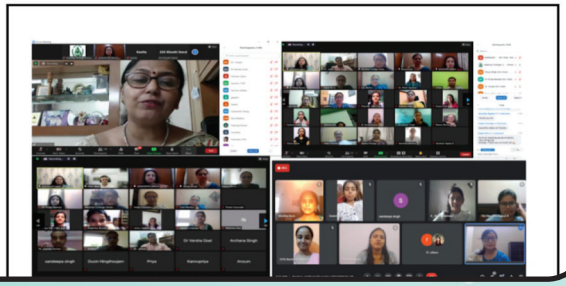

IPR Awareness Programme
Date-4th February, 2022

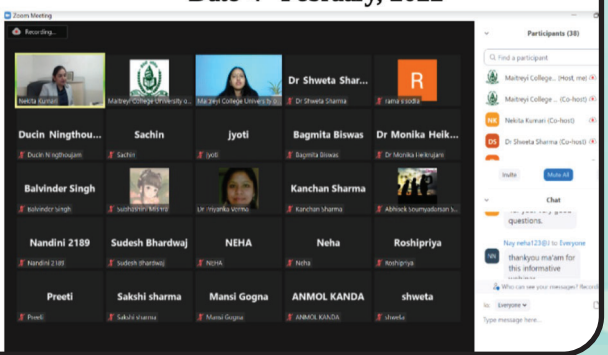

HOW TO READ SCIENTIFIC LITERATURE? AND INTRODUCTION TO MANAV-THE HUMAN ATLAS INITIATIVE"

DATE OF THE EVENT: 11th September 2021

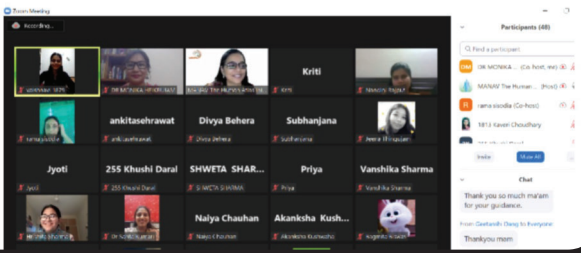

CHEMISTRY

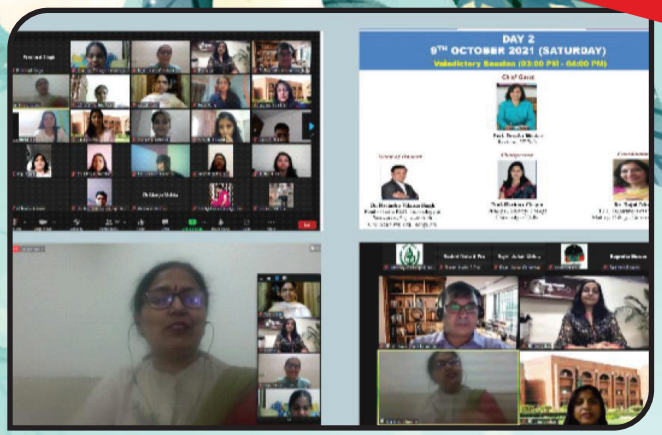

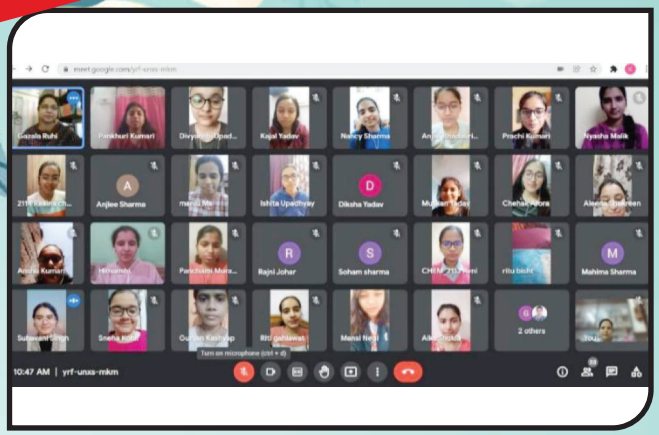

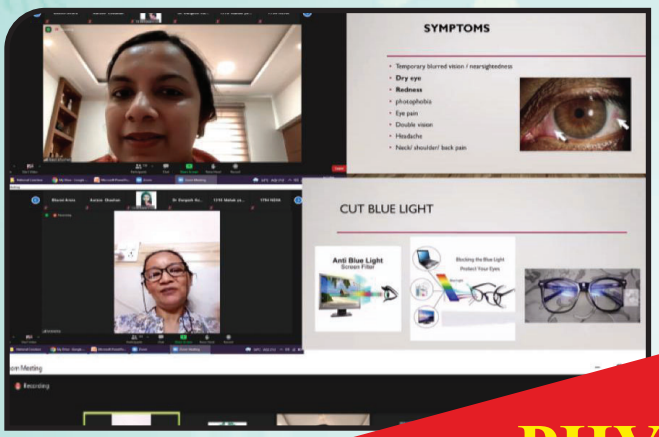

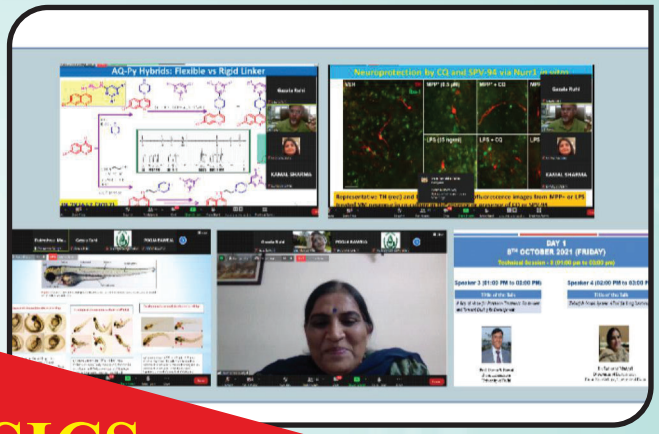

PHYSICS

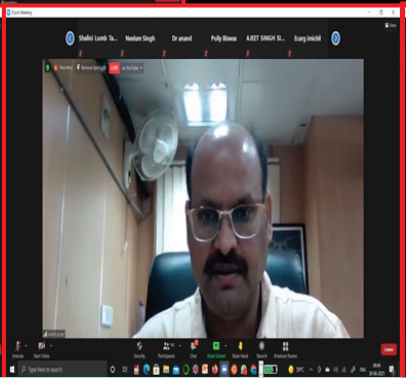

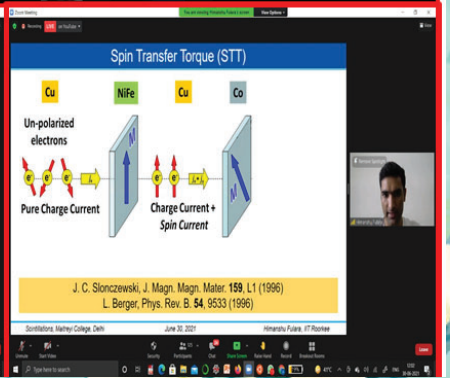

ZOOLOGY

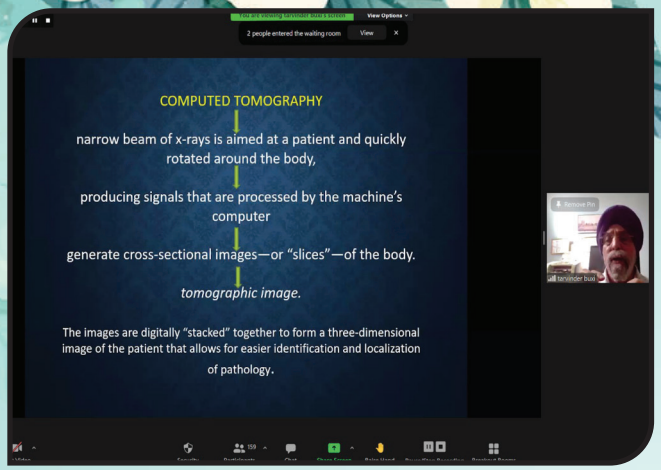
COMPUTED TOMOGRAPHY
narrow beam of x-rays is aimed at a patient and quickly rotated around the body,
producing signals that are processed by the machine's computer
generate cross-sectional images—or "slices"—of the body.
tomographic image.
The images are digitally "stacked" together to form a three-dimensional image of the patient that allows for easier identification and localization of pathology.

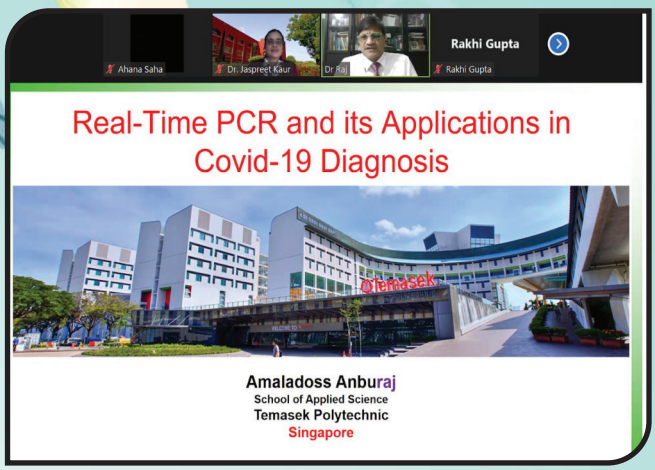
Rakhi Gupta
Real-Time PCR and its Applications in Covid-19 Diagnosis
@Temasek
Amaladoss Anburaj
School of Applied Science
Temasek Polytechnic
Singapore

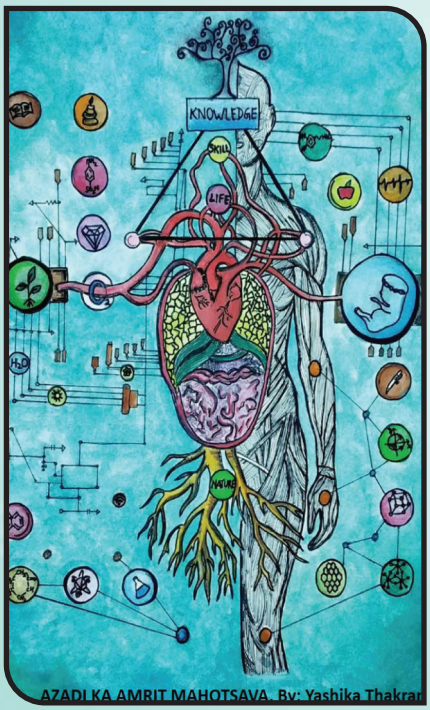
KNOWLEDGE
AZADI KA AMRIT MAHOTSAVA. By: Yashika Thakrar

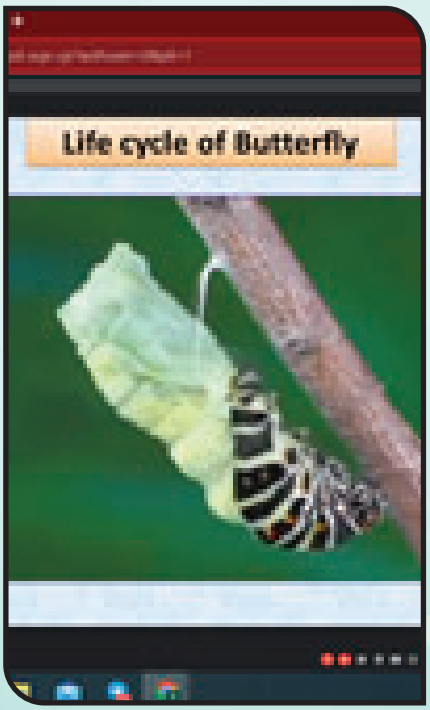
Life cycle of Butterfly

Maitreyi College
ACCREDITED WITH GRADE "A" BY NAAC
UNIVERSITY OF DELHI
Zoology Department
(Under the aegis of Short -Term Courses Committee)
Certificate Course for students
on
ICT in Digital Learning and Data Management
January 17 - February 26, 2022
Prerequisites:- Google Classroom Google Meet WhatsApp
MODULES
Google Apps in Data collection
Real-time sharing and editing
Online Screen Recording Tool
Data Segregation & Presentation
Graphical Representation
Statistical Analysis & Application
Search Engine & Database Tools
Referencing Tools
Plagiarism
Flowcharts & Mind Map

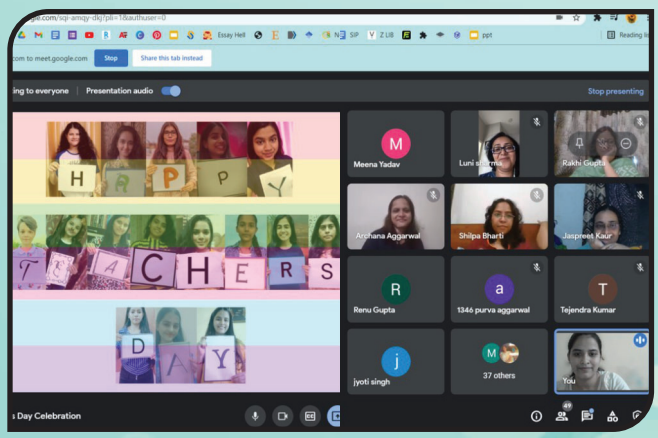
HAPPY
TEACHERS
DAY
Meena Yadav
Rakhi Gupta
Archana Aggarwal
Shilpa Bharti
Jaspreet Kaur
Renu Gupta
1346 purva aggarwal
Tejendra Kumar
jyoti singh
37 others

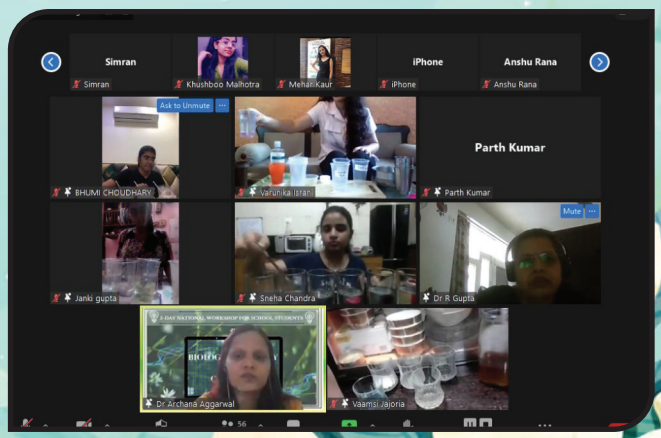
Simran
Khushboo Malhotra
Mehak Kaur
iPhone
Anshu Rana
Parth Kumar
BHUMI CHOUDHARY
Janki gupta
Sneha Chandra
Dr R Gupta
Dr Archana Aggarwal
Vaamsi Jajoria

CFR

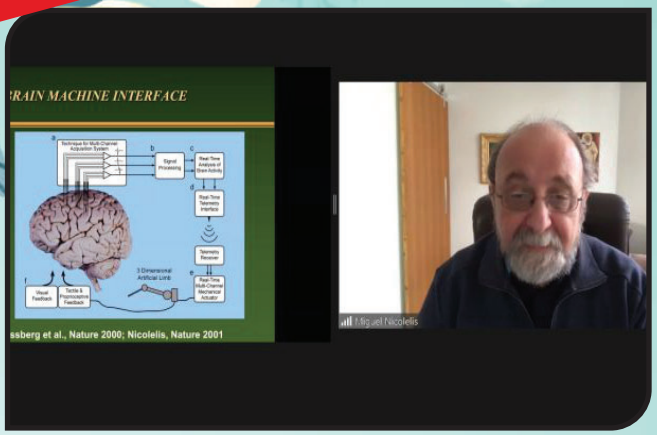

STUDENT UNION

ENABLING UNIT

NCC

DELHI DIRECTORATE

3 DELHI GIRLS BN NCC
NO TOBACCO DAY

NSS

GPS Map Camera
Gautam Buddh Nagar, Uttar Pradesh, India
MDR 70W, Uttar Pradesh 203155, India
Lat 28.144706°
Long 77.626994°
27/07/22 01:08 PM
Google

VIDYA SAGAR ACADEMY
GPS Map Camera
Gautam Buddh Nagar, Uttar Pradesh, India
MDR 70W, Uttar Pradesh 203155, India
Lat 28.144394°
Long 77.627549°
27/07/22 02:13 PM
Google

GPS Map Camera
Gautam Buddh Nagar, Uttar Pradesh, India
MDR 70W, Uttar Pradesh 203155, India
Lat 28.14459°

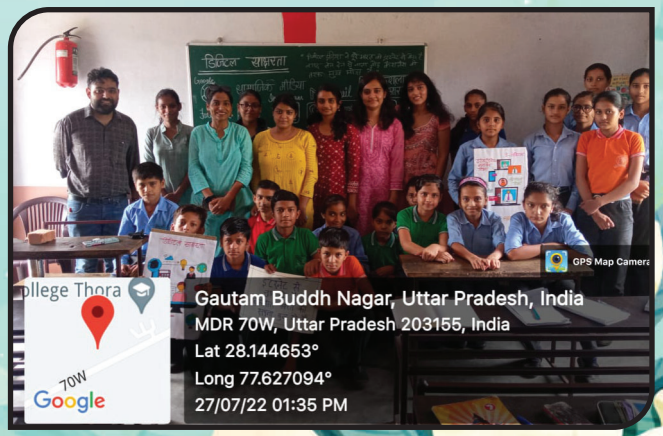
GPS Map Camera
Gautam Buddh Nagar, Uttar Pradesh, India
MDR 70W, Uttar Pradesh 203155, India
Lat 28.144653°
Long 77.627094°
27/07/22 01:35 PM
Google

STUDENT EDITORIAL BOARD MEMBERS

Somya *(Department of Zoology)*

Vanshika *(Department of Commerce)*

Savina *(Department of Botany)*

Aaditya Prabhakaran *(Department of Hindi)*

Niharika Khurana *(Department of Sanskrit)*

Shavi Chaudhry *(Department of Punjabi)*

REVIEWERS

Prof. Shobha Kaur

Kirori Mal College, University of Delhi

Dr. Syed Wasim Bihaqi

Eurofin Lancaster Laboratory, USA

Dr. Awanindra Kumar Pandey

RBS Govt. Girls Degree College, Mau, UP

Dr. Manjeet Kaur

SGGSCC, University of Delhi

MAITREYI COLLEGE

All rights reserved

ACADEMIC HEIGHTS PUBLICATION
(National Publishing House)
C-9 Bhagawati Garden Extn.
Near Dwarka Mor Metro Station
Uttam Nagar, Delhi-110059

LAXDEEP DIGITAL INDIA
(National Publisher & Printer)
Ground Floor, Plot No. 308, Main Road Saboli
Kanthi Mata Wali Gali, Saboli Village, North East Delhi-110093
Email : ajayk0579@gmail.com
Ph. : 7838975278

9 789385 265167